18.3.81

मुश्किल को सहज करने की युक्ति ''सदा बाप को देखो''

आज विशेष लण्डन निवासियों से मिलने आये हैं। मिलने का अर्थ है – बाप समान बनना। जब से बाप से मिले तो बापदादा ने क्या इशारा दिया? बच्चे, आप सब श्रेष्ठ आत्मायें बाप समान सर्व गुणों में, सर्व प्राप्तियों में मास्टर हो। बाप से भी श्रेष्ठ बाप के सिर के ताज हो। जो पहले-पहले इशारा मिला उसी इशारे प्रमाण बाप समान मास्टर सर्वशक्तिवान, मास्टर सर्वगुण सम्पन्न बने हो? जब अभी बाप समान बनो तब ही भविष्य में विश्व राज्य-अधिकारी देवता बन सकते हो। बाप समान कहाँ तक बने हैं यह चेकिंग करते रहते हो? एक-एक गुण, एक-एक शक्ति को सामने रखते हुए अपने में चेक करो कि कितने परसेन्ट में गुण व शक्ति स्वरूप बने हैं। यह फालो करना तो सहज है ना। बापदादा सामने एग्जाम्पल हैं। निराकारी रूप में और साकार रूप में दोनों ही रूप में बाप को देख फालो करते चलो। वैसे भी कहावत है जैसा बाप वैसे बच्चे और सन शोज फ़ादर भी गाया हुआ है। बाप और बच्चे का सम्बन्ध ही है फालो फादर करने का। मुश्किल है नहीं, लेकिन बना लेते हो। क्योंकि अगर मुश्किल हो तो सदा ही मुश्किल लगना चाहिए। कोई को सहज लगता कोई को मुश्किल लगता। यह क्यों? अबौर कभी उसी को सहज लगता – कभी मुश्किल लगता। यह क्यों? इससे क्या सिद्ध होता है? चलने वाले की कोई कमजोरी है जो मुश्किल लगता है।

बाप की महिमा है जो अभी तक भक्त भी गाते हैं, साथ-साथ आप महान आत्माओं, पूज्य आत्माओं की भी वही महिमा है। याद है वह कौन-सी महिमा है? कोई भी मुश्किल कार्य आत्माओं के ऊपर आते हैं तो किसके पास जाते हैं? या बाप के पास या आप देव आत्माओं के पास। जो औरों की भी मुश्किल को सहज करने वाले हैं वह स्वयं मुश्किल अनुभव कैसे करेंगे? मुश्किल अनुभव करने के समय विशेष कौन-सी बात बुद्धि में आती है जो मुश्किल बना देती है? बहुत अनुभवी हो ना। ''बाप को देखने के बजाए बातों को देखने लग जाते हो। बातों में जाने से फिर कई क्वेश्चन उत्पन्न हो जाते हैं। अगर बाप को देखो, जैसे बाप बिन्दु है वैसे ही हर बात को बिन्दु लगा दो। बातें हैं वृक्ष, और बाप है बीज। आप विस्तार वाले वृक्ष को हाथ उठाने चाहते हो इस लिए न बाप हाथ में आता, न वृक्ष। बाप को भी किनारे कर देते हो और वृक्ष के विस्तार को भी अपनी बुद्धि में समा नहीं सकते हो। तो जो चाहना रखते हो वह न पूरी होने के कारण दिलशिकस्त हो जाते हो। दिलशिकस्त की मुख्य निशानी होगी – बार-बार किसी न किसी परिस्थिति की, चाहे व्यक्ति की शिकायतें ही करते रहेंगे। और जितनी शिकायतें करते उतना ही खुद आपेही फँसते जाते। क्योंकि यह विस्तार एक जाल बन जाता है। जितना ही फिर उससे निकलने की कोशिश करते हैं उतना फँसते जाते। यह होगी बातें या होगा बाप। बातें सुनना और बातें सुनाना यह तो आधा कल्प किया। भक्ति मार्ग का भागवत या रामायण क्या है? कितनी लम्बी बातें हैं। जब बातें थी तो बाप नहीं था। अब भी जब बातों में जाते हो तो बाप को खो लेते हो। फिर कौन-सा खेल करते हो? (ऑख मिचौनी का)' तीसरे नेत्र को पटटी बाँधकर और ढूंढते हो। बाप बुलाता रहता और आप ढूंढते रहते। आखिर क्या होता? बाप स्वयं ही आकर स्वयं का साथ दिलाते। ऐसा खेल क्यों करते हो? क्योंकि बातों के विस्तार में रंग बिरंगी बातें होती हैं, वह अपनी तरफ आकर्षित कर लेती हैं। उससे किनारा हो जाए तो सदा सहज योगी हो जाएं। लण्डन निवासी तो मुश्किल का अनुभव नहीं करते हैं ना?

अपने आपको बिजी रखने का तरीका सीखो। न समय होगा न विस्तार में जायेंगे। जैसे जब कोई विशाल प्रोग्राम रखते हो और बहुत बिजी होते हो उस समय कुछ भी होता रहे आप उससे किनारे होते हो। सेवा की ही धुन में लगे हुए होते हो। खाने वा सोने का भी ख्याल नहीं रहता। ऐसे विश्व-कल्याणकारी आत्मायें सदा विशाल कार्य का प्लान इमर्ज रखो। इतना विशाल कार्य अपनी बुद्धि को दो जिससे फुर्सत ही नहीं हो। अपनी बुद्धि को बिजी रखने की डेली डायरी बनाओ। इससे सदा सहजयोग का स्वत: अनुभव करेंगे।

वर्णन करते हो 'सहज राजयोग', यह तो नहीं कहते हो – कभी सहज योग कभी मुश्किल योग। तो जैसा नाम है उसी स्वरूप में सब बच्चों को बापदादा देखने चाहते हैं। मास्टर सर्वशक्तिवान बनने के बाद भी मुश्किल अनुभव करेंगे तो सहज कब होगा? अब नहीं तो कब नहीं। इसके लिए आपस में प्रोग्राम बनाओ।

लण्डन पार्टी – एक-एक रतन अति प्रिय और अमूल्य है। क्योंकि हरेक रतन की अपनी-अपनी विशेषता है। सर्व की विशेषताओं द्वारा ही विश्व का कार्य सम्पन्न होना है। जैसे कोई स्थूल चीज़ भी बनाते हैं, उसमें अगर सब चीजें न डालो, साधारण मीठा या नमक भी न डालो तो चाहे कितनी भी बढ़िया चीज़ बनाओ लेकिन वह खाने योग्य नहीं बन सकती। तो ऐसे ही विश्व के इतने श्रेष्ठ कार्य के लिए हरेक रतन की आवश्यकता है। सबकी अंगुली चाहिए। चित्र में भी सबकी अंगुली दिखाते हैं ना। सिर्फ़ महारथियों की नहीं, सबकी अंगुली से ही विश्व परिवर्त्तन का कार्य सम्पन्न होना है। सब अपनी-अपनी रीति से महारथी हैं। बापदादा भी अकेले कुछ नहीं कर सकते। बापदादा बच्चों को आगे रखते हैं, निमित्त आत्मायें भी सबको आगे रखती हैं। तो सभी बहुत-बहुत आवश्यक और

श्रेष्ठ रतन हो। बापदादा के स्वीकार किये हुए रतन हो। यादगार में तो दिखाते हैं – भगवान की पत्थर पर भी नज़र पड़ जाए तो पत्थर भी पारस बन जाता है, आप तो उनके स्वीकार किये हुए श्रेष्ठ रतन हो। अपने कार्य की श्रेष्ठता की मूल्य को जानो। शक्तियों का अपना गायन है और पाण्डवों का अपना। तो आप सब महान आत्मायें हो। महान आत्मा की निशानी क्या है? जो जितना महान होगा उतना निर्माण होगा। महान आत्मायें सदा अपने को ओबीडियन्ट सर्वेन्ट ही अनुभवी करती हैं। ऐसा ही ग्रुप है ना। शक्ति भवन की शक्तियों को तो अपना शक्ति स्वरूप स्वत: याद रहता होगा? स्थान से स्थिति भी याद आती है। शक्ति की विशेषता है माया-जीत। शक्ति के आगे किसी भी प्रकार की माया आ नहीं सकती, क्योंकि शक्ति माया के ऊपर सवारी करती है। शक्तियों के हाथ में सदा त्रिशूल दिखाते हैं। यह किसकी निशानी है? त्रिशूल स्टेज की निशानी है। संगमयुग के जो टाइटिल हैं – मास्टर त्रिमूर्ति, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ, यह सब स्थिति की निशानी इस त्रिशूल में आ जाती हैं। तो यह स्टेज स्मृति में रहती हैं? 'निर-न्तर' को अन्डरलाइन करो। बहुत अच्छा भाग्य बनाया है जो विश्व के वायुमण्डल से किनारे किया। बापदादा भी बच्चों के भाग्य को देख खुश होते हैं।

2. सदा अपने को पूज्य आत्मायें समझकर चलते हो? पूज्य आत्मायें अर्थात् महान आत्मायें। महान बनने की विशेषता है – सदा अपने को मेहमान समझ चलना। जो मेहमान समझकर चलता है वही महान पूज्य बन जाता है। क्यों? क्योंकि त्याग का भाग्य बन जाता है। मेहमान समझने से अपने देह रूपी मकान से भी निर्मोही हो जाते। मेहमान का अपना कुछ नहीं होता, कार्य में सब वस्तु लगायेंगे लेकिन अपनेपन का भाव नहीं होगा, इसलिए न्यारा भी और सर्व वस्तुओं को कार्य में लाने वाला प्यारा भी। ऐसे मेहमान समझने वाले प्रवृत्ति में रहते, सेवा के साधनों को अपनाते, सदा न्यारे और बाप के प्यारे रहते हैं। ऐसे महान हो ना? मेहमान समझते हो ना? आज यहाँ हैं कल चलेंगे अपने घर। फिर आयेंगे अपने राज्य में। यही धुन लगी है ना? इसलिए सदा देह से उपराम। जब देह से उपराम हो जाते हैं तो देह के सम्बन्ध और वैभवों से उपराम हुए ही पड़े हैं। यह उपराम अवस्था कितनी प्यारी है! अभी-अभी कार्य में आये, अभी-अभी उपराम। ऐसा अनुभव हैं ना? आपके जड़ चित्र पूज्य रूप में मन्दिरों में रखते हैं, लेकिन भक्ति में भी संगम की उपराम स्टेज की परम्परा चली आती है। मन्दिर लक्ष्मी नारायण का, लेकिन लक्ष्मी-नारायण अपना समझेंगे? उपराम हैं ना? जड़ चित्र जो पूज्य बनते हैं उन्हों में भी अपनापन नहीं तो चैतन्य पूज्य आत्मायें उनमें भी सदा मेहमान वृत्ति। जितनी मेहमान की वृत्ति रहेगी उतनी प्रवृत्ति श्रेष्ठ और स्टेज ऊंची रहेगी। लण्डन निवासी नाम मात्र कहा जाता है, लेकिन हैं सब 'मेहमान'। आज यहाँ हैं कल वहाँ होंगे। आज और कल – दो शब्दों में सारा चक्कर स्मृति में आ जाता। ऐसी महान आत्मायें पूज्य हो ना? लण्डन निवा-सियों का निश्चय और उमंग बहुत अच्छा है। कमज़ोर आत्मायें नहीं हैं। विघ्न आया और पार किया। बकरियाँ नहीं हैं, सब शेरनियाँ हैं। बकरीपन अर्थात् मैं-मैं पन खत्म। शक्ति सेना का झण्डा अच्छा बुलन्द है। एक-एक शक्ति सर्वशक्तिवान बाप को प्रत्यक्ष करने वाली है। जब शक्ति सेना मैदान में आ जायेगी तब जय-जयकार होगी। पहले जय-जयकार का नारा कहाँ बजेगा? लण्डन में या अमेरिका में? बापदादा सदा स्नेही बच्चों को अमृतबेले मुबारक देते हैं। '' वाह मेरे बच्चे, वाह''! यह गीत गाते हैं। गीत सुनने आता है?

टीचर्स के साथ – यह लण्डन की सेवा श्रृंगार है। जैसे लण्डन के म्यूजियम में रानी का श्रृंगार रखा है ना। वैसे बापदादा के भी म्यूजियम में बापदादा की सेवा के श्रृंगार हो। सदा महान और सदा निर्मान। यही विशेषता स्वयं को भी महान बनाती है और सेवा को भी महान बनाती हैं। संस्कार मिलाने में तो होशियार हो ना? जैसे स्थूल में अगर किसको हाथ पाँव चलाने नहीं आते तो दूसरे साथी क्या करते? हाथ में हाथ में मिला कर साथ दे करके उनको सिखा देते हैं। तो आप भी क्या करती हो? आगे बढ़ सहयोगी बन सह-योग का हाथ दे, संस्कार मिलाने की डान्स सिखाती हो ना? इसमें तो नम्बरवन हो ना? इसी विशेषता के आधार पर, जो सबसे ज्यादा संस्कार मिलाने की डान्स करता, बाप का सहयोगी बनता वही फर्स्ट जन्म में श्रीकृष्ण के साथ हाथ मिलाकर डान्स करेगा। डान्स करनी है ना? संस्कारों की रास मिलाने का सबसे सहज तरीका है – स्वयं नम्रचित बन जाओ और दूसरे को श्रेष्ठ सीट दे दो। उनको सीट पर बिठायेंगे तो वह आपको स्वत: ही उतरकर बिठा देगा। अगर आप बैठने की कोशिश करेंगे तो वह बैठने नहीं देगा। लेकिन आप उसे बिठायेंगे तो वह आपेही उतरकर आपको बिठायेगा। तो बिठाना ही बैठना हो जायेगा। ''पहले आप'' का पाठ पक्का हो। फिर संस्कार सहज ही मिल जायेंगे। सीट भी मिल जायेगी, रास भी हो जायेगी। और भविष्य में भी रास करने का चान्स मिल जायेगा तो कितनी सहज बात हैं।

लण्डन का सच्चा सेवाधारी ग्रुप है, 'सेवाधारी' शब्द ही बहुत मीठा है। टीचर शब्द अच्छा लगता है या सेवाधारी? बाप भी अपने को ओबीडियेन्ट सर्वेन्ट कहते हैं, सर्वेन्ट कहने से ताजधारी स्वत: बन जायेंगे। तो चतुर बनने का यह तरीका है। मेहनत भी नहीं, प्राप्ति भी ज्यादा। तो चतुर सुजान बाप के चतुर सुजान बच्चे बनो।

फ्रान्स – याद की यात्रा में सदा चलते हुए हर कदम में पदमों की कमाई जमा कर रहे हो? हर कदम में पदमों की कमाई जमा करने वाले कितने मालामाल होंगे! ऐसी सम्पन्न आत्मा अपने को अनुभव करते हो? अखुट खजाना मिल गया है? खजाने की चाबी

मिल गई है ना? चाबी लगाना आती है? कभी चाबी लगाते लगाते अटक तो नहीं जाती है। बहुत सहज चाबी है। ''मैं अधिकारी हूँ।' अधिकारी पन की स्मृति ही खजानों की चाबी है। यह चाबी लगाने आती है? इस चाबी से जो खजाना जितना भी चाहिए ले सकते हो। सुख चाहिए, शान्ति चाहिए, प्रेम चाहिए, सब कुछ मिल सकता है।

प्रश्नः– कौन सा वेट कम करो तो आत्मा शक्तिशाली बन जायेगी?

उत्तरः– आत्मा पर वेस्ट का ही वेट है। वेस्ट संकल्प, वेस्ट वाणी, वेस्ट कर्म – इनसे ही आत्मा भारी हो जाती है। जब इस वेट को खत्म करो। इस वेट को समाप्त करने के लिए सदा सेवा में बिजी रहो। मनन शक्ति को बढ़ाओ। मनन शक्ति से आत्मा शक्ति-शाली बन जायेगी। जैसे भोजन हजम करने से खून बनता है, फिर वही शक्ति का काम करता, ऐसे मनन करने से आत्मा की शक्ति बढ़ती है।

प्रश्नः– कौन सा मंत्र भक्ति में बहुत ही प्रसिद्ध है, जिसकी स्मृति में रहो तो खुशी के झूले में झूलते रहेंगे?

उत्तरः– भक्ति में ''हम सो, सो हम'' का मंत्र बहुत प्रसिद्ध है, अभी आप बच्चे 'हम सो' का राज़ प्रैक्टिकल में अनुभव कर रहे हो। यह मंत्र हमारे लिए है, हम ब्राह्मण सो देवता बनेंगे। हम ही सो देवता थे, सो देवता हम ब्राह्मण बने हैं। यह अभी पता चला। अब देवताओं के चित्र देखकर बुद्धि में आता – यह हमारे ही चित्र हैं। यही वन्डर हैं! इसी स्मृति में रहो तो खुशी के झूले में झूलते रहेंगे

19.3.81

विश्व के राज्य-अधिकारी कैसे बने?

आज बापदादा अपने राइट हैन्डस को देख रहे हैं। बाप की कितनी भुजायें अथक सेवा में तत्पर हैं। एक-एक भुजा में अपनी-अपनी विशेषता है। राइट हैन्ड अर्थात् जो सदा बापदादा के डायरेक्शन प्रमाण हर संकल्प वा हर कदम उठावें। बाप की भुजायें बने हो इस-लिए बापदादा भी अपनी भुजाओं को देख हर्षित हो रहे हैं। सभी राइट हैण्डस के हाथ में क्या है? राज्य भाग्य का गोला हाथ में हैं। चित्र भी देखा है ना कृष्ण के हाथ में गोला दिखाया है! तो एक कृष्ण अकेला थोड़े ही राज्य करेगा। आप सब भी साथ होंगे ना। तो आपका भी चित्र है। क्योंकि अधिकारी तो अब बनते हो। अभी के अधिकारीपन के संस्कार 21 जन्म तक चलेंगे। अभी भी राजे और भविष्य में भी राजे बनेंगे। अभी के राज्य-अधिकारी ही विश्व के राज्य-अधिकारी बनते हैं। तो अभी के राज्य-अधिकारी हो? राज्य-कारोबार सबकी ठीक चल रही है? आप सबके राज्य का क्या हाल चाल है? सभी राज्य कारोबारी ला एण्ड आर्डर में हैं? यहाँ ही अगर कभी-कभी के रूलर्स होंगे तो वहाँ क्या करेंगे? वहाँ भी एक-दो जन्म के राजे बन जायेंगे। बनना 21 जन्मों का है तो यहाँ फिर कभी-कभी का क्यों? यहाँ के संस्कार ही वहाँ चलेंगे। तो इसलिए सदा के राजे बनना पड़े। आस्ट्रेलिया निवासी तो रेस कर रहे हैं ना सभी से। कितने नम्बर तक पहुँचे हो? (दिलतख्त तक) उसमें भी नम्बर कौन-सा है? फिर भी पुरुषार्थी अच्छे हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम के संस्कार भरने का लक्ष्य रखने में अच्छे हैं। सच्ची सीतायें बन लकीर के अन्दर रहने के लक्ष्य में अच्छे हिम्मत-वान हैं। रावण की अट्रैक्शन में तो नहीं आते हो ना? रावण के बहुरूपों को अच्छी तरह से जान गये हो? रावण के भी नालेजफुल बन गये हो? नालेज कम होने के कारण ही वह (रावण) अपना बना सकता है। नालेजफुल के आगे वह नज़दीक भी नहीं आ सकते। चाहे सोने का, चाहे हीरे का रूप धारण करे। आस्ट्रेलिया में रावण आता है? वार करने नहीं, सिखाने आता है ना। रावण को भी आप सब आधे कल्प के मित्र बड़े प्यारे लगते हो। इसलिए छोड़ने नहीं चाहता। फिर क्या करेंगे? उसकी मित्रता नहीं निभा-येंगे? (नहीं)

अभी रावण 10 भुजाओं से आपकी 10 प्रकार की सेवा करेगा। इतनी भुजायें सेवा में तो लगायेगा ना। 10 भुजाओं के जोर से आपके लिए बहुत जल्दी-से-जल्दी और बहुत सुन्दर-से-सुन्दर राज्य तैयार करेगा। क्योंकि रावण भी समझ गया है कि अभी हम राज्य नहीं कर सकेंगे लेकिन राज्य तैयार करके देना पड़ेगा। कोई भी कार्य करना होता तो कहने में आता है 10 नाखून का जोर दे यह कार्य करना है। तो यह प्रकृति के 5 तत्व और साथ-साथ जो 5विकार हैं वह ट्रान्सफर होकर 5विशेष दिव्य गुणों के रूप में आपकी सेवा के लिए आयेंगे। फिर तो रावण को धन्यवाद देंगे ना। रावण की बहुत सेना आपके लिए बहुत मेहनत कर रही है। कितने लगे हुए हैं। देखते हो? विदेश में तो विज्ञान द्वारा कितनी तैयारियाँ कर रहे हैं। यह सब किसके लिए हो रहा है? बोलो – हमारे लिए।

आस्ट्रेलिया वालों ने धैर्यता का गुण बहुत अच्छा दिखाया है। इसलिए बापदादा आज विशेष पिकनिक आस्ट्रेलिया वालों से करेंगे। हरेक स्थान की अपनी-अपनी विशेषता है। जो औरों को चांस दिया, ऐसे चान्सलर्स बनने के लिए बापदादा सभी को विशेष एक गिफ्ट दे रहे हैं। । कौन-सी? विशेष एक श्रृंगार दे रहे हैं। वह है – '''सदा शुभ चिन्तक की चिन्दी''। ताज के साथ-साथ यह चन्दी ज़रूर होती है। जैसे आत्मा बिन्दी चमक रही है ऐसे मस्तक के बीच यह चिन्दी की मणी भी चमक रही है। यह सारा ही शुभचिन्तक ग्रुप है ना। परचिन्तन को तलाक देने वाले, सदा शुभ चिन्तक। जब भी कोई ऐसी बात सामने आये तो शुभ-चिन्तक की मणी की

गिफ्ट सदा स्मृति में रखो। तो आस्ट्रेलिया में सदा पावरफुल वायब्रेशन, पावरफुल सर्विस और सदा फ़रिश्तों की सभा दिखाई देगी। शक्तियों और पाण्डवों का संगठन भी अच्छा है, सेवा का उमंग भी अच्छा है। सेवा तो सब करते हैं लेकिन सफलता स्वरूप सेवा वह है जिस सेवा में किसी भी संस्कार वा संकल्प का विघ्न न हो। यही बातें सर्विस की वृद्धि में समय लगा देती हैं। इसलिए सदा निर्विघ्न सेवाधारी बनो। आस्ट्रेलिया निवासियों ने कितने सेवा केन्द्र खोले हैं? सेवा का उमंग अच्छा रहे फिर भले ही कहीं भी जाओ। अपनीसेवा समझ कार्य करो। ऐसा नहीं यह जर्मनी की है, यह आस्ट्रेलिया की है नहीं। बाबा की सेवा वा विश्व की सेवा हमारी है। इसको कहा जाता है – बेहद की वृत्ति। बेहद वृत्ति वाले हो ना। जहाँ जाओ अपना ही है। विश्व के कल्याणकारी हो, न कि सिर्फ़ आस्ट्रेलिया के वा आस-पास के। यह तो निमित्त सेवा की वृद्धि कारण नियम बनाये हैं। अच्छी तरह से सेवा को सम्भाल सकें इसलिए निमित्त बनाया है। अभी आगे क्या करना है? सेवाकेन्द्र भी खोले, गीता पाठशाला भी खोली। अभी क्या करेंगे? (सूक्ष्म सेवा) सूक्ष्म सेवा के साथ-साथ और भी कुछ करना है। अभी आस्ट्रेलिया से कोई ऐसा वी.आई.पी. नहीं लाये हो। ऐसा वी.आई.पी लाओ जो भारत की सरकार को उनका स्वागत करना पड़े। गवर्मेन्ट तक आवाज़ जाना अर्थात् आवाज़ बुलन्द होना। अभी सारे विदेश में से कोई भी स्थान ऐसी सेवा करे। न चाहते भी भारत वालों के कानों में जबरदस्ती भी आवाज़ पड़े। जैसे कुम्भकरण के चित्र में दिखाते हो ना, अमृत कान में डाल रहे हैं। तो ऐसी सेवा हो तब कहेंगे विदेश का आवाज़ भारत तक पहुँचा। अभी छोटी-छोटी तूतारियाँ तक पहुँचे हो, बिगुल बजाना पड़ेगा। फिर आप सबको बापदादा बहुत अच्छी गिफ्ट देंगे। जब ऐसा आवाज़ निकलेगा तब जय-जयकार की शहनाइयाँ बजेंगी। नहीं तो भारत के कुम्भकरण ऐसे सहज जागने वाले नहीं हैं। अब तो सिर्फ़ ''क्या''कह करके खर्राटे मारते रहते। समझा, अब क्या करना है। विदेश में हर स्थान पर ऐसी हिम्मत वाले हैं। इस वारी नैरोबी वालों ने कोशिश बहुत अच्छी की। मेहनत अच्छी की। आफ़ीशल प्रोग्राम बनायेंगे तब आवाज़ होगा। पर्सनल पोग्राम बनाते तो आवाज़ बुलन्द नहीं हो सकता। आप फिर जब ऐसी सेवा करेंगे तक महायज्ञ की समाप्ति समारोह करेंगे। अभी तो आरम्भ किया है।

शक्ति सेना ऐसे लग रही है जैसे बनी बनाई है। सूरत और सीरत दोनों ही शक्ति रूप के दिखाई दे रहे हैं। यूनीफार्म भी अच्छी है, सबके बैज भी अच्छे चमक रहे हैं। मेहनत अच्छी की है। आस्ट्रेलिया निवासी जितने ही शुरू में स्वतन्त्र संस्कार के रहे उतना ही अभी मर्यादा में भी अच्छे रह रहे हैं। अभी बाप के मीठे बन्धन में आ गये हैं। सब अच्छे हैं। जैसे जेवर होता है उनको स्वरूप में लाया जाता है यह भी जेवर अच्छे तैयार हो गये हैं। पालिश हो गई। पाण्डव भी सर्विसएबुल अच्छे हैं। रिगार्ड देना और रिगार्ड लेना, इस मंत्र से सदा सहज सेवा की वृद्धि होती रहती है। अभी रिगार्ड देने भी सीख गये हैं। लेने भी सीख गये हैं। रिगार्ड देना ही लेना है। यह सदा याद रखो। सिर्फ़ रिगार्ड लेने से नहीं मिलेगा, लेकिन देने से मिलेगा। इसलिए एक दो में स्नेह और युनिटी अच्छी रहती। यह मंत्र पक्का याद हैं ना।

दीदी-दादी को देख – वायरलेस सेट आपके पास हैं ना। जो सेकेण्ड से भी जल्दी जहाँ कर्त्तव्य कराना हो वहाँ वायरलेस द्वारा डायरेक्शन दे सकते। क्योंकि जितनी सेवा वृद्धि को प्राप्त होती जायेगी तो फिर यह पत्र व्यवहार या टेलीग्राम, टेलीफोन आदि क्या कर सकेंगे। आज यह तो ठीक हैं, कल नहीं। फिर सारी सेवा कैसे हैन्डल करेंगे? इसका भी साधन अपनाना पड़े। हाल भी बनायेंगे, भण्डारा भी बना दिया यह तो जो आयेंगे उन्हों के लिए ठीक हैं लेकिन चारों ओर के सेवाकेन्द्रों के इतने विस्तार को कैसे हैन्डल करेंगे? सबको यहाँ बुलायेंगे? क्यू तो प्रजा की होगी वारिस तो क्यू में नहीं आयेंगे ना। इसलिए विशेष सेकेण्ड में कर्मातीत स्टेज के आधार से आपने संकल्प किया और वहाँ ऐसे पहुँचेगा जैसे आप कहते जा रहे हैं और पहुँच रहा है। ऐसे भी अनुभव बहुत होते रहेंगे जो समाचार में भी आयेंगे कि आज ऐसा अनुभव हुआ। साक्षात्कार भी होंगे और संकल्पों की सिद्धि भी होगी। अभी यह विशेषता आती जायेगी। महारथियों का पुरुषार्थ अभी विशेष इसी अभ्यास का ही है। अभी-अभी कर्म योगी, अभी-अभी कर्मातीत स्टेज। एक स्थान पर खड़े होते भी चारों ओर संकल्प की सिद्धि द्वारा सेवा में सहयोगी बन सकते हो।

बहुत समय देना पड़ता है। जितना टाइम देते हो उतनी ही खुशी की खान सबके पास भरती जा रही है। आपका टाइम देना अर्थात् खुशी की खान भरना। दूसरों की खुशी को देख और ही उन्हों को उमंग उत्साह दिलाने के लिए संकल्प होता है। सब अच्छा ही अनुभव कर रहे हैं। समय ज़रूर देना पड़ता है लेकिन समय की सफलता हजार गुणा ज्यादा हो जाती। इसलिए मधुबन की आकर्षण सबको दिन-प्रतिदिन और ही बढ़ती जाती। यह आप निमित्त आत्माओं की सेवा का फल है।

आस्ट्रेलिया के भिन्न-भिन्न सेवाकेन्द्रों से आये हुए भाई-बहनों के साथ अव्यक्त बापदादा की मधुर मुलाकात।

1. हर कदम में पदमों की कमाई जमा हो रही है? ऐसे अपने को पदमापदम भाग्यशाली अनुभव करतेहो? सारे दिन में कितने पदम जमा होते हैं? हिसाब निकाल सकते हो? पाण्डव मिलकर सेवा को वृद्धि में ला रहे हैं, यह बहुत अच्छा है। सदा एक दो से सन्तुष्ट रहते हो? सब सदा एकमत और एकरस हैं, यह भी एक बहुत अच्छा एग्जाम्पल है। एक ने कहा दूसरे ने माना, यह है सच्चे स्नेह का रेसपान्ड। ऐसे एग्जाम्पल को देख और भी सम्पर्क में आने के लिए हिम्मत रखते हैं। संगठन भी सेवाका साधन बन जाता है। एक बाप, एक मत, यही संस्कार सतयुग में एक राज्य की स्थापना करते हैं। निर्विघ्न सेवा चल रही है ना? कोई खिटखिट तो

नहीं है? जहाँ माया देखती है कि इनकी युनिटी अच्छी है, घेराव है तो वहाँ आने की हिम्मत ही नहीं रखती। एक-एक अपने को सेवा के निमित्त समझकर चलते हैं। एक नहीं लेकिन हम सब निमित्त हैं। बाप ने निमित्त बनाया है, यह स्मृति रहे तो सफलता होती रहेगी। मनन की शक्ति से स्वयं की स्टेज भी पावरफुल होती जायेगी।

2. सदा अपने को निर्बन्धन आत्मा महसूस करते हो? किसी भी प्रकार का बन्धन तो नहीं महसूस करते? नालेजफुल की शक्ति से बन्धनों को खत्म नहीं कर सकते हो? नालेज में लाइट और माइट दोनों हैं ना। नालेजफुल बन्धन में कैसे रह सकते हैं? जैसे दिन और रात इकट्ठा नहीं रह सकते, वैसे मास्टर नालेजफुल और बन्धन, यह दोनों इकट्ठा कैसे हो सकते। नालेजफुल अर्थात् निर्बन्धन। बीती सो बीती। जब नया जन्म हो गया तो पास्ट के संस्कार अभी क्यों इमर्ज करते हो? जब ब्रह्माकुमार-कुमारी बन गये तो बन्धन कैसे हो सकता? ब्रह्मा बाप निर्बन्धन है तो बच्चे बन्धन में कैसे रह सकते? इसलिए सदा यह स्मृति में रखो कि हम मास्टर नालेज-फुल हैं। तो जैसा बाप वैसे बच्चे।

3. सदा सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, इतना नशा रहता है? सफलता होगी या नहीं होगी यह क्वेश्चन ही नहीं। सफलता मूर्त हैं – ऐसे नशा रहता है? मास्टर शिक्षक हो ना। जैसे बाप शिक्षक की क्वालीफिकेशन है वैसे मास्टर शिक्षक की भी होगी ना। बाप समान बने हो ना? (हाँ) यह हाँ-हाँ के गीत अच्छा गाती हैं। इससे सिद्ध है कि यह बाप के गुण सभी को सुनाकर डांस करती कराती हैं। कुमारियों को देख करके बापदादा बहुत खुश होते हैं। क्योंकि कुमार और कुमारियाँ त्याग कर तपस्वी आकर बने हैं। बच्चों के त्याग की हिम्मत देख, तपस्या का उमंग देख बापदादा खुश होते हैं। बाप की महिमा तो भक्त करते हैं लेकिन बच्चों की महिमा बाप करते हैं। कितने जन्म आपने माला सिमरण की? अभी बाप रिटर्न में बच्चों की माला सिमरण करते हैं। आप लोग देखते हो किस समय बाप माला सिमरण करते हैं? (अमृतबेले) तो जिस समय बाप माला सिमरण करते उस समय आप सो तो नहीं जाते हो? शक्तियाँ तो सोने वालों को जगाने वाली हैं। खुद कैसे सोयेंगी? रिजल्ट अच्छी है। सर्टीफिकेट मिलना भी लक है। आस्ट्रेलिया वालों को अच्छा सर्टीफिकेट मिल रहा है। अपनी फुलवाड़ी को निश्चय और हिम्मत के जल से सींचते रहने से वृद्धि को पाते रहेंगे। वृद्धि होती रहेगी।

निर्मला बहन को – बापदादा जितनी भी महिमा करे उतनी कम है, ऐसे महिमा योग्य रतन हो। जैसा नाम है वैसे निर्मानचित्त के गुण से विजयी बनी हो। सहनशक्ति और सामना करने की शक्ति के आधार पर सर्व स्थानों को निर्विघ्न बनाया है। तो बापदादा प्रत्यक्ष-फल को देखकर बहुत खुश हैं। इसलिए सदा विशेष आत्माओं की लिस्ट में हो। सदा बाप की मदद मिलती रहती है और मिलती रहेगी। विशेष बच्ची के मस्तक पर सदा बाप का हाथ है। सदा यही चित्र अपने पास रखना। सर्व दैवी परिवार का भी स्नेह और सर्टीफिकेट है।

मुरली का सार –

1. अभी के अधिकारी पन के संस्कार 21 जन्म तक चलेंगे, अभी के राज्य-अधिकारी ही विश्व के राज्य-अधिकारी बनते हैं।

2. जैसे रात दिन इकट्ठा नहीं रह सकते वैसे मास्टर नालेजफुल और बन्धन दोनों इकट्ठा नहीं हो सकते। नालेजफुल की शक्ति से बन्धनों को खत्म करो।

21.3.81

सच्ची होली कैसे मनायें?

आज बेगमपुर के बादशाह अपने बेगमपुर के मालिकों से मिलने आये हैं। ऐसे मालिकों को देख बापदादा भी खुश हो रहे हैं कि हर बालक, मालिक बन गये हैं। संगमयुग बेगमपुर, मूलवतन बेगमपुर, स्वर्ग बेगमपुर, तीनों के मालिक। बापदादा ऐसे मालिकों को देख, मालिकों को आज के होली की मुबारक देते हैं। रंग के होली की मुबारक नहीं। लेकिन 'हो-लिए' की मुबारक है। सब बाप के हो लिए अर्थात् हो गये। हो लिए ना? गीत क्या गाते हो? बाप के हो-लिए। जो बाप के हो लिए उन्हों को ही होली मुबारक। होंगे वा हो लिए? क्या कहेंगे? जब होली अर्थात् पास्ट इज पास्ट कर बाप के होलिए तब खुशी की पिचकारी लगाते हो। पिचकारी से रंग डालते हैं ना! तो आपकी पिचकारी से कितनी धारायें निकलती हैं? आजकल एक ही पिचकारी से भिन्न-भिन्न रंग भी डालते हैं। वह रंग लगने के बाद बेरंगी हो जाते हैं। इसलिए उन्हें वस्त्र वा अपनी सूरत ठीक करना पड़ता है। और आपका रंग इतना श्रेष्ठ और प्रिय है। जो जिसको भी लगाओ वह यही कहेगा कि और लगाओ। सदा लगाओ। आपकी खुशी की पिचकारी मनुष्य को कितना परिवर्त्तन कर देव आत्मा मना देती है। एक धारा – ''मैं एक श्रेष्ठ आत्मा हूँ'', यह खुशी की धारा है। मैं विश्व के मालिक का बालक हूँ। मैं सृष्टि के आदि मध्य अन्त का नालेजफुल हूँ। ऊंचे ते ऊंचे बाप के साथ श्रेष्ठ मंच पर मेरा हीरो पार्ट है। इसी प्रकार कितनी खुशी की पाइंटस की धारायें आपकी पिचकारी में हैं। एक तो यह खुशी की पिचकारी एक-दो को लगाते हो ना। दूसरी सर्व प्राप्तियों के धाराओं की पिचकारी। जैसे अतीन्द्रिय सुख। आत्मा और परमात्मा के मिलन का रूहानी प्रेम। ऐसे और भी सोचो। यह

तो कामन है। तीसरी पिचकारी, सर्व शक्तियों की पिचकारी। इन विदेशियों ने पिचकारी कब देखी है? जैसे गुलाबाशी होती है उसमें कितने सुराख होते हैं। ऐसे पिचकारी दूर से लगाई जाती है जो फोर्स से दूर-दूर तक जाती है। ज्ञान की अलौकिक पिचकारियाँ तो देखी हैं ना। अच्छा – चौथी पिचकारी ज्ञान की मूल पाइंटस। ऐसे पिचकारियों से होली खेलने से देव आत्मा बन जाते हो। गोपी-वल्लभ, गोप गोपियों से एक दिन होली नहीं खेलते लेकिन संगमयुग का हर दिन होली डे है। संगम पर होली और सतयुग मे होगी हाली डे। अभी हाली डे नहीं मनाना है। अभी तो मेहनत ही मुहब्बत के कारण हाली डे की अनुभूति कराती है। बापदादा ने बच्चों का एक दृश्य ऊपर से देखा। मेहनत का दृश्य देखा। (जहाँ नया हाल बनना है वहाँ भाई लोग रोज पत्थर उठाते हैं) कहाँ मन्दिरों में पूजे जाने वाले, प्रकृति भी आपकी दासी बनकर सेवा करने वाली, बाप भी बच्चों की माला सिमरण करते हैं – लेकिन बच्चे क्या कर रहे थे? पत्थर उठा रहे थे। यह मेहनत, मेहनत नहीं लगी मुहब्बत के कारण। समझा हमारा कार्य है, घर का कार्य है। यज्ञ सेवा है। तो बापदादा से मुहब्बत होने के कारण यह मेहनत भी एक खेल लग रहा था ना। संगमयुग की जितनी मेहनत उतनी फ्रीडम है। क्योंकि बुद्धि और शरीर बिजी रहते उतना व्यर्थ संकल्पों से फ्री रहते हैं। इसलिए कहा कि संगम पर मेहनत ही हाली डे है। बच्चों को देख बापदादा आपस में रूह-रूहाण कर रहे थे। अभी हॉल बनाने के लिए पत्थर उठा रहे हैं। लेकिन यह एक पत्थर हजार गुणा वृद्धि को पा कर हीरे मोती बन जायेंगे। जो आपके महलों में यह हीरे मोती कितनी सजावट करेंगे! वहाँ महल बनाना नहीं पड़ेगा। अभी जो मेहनत की उसका फल सजा सजाया महल मिलेगा। बापदादा देख रहे थे। बड़ी खुशी-खुशी से सेवा की लगन में मगन थे। तो अब समझा 'होली' कौन-सी है!

पहले जलाना है फिर मनाना है। एक दिन जलाते हैं दूसरे दिन मनाते हैं। आप भी एक दिन होली अर्थात् 'पास्ट इज पास्ट' करते हो। अर्थात् पिछला सब जलाते हो। तब ही फिर गीत गाते हो – हम तो बापदादा के हो लिए। यह है खुशी में मनाना। यादगार की होली में भी मनाने के दिन देवताओं के रूप साँग के रूप में बनाते हैं। लेकिन उसमें भी विशेष मस्तक पर लाइट जलाते हैं। यह आपका यादगार है। जब मस्तक की ज्योति जगती तो देवता बन जाते हो। बाप के हो लिए तो देवता बन जाते हो। आपका यह अनुभव और उन्हों का है– आपके अनुभव का यादगार मनाना। तो समझा आप लोगों ने होली कैसे मनाई और वह लोग क्या करते हैं? यथार्थ क्या और यादगार क्या! (बड़े-बड़े लोग एक महामूर्ख सम्मेलन भी करते हैं।) यह भी राइट है। क्योंकि जब बाप आते हैं तो बड़े-बडे लोग महामूर्ख ही बन जाते हैं, जितने बड़े उतने ही मूर्ख बनते। जो बाप को ही नहीं जान सकते तो महामूर्ख हुए ना! देखो बड़े-बड़े नेतायें जानते हैं? तो महामूर्ख हुए ना। यह भी अपनी कल्प पहले की महामूर्खता की यादगार मनाते हैं। सारा उल्टा कार्य करते हैं। बाप कहते – मेरे को जानो, वह कहते – बाप हैं ही नहीं। तो उल्टे हुए ना! आप कहते हो – बाप आया है, वह कहते – हो ही नहीं सकता। तो उल्टा कार्य करते हैं ना। ऐसे तो बहुत कुछ विस्तार कर लिया है। लेकिन सार है – बाप और बच्चों के मंगल मिलन का यादगार। संगमयुग ही मंगल मिलन का युग है। भारत में रहने वाले बच्चे तो इन बातों को जानते हैं, आज विदेश से आये हुए बच्चों को सुना रहे हैं। क्योंकि राज्य तो भारत में ही करना हैं ना। अमेरिका में तो नहीं करना है। भारत की बातें ज़रूर सुनेंगे, समझेंगे ना! आपकी बातें क्या बना दी हैं! कितना फर्क कर दिया है!

ऐसे होली कर होली के गीत गाने वाले, सदा भिन्न-भिन्न पिचकारियों द्वारा आत्मा की चोली रंगने वाले, सदा बाप से मंगल मिलन मनाने वाले, ब्राह्मण सो देवता बनने वाले, बेगमपुर के मालिकों को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते।

मुरलियाँ तो बहुत सुनी हैं। कुछ रहा है सुनने का? अभी तो मिलना और मनाना है। सुनना और सुनाना भी बहुत हो गया। साकार रूप में सुनाया, अव्यक्त रूप में कितना सुनाया, एक वर्ष नहीं लेकिन 13 वर्ष। अभी तेरहवें में 'तेरा' ही होना चाहिए ना। तेरा हूँ – इसी धुन में रहो तो सारा सुनाने का सार आ जावेगा।

कल बच्चों के मनाने का दृश्य भी देखा है। खूब हँसा, खूब खेला। बापदादा मुस्कराते रहे। सदा ही ऐसे हँसते नाचते रहो। लेकिन अविनाशी। बापदादा बच्चों को बहलते हुए देख यही वरदान देते कि 'अविनाशी भव'। टांगे तो थक जायेंगे लेकिन बुद्धि से खुशी में नाचते रहेंगे। अव्यक्त वतन वासी बन फ़रिश्ते की ड्रेस में नाचते रहेंगे तो अविनाशी और निरंतर कर सकेंगे। यह भी संगमयुग के स्वेहज है। फिर नहीं होंगे। इसलिए खूब खेलो, खाओ, मौज करो लेकिन 'अविनाशी' शब्द भी याद रखो।

अमेरिका – एक-एक रतन अनेक आत्माओं के कल्याण के निमित्त बने हुए हैं। आत्माओं को भटकते हुए देख रहम आता है ना। अभी तो और भी ज्यादा दु:ख की हाहाकार बढ़ेगी। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे सुख की एक जरा-सी झलक भी नहीं दिखाई देती। यह सुख के साधन सब उन्हों को दु:ख के साधन अनुभव होने लगेंगे। ऐसे टाइम पर सिर्फ़ एक ही बाप और बाप के बच्चों का सहारा उन्हों को दिखाई देगा। सारे देश में अन्धकार के बीच में एक ही लाइट हाउस दिखाई देगा। यह धीरे-धीरे अति में जल्दी-जल्दी जाता रहेगा। तो ऐसे समय पर लाइट और माइट देने के अभ्यासी आत्मायें चाहिए। इसी अभ्यास में रहते हो? एक समय पर तीनों प्रकार की सेवा करनी पड़ेगी। मंसा भी, वाचा भी, कर्मणा भी। कर्मणा से उनको बिठाकर आथत देना। तो ऐसी तैयारी करते चलो। क्योंकि अमेरिका में जितने ज्यादा वैभव है, जितना बड़ा स्थान है उतना ही बड़ा दु:ख का अनुभव भी करेंगे। तो विनाश की तैया-

रियाँ चल रही हैं ना! विनाश के निमित्त आत्माओं के साथ-साथ आप स्थापना करने वाली आत्मायें भी अपना झण्डा बुलल्द करेंगी। तो स्थापना के कार्य में विशेष आत्मा को कौन लायेगा? अमेरिका। विशेष आत्माओं को लाने से अमेरिका का सेवाकेन्द्र भी वी.आई.पी. हो जायेगा ना!

2. सानफ्रांसिसको – जैसा स्थान है, स्थान के अनुसार कौन सा झण्डा लहरायेंगे। साइंस वाले तो और भी जगह हैं। लेकिन यहाँ की विशेषता क्या है? (धार्मिक नेतायें बहुत हैं) एक भी धार्मिक नेता को अगर अनुभव करा दिया तो कितना नाम बाला हो जायेगा! तो यह विशेषता दिखाओ। जब वह लोग भी प्रैक्टिकल अनुभव सुनेंगे तो अनुभव के आधार पर आकर्षित होंगे। तो यह नवीनता दिखाओ। कुमारियाँ ऐसे विद्वानों को बाण मारें। यह कल्प पहले की यादगार है ना। तो वह कौन सी कुमारियाँ हैं? आप हो ना। कोई भी निमित्त बनें। ब्रह्माकुमार नज़दीक लायेंगे और ब्रह्मा कुमारियाँ जीत प्राप्त कर विजय का झण्डा लहरायेंगी। आप ब्रह्माकुमार शिकार को लायेंगे और आप शिकार को अपना बनाकर मरजीवा बना देंगी। पहला कार्य पाण्डवों का है। फल निकालने में थोड़ा समय लगता है, जो बीज डाल रहे हो उसका फल निकलेगा ज़रूर। प्यार से उन्हों की सेवा करनी है। उन्हों को महान-महान कहते हुए अपनी महानता दिखानी है अगर पहले उनको कहेंगे आप तो कुछ नहीं हैं, आप रांग कर रहे हैं, तो वह तुम्हारी सुनेंगे भी नहीं। इसलिए पहले महिमा करो। जैसे मुरली में सुनते हो ना – चूहा क्या करता है? पहले फूंक देता फिर काटता है, ऐसे करो। क्योंकि फिर भी विकारी दुनिया को पिलर्स देकर ठहराने का काम तो किया है ना। तो जो किया है उसकी महिमा तो करेंगे ना। अच्छा-अच्छा कहते, अच्छा बनाते जाओ। तो समझा आपको कौन-सा कार्य करना है! यह भी आपके मैसेन्जर बन जायेंगे। इन्हों का आवाज़ तो बड़ा होता है ना! माइक बड़े होते हैं, इसलिए ऐसे-ऐसे को सम्पर्क में लाओ। जिसका नाम अच्छा हो, बड़ा हो। आप उन्हों द्वारा अपना बड़ा कार्य निकाल सकते हो। ब्राह्मण बढ़ाने की सेवा तो करनी ही है। लेकिन यह है एडीशन। कोई बडा प्रोग्राम रखो, उस प्रोग्राम में ऐसे वी.आई.पीज को कोई पोजीशन देकर बुलाने की कोशिश करो। उन्हों को इस कार्य में सहयोगी बनाओ। उनके पास कोई अनुभवी परिवार ले जाओ तो उसके प्रैक्टिकल लाइफ का प्रभाव उन पर ज्यादा पड़ेगा। क्योंकि वह भी प्रूफ देखने चाहते हैं कि यह क्या करते हैं।

अफ्रीका – सेवा की वृद्धि का उमंग उत्साह तो सदा रहता है ना। जैसे दृष्टान्त देते हैं कि मछली नीर के बिना नहीं रह सकती वैसे ब्राह्मण सेवा के बिना नहीं रह सकते। क्योंकि सेवा करने से एक तो स्व उन्नति और साथ-साथ अनेक आत्माओं की भी उन्नति हो जाती है। तो अपनी उन्नति के कारण भी प्राप्ति होती और दूसरे की जो उन्नति होती उसका भी शेयर जमा हो जाता। इसलिए बाप-दादा सदा कहते – ब्राह्मण वह जो याद और सेवा में सदा तत्पर रहें। याद में रहकर सेवा करना अर्थात् मेवा ही मेवा है। जैसे मेहनत मुहब्बत में बदल जाती, वैसे सेवा मेवा में बदल जाती। तो ऐसे सेवा का उमंग रहता है? जो जितना करता है उसका पदमगुणा हो जमा हो जाता है। अफ्रीका में भावना वाली सहयोगी आत्मायें हैं। सेवा में सहयोग देने का अच्छा उमंग-उत्साह है। एक-एक रत्न बहुत वैल्युबल और लाडला है।

''सी फादर'' – इस मंत्र को सदा सामने रखते हुए चढ़ती कला में चलते चलो। जब सी फादर और फालो फादर है तो उड़ते रहेंगे जब आत्मा को फालो करते तो नीचे आ जाते। कभी भी आत्मा को नहीं देखना। क्योंकि आत्मायें सब पुरुषार्थी हैं। पुरुषार्थी को फालों करोंगे तो पुरुषार्थी में अच्छाई भी होती और कुछ कमी भी होती है। सम्पन्न नहीं। तो फालो फादर, न कि ब्रदर या सिस्टर। जैसे फादर एकरस है तो फालो फादर करने वाले भी एकरस रहेंगे।

भारतवासी बच्चों को देखते हुए बापदादा बोले – फारेनर्स का अपना भाग्य, भारत वालों का अपना भाग्य। भारत वाले भाग्यशाली न बनते तो फारेन वाले कैसे आते? विदेश की महिमा लास्ट सो फास्ट के हिसाब से है लेकिन जो हैं ही आदि में वह आदि में ही रहेंगे। भारत वालों ने भगवान को अपना बनाया है, और उन्हों को बना बनाया भगवान मिला है। अगर भारतवासी बाप को न पहचा-नते तो उन्हों को पहचान कौन देता? बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त तो फिर भी पहले भारत वाले हैं। गुप्त से प्रत्यक्ष पहले भारत वालों ने किया, फिर उन्होंने माना। जैसे दुकान खोलते हैं तो पहली रेढ़ी पर या पटरी पर लगाते हैं। फिर वृद्धि होते-होते बड़ी दुकान हो जाती। ऐसे भारत वालों ने पहले बहुत मेहनत की, दुकान खोले तब तो आप लोग आये हो ना! जितना सहन भारत वालों ने किया उतना फारेनर्स ने कहाँ किया है? इसलिए भारतवासी बच्चे इसमें नम्बरवन हैं। जो सहन करने में नम्बरवन हैं उन्हें वर्सा भी उसी हिसाब से मिलता है। आप लोग प्रैक्टिकल चरित्र करने वाले हो और वह सुनने वाले हैं। आप कहेंगे हमने ऑखों से ब्रह्मा में शिव बाप को देखा यही विशेषता है। वैसे तो सब एक-दो से आगे हैं क्योंकि ड्रामा अनुसार संगमयुग को ऐसा वरदान मिला हुआ है जो हरेक में कोई-न-कोई विशेषता सब से विशेष है। अभी देखो भोली की विशेषता और भाषण करने वालों की विशेषता। अगर भोली न होती तो भी काम नहीं चलता। अच्छा – यह भी होली खेल रहे हैं। आज है ही मनाना। यह भी पिचकारी लग रही है।

मुरली का सार :– 1. बाप दादा रंग की मुबारक नहीं देते परन्तु बाप के हो लिए अर्थात् हो गये उसकी मुबारक देते हैं।

2. खुशी की प्राप्तियों की, सर्वशक्तियों की, ज्ञान के मूल पांइन्टस आदि आदि की पिचकारियों से खेलते-खेलते तुम देव-आत्मा

बन जाते हो।

3. 'सी फादर' और फालो फादर करने से चढ़ती कला का अनुभव करेंगे।

23.3.81

फर्स्ट या एयरकन्डीशन में जाने का सहज साधन

आज बादादा सब बच्चों की सूरत में विशेष एक बात देख रहे हैं। वह कौन-सी है? हरेक के चेहरे पर प्यूरिटी की ब्यूटी कहाँ तक आई है। अर्थात् पवित्रता के महानता की चमक कहाँ तक दिखाई देती है। जैसे शरीर की ब्यूटी में मस्तक, नयन,मुख आदि सब देखते हैं वैसे प्युरिटी की ब्यूटी में बापदादा, मस्तक में संकल्प की रेखायें अर्थात् स्मृति शक्ति, नयनों में आत्मिक वृत्ति की दृष्टि, मुख पर महान आत्मा बनने की खुशी की मुस्कान, वाणी में सदा महान बन महान बनाने के बोल, सिर पर पवित्रता की निशानी लाइट का ताज – ऐसा चमकता हुआ चेहरा हरेक का बापदादा देख रहे थे। आज वतन में प्यूरिटी की काम्पीटीशन थी। आप सबका नम्बर कितना होगा। यह जानते हो? फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड प्राइज होती है। आप सबको कौन-सी प्राइज मिली?

फर्स्ट प्राइज के अधिकारी वह बच्चे बनते हैं जिन्हों की पाँचों ही बातें सम्पन्न होंगी। एक लाइट का ताज, उस ताज में भी जिसका ताज फुल सर्किल में है। जैसे चन्द्रमा का भी पूरा सर्किल होता है। कब अधूरा होता है, तो किन्हों का आधा था, किसका पूरा था। और किन्हों का तो लकीर मात्र था, जिसको कहेंगे नाम-मात्र। तो पहला नम्बर अर्थात् फर्स्ट प्राइज वाले फुल लाइट के ताजधारी।

दूसरा – जैसे मस्तक में तिलक चमकता है वैसे भाई-भाई की स्मृति अर्थात् आत्मिक स्मृति की निशानी मस्तक बीच बिन्दी चमक रही थी। तीसरा – नयनों में रूहानियत की चमक, रूहानी नज़र। जिस्म को देखते हुए न देख रूहों को देखने के अभ्यास की चमक थी। रूहानी प्रेम की झलक थी। होंठों पर प्रभु प्राप्ति आत्मा और परमात्मा के महान मिलन की और सर्व प्राप्तियों की मुस्कान थी। चेहरे पर मात-पिता और श्रेष्ठ परिवार से बिछुड़े हुए कल्प बाद मिलने के सुख की लाली थी। बाप भी लाल, आत्मा भी लाल, घर भी लाल और बाप के भी बने तो लाल हो गये। कितने प्रकार की लाली हो गई? ऐसी पाँचों ही रेखायें सम्पूर्ण स्वरूप वाले फर्स्ट प्राइज में हैं। अब इसके आधार पर सोचो – फर्स्ट प्राइज 100 पाँचों ही रेखाओं में है? सेकेण्ड प्राइज वाले 70, थर्ड प्राइज वाले 30, अब बताओ आप कौन हो? सेकेण्ड प्राइज वाले – उसमें भी नम्बरवार मैजारिटी थे। फर्स्ट और थर्ड में कम थे। 30 से 50 के अन्दर मैजारिटी थे। कहेंगे उसको भी सेकेण्ड में, लेकिन पीछे। फर्स्ट क्लास वालों में भी दो प्रकार थे – एक जन्म से ही प्यूरिटी के ब्यूटी की पाँचों ही निशानियाँ जन्म सिद्ध अधिकार के रूप में प्राप्त किये हुए थे। प्राप्त करना नहीं पड़ा लेकिन प्राप्त किया हुआ है। उन्हों के चेहरे पर अपवित्रता के नालेज की रेखायें नहीं हैं। निजी संस्कार नैचुरल लाइफ है। संस्कार परिवर्त्तन करने की मेहनत नहीं। स्वप्न में भी संकल्प मात्र अपवित्रता का वार नहीं। अर्थात् प्यूरिटी की ब्यूटी में जरा भी महीन दाग नहीं।

दूसरे जन्म से नालेज की लाइट और माइट के आधार पर सदा प्यूरिटी की ब्यूटी वाले। अन्तर यह रहा जो पहले वाले सुनाये उन्हों के लास्ट जन्म के पिछले संस्कार का भी दाग नहीं। इसलिए पिछले जन्म के संस्कारों को मिटाने के मेहनत की रेखा नहीं। नालेज है कि पिछले जन्म का बोझ आत्मा पर है लेकिन चौरासिवें जन्म के पास्ट का ड्रामा अनुसार अपवित्रता के संकल्प का अनुभव नहीं। इसलिए यह भी लिफ्ट की गिफ्ट मिली हुई है। इसलिए निजी संस्कार के रूप में सहज महान आत्मा हैं। जैसे सहज योगी वैसे सहज पवित्र आत्मा। बी होली नहीं, वह हैं ही होली। उन्हों के लिए यह स्लोगन नहीं है कि ''बी होली''। वह बने बनाये हैं। फर्स्ट प्राइज में भी नम्बरवन। समझो एयरकन्डीशन ग्रुप हो गया। फिर फर्स्टक्लास, उन्हों का सिर्फ़ थोडा सा अन्तर है। निजी संस्कार नहीं, संस्कार बनाना पड़ता है। अर्थात् मर जीवे जन्म के आदि में निमित्त मात्र नालेज के आधार पर अटेन्शन रखना पड़ा। जरा-सी पुरुषार्थ की रेखायें जन्म के आदि में दिखाई देती हैं, अभी नहीं। पहले आदि काल की बात है। एयरकन्डीशन अर्थात् बना बनाया था। और फर्स्टक्लास वालों ने आदि में स्वयं को बनाया। उसमें भी पुरुषार्थ सहज किया है। सहज पुरुषार्थ, तीव्र पुरुषार्थ, समर्थ पुरुषार्थ। लेकिन फिर भी पुरुषार्थ की रेखा है। यह प्यूरिटी की बात चल रही है। प्यूरिटी की सब्जेक्ट में वह बने बनाये और वह पुरुषार्थ की रेखा वाले हैं। बाकी टोटल सब सब्जेक्ट कीबात अलग है। यह एक सब्जेक्ट की बात है। वह 8 रत्नों की माला और वह 100में पहले नम्बर। थर्ड क्लास तो इण्डिया गवर्मेण्ट भी कैन्सिल प्रजा है, थर्ड क्लास वाले तो सतयुग की पहली नामीग्रामी प्रजा है, जो रायल फैमली के सम्बन्ध में सदा रहेगी। अन्दर की प्रजा होगी। बाहर की नहीं। अन्दर वाले कनेक्शन में बहुत नज़दीक होंगे, लेकिन मर्त्तबे से पीछे होंगे। लक्ष्य तो एयरकन्डीशन का है ना। फर्स्टक्लास के अन्तर से सेकेण्ड क्लास को तो समझ गये होंगे। सेकेण्ड क्लास से फर्स्ट वाएयरकन्डीशन में जाने का बहुत सहज साधन है। सिर्फ़ एक संकल्प का साधन है। वह एक संकल्प है – ''मैं हूँ ही ओरीजनल पवित्र आत्मा।'' ओरीजनल स्वरूप अपवित्र तो नहीं था ना! अनादि और आदि दोनों काल का ओरीजनल स्वरूप पवित्र था। अपवित्रता तो आर्टीफिशल है। रीयल नहीं है। शूद्रों की देन है। शूद्रों की चीज़ ब्राह्मण कैसे यूज कर सकते? सिर्फ़ यह एक संकल्प रखो – अनादि आदि रीयल रूप पवित्र आत्मा हूँ। किसी को भी देखों तो उसका भी अनादि आदि रीयल रूप देखो,

स्वयं का भी, औरों का भी। रीयल को रियलाइज करो। लाल चश्मा लगाओ। स्मृति का चश्मा । वह चश्मा नहीं। मैं भी लाल वह भी लाल, बाप भी लाल। तो लाल चश्मा हो गया ना। फिर लाल किले के ऊपर झण्डा लहरायेंगे। अभी मैदान तक कदम उठाया है। गवर्मेन्ट की नज़र तक आये हो फिर नज़र के बाद दिल पर आ जायेंगे। सबकी दिल से निकलेगा कि अगर हैं तो यही हैं। अभी यह आवाज़ फैला कि यह बडी संस्था है। बड़ा कार्य है। यह काई साधारण संस्था नहीं। नामीग्रामियों की लिस्ट में है। अभी आपके मेह-नत की प्रशंसा कर रहे हैं। फिर आपके परमात्म-मुहब्बत की महिमा करेंगे। अभी 81 में यह किया है, 82 में क्या करेंगे? यह भी अच्छा किया। बापदादा खुश हैं। संगठन का स्वरूप विश्व के आगे एक वन्डरफुल चित्र में रखा है ‘‘हम सब एक है’’ इसका झण्डा लहराया। लोग समझते हैं कि हमने तो समझा यह ब्रह्माकुमारियाँ गई कि गई, कहाँ तक चलेंगी। लेकिन संगठन के नक्शे ने अनेक साधनों द्वारा जैसे रेडियो, टी.वी. अखबारें, नेतायें इन सबके सम्पर्क द्वारा अभी यह आवाज़ है कि ब्रह्माकुमारियाँ चढ़ती कला में अमर हैं, जाने वाली नहीं है, लेकिन सभी को ले जाने वाली हैं। जो सबने तन-मन-धन लगाया, विश्व के कोने-कोने के ब्राह्मण भाव-नाओं की मिट्टी देहली में पड़ गई। यह भी शुभ-भावनाओं की मिट्टी डालने की सेरीमनी हो गई। अपने राज्य की नींव को मजबूत किया। इसलिए कुछ फल निकला, कुछ निकलेगा। सब फल इकट्ठा नहीं निकलता है। उल्हनों से बच गये। अब कोई उल्हना नहीं दे सकेगा कि बाहर की स्टेज पर कहाँ आते हो। लाल किले तक पहुँच गये तो उल्हना समाप्त हुआ। अपनी कमज़ोरी रही, आपका उल्हना नहीं रहा। इसलिए सफलतामूर्त्त हैं और सदा रहेंगे। आगे और नया प्लैन बनेगा। खर्चे का नहीं सोचो। खर्चा क्या किया – 10 पैसे ही तो दिये। लोग तो मनोरंजन संगठन के लिए, संगठित प्रोग्राम्स के लिए कितना खर्चा जमा करते हैं और खर्च करते हैं। आप सबका तो 10 पैसे या 10 रूपये में काम हो गया। इतना बड़ा परिवार देखना और मिलना। यह भी स्नेह का सबूत देखा। युनिटी की खुशबू, सेवा के स्नेह की खुशबू, श्रीमत पर एवररेडी रहने की खुशबू, उमंग-उत्साह और इन्वेंशन की खुशबू चारों ओर अच्छी फैलाई। बापदादा के वतन तक पहुँची। अब सिर्फ़ एक खुशबू रह गई। कौन सी? भगवान के बच्चे हैं, यह खुशबू रह गई है। महान आत्मायें हैं, यहाँ तक पहुँचे हो। आत्मिक बाम्ब लगा है। लेकिन परमात्म बाम्ब नहीं लगा है। बाप आया है, बाप के यह बच्चे वा साथी हैं, अब यह लास्ट झण्डा लहराना है। भाषणों द्वारा, झाँकियों में माइक द्वारा तो सन्देश दिया। लेकिन अब सबके हृदय तक सन्देश पहुँच जाए। समझा अभी क्या करना है? यह भी दिन आ जायेगा। सुनाया ना विदेश से कोई ऐसे विशेष व्यक्ति लायेंगे तो यह भी हलचल मचेगी। सब फर्स्टक्लास प्यूरिटी की ब्यूटी में आ जायें, सेकेण्ड क्लास भी खत्म हो जाए तो यह भी दिन दूर नहीं होगा। सेकेण्ड क्लास वाले को ब्यूटीफुल बनने के लिए मेहनत का मेकप करना पड़ता। अभी यह भी छोड़ो। नैचुरल ब्यूटी में आ जाओ। जैसे देवताओं के संस्कारों में अपवित्रता की अविद्या है वही ओरीजनल संस्कार बनाओ तो विश्व के आगे प्यूरिटी की ब्यूटी का रूहानी आकर्षण स्वरूप हो जायेगा। समझा आज क्या काम्पीटीशन थी?

फारेन ग्रुप तो बहुत जाने वाला है। एक जाना अनेकों को लाना है। एक-एक स्टार अपनी दुनिया बनायेंगे। यह चैतन्य सितारों की दुनिया है इसलिए साइन्स वाले आपके यादगार सितारों में दुनिया ढूंढ रहे हैं। अभी उन्हों को भी अपनी दुनिया में ले आओ। तो मेह-नत से बच जायें। उन्हों को अनुभव कराओ कि सितारों की दुनिया कौन सी है? जो आज भारत के बच्चों के साथ-साथ विदेशियों की भी विशेष ज्ञान के पिकनिक की खातिरी कर रहे हैं। जो जाने वाला होता है उनको पिकनिक देते हैं ना। तो बापदादा भी पार्टी दे रहे हैं। यह ज्ञान की पार्टी है।

ऐसे प्यूरिटी की ब्यूटी में नम्बरवन, इमप्युरिटी पर सदा विन करने वाले, प्युरिटी को निजी संस्कार बनाने वाले, सर्व सम्बन्ध का सुख एक बाप से सदा लेने वाले, एक में सारा संसार देखने वाले – ऐसे सदा आशिकों को माशुक बाप का याद प्यार और नमस्ते।

महायज्ञ में सभी ने बहुत अच्छी मेहनत की है। मेहनत का फल मिल ही जाता है। आवाज़ बुलन्द करने में खर्चा तो करना ही पड़ता, कोई नई इन्वेंशन निकलने में खर्चा लगता है लेकिन उसकी सफलता पीछे भी फल देती रहती है। कहाँ नाम बाला होता, कहाँ आवाज़ निकलता, कहाँ ब्राह्मण परिवार में वृद्धि होती। महायज्ञ के कारण गवर्मेन्ट द्वारा जो सहयोग प्राप्त हुआ वह भी हमेशा के लिए उनके रिकार्ड में तो आ गया ना। जैसे रेलवे कन्शेसन का हुआ, तो यह भी रिकार्ड में आ गया। ऐसे गुप्त कई कार्य होते हैं। प्रेजीडेन्ट तक भी आवाज़ तो गया कि इतने सेवाकेन्द्रों से इतने लगन से आये हैं। यह भी प्रत्यक्षफल है। जिन्होंने जो सेवा की, बापदादा रिजल्ट से सन्तुष्ट हैं। इसलिए मेहनत की मुबारक हो।

सेवाधारी भाई-बहनों से – हरेक अपने को कोटों में कोऊ, कोऊ मे कोऊ, ऐसी श्रेष्ठ आत्मा समझते हो? सेवा की लाटरी मिलना यह भी एक भाग्य की लकीर है। यह सेवा, सेवा नहीं है लेकिन प्रत्यक्ष मेवा है। एक होता है ताजा फ्रूट, एक होता है सूखा फ्रूट। यह कौन सा फल है? यह प्रत्यक्ष भाग्य का फल है। अभी अभी करो, अभी-अभी खाओ। भविष्य में जमा होता ही है लेकिन भविष्य से भी पहले प्रत्यक्ष फल होता है। वायुमण्डल के सहयोग की छत्रछाया कितना सहज श्रेष्ठ बनाती है। साथ-साथ पुरानी दुनिया के आवाज़ और नज़र से दूर हो जाते हो। नौकरी के बजाय, यज्ञ-सेवा घर की सेवा हो जाती है। नौकरी की टोकरी भी तो उतर जाती है ना। सेवा का ताज धारण हो जाता है। नौकरी की टोकरी तो मजबूरी से उठा रहे हो, दिल से नहीं, डायरेक्शन है तो कर रहे हो।

तो इस सेवा से कितने फायदे हो जाते? संग कितना श्रेष्ठ मिल जाता, सागर का कण्ठा और सदा ज्ञान की चर्चा, बाप और सेवा के सिवाए और कुछ नहीं। यह मदद है ना। तो कितना भाग्य है। मातायें क्या समझती हैं? बना बनाया भाग्य हथेली पर आ जाता है। जैसे कृष्ण के चित्र में स्वर्ग हथेली पर है तो संगम पर भाग्य का गोला हाथ में है। इतने भाग्यवान हो। यह सेवा अभी साधारण बात लगती लेकिन यह साधारण नहीं है। यह वन्डरफुल लकीर है। जितना समय यह लाटरी मिलती है, इसी लाटरी को अविनाशी बना सकते हो। ऐसे अभ्यासी बन जाओ जो कहाँ भी रहते यहाँ जैसी स्थिति बना सको। यहाँ सहज योगी की अनुभूति होती है ना! मेहनत समाप्त हो जाती, तोय ही सहजयोग का अनुभव परम्परा चलाते रहो। संगमयुग में परम्परा। मधुबन में यह अनुभव छोड़ के नहीं जाना लेकिन साथ ले जाना। ऐसे कई कहते हैं – मधुबन से नीचे उतरे तो मीटर भी नीचे उतर गया। ऐसे नहीं करना। इसी अभ्यास का लाभ लो। सेवा करते हुए भी सहजयोगी की स्थिति पर अटेन्शन रखो। ऐसे नहीं सिर्फ़ कर्मणा सेवा में बिजी हो जाओ। कर्मणा के साथ-साथ मंसा स्थिति भी सदा श्रेष्ठ रहे, तब सेवा का फायदा है। शक्तियाँ भी अच्छी स्नेही हैं, अथक हैं, बाहों में दर्द तो नहीं पड़ता, बापदादा स्नेह से पाँव और बाँहें दबा रहे हैं। स्नेह ही पाँव दबाना है। अच्छा – मधुबन में सेवा का बीज डाला अर्थात् सदा के लिए श्रेष्ठ कर्मों का फल बोया।

मुरली का सार

1. फर्स्ट प्राइज के अधिकारी वे हैं जिनकी निम्नलिखित 5 बातें सम्पन्न होंगी –

अ- फुल लाइट के ताजधारी।

ब- जैसे मस्तक में तिलक चमकता है वैसे भाई-भाई की स्मृति, आत्मिक स्मृति की निशानी।

स- नयनों मे रूहानियत की चमक।

य- होठों पर परिवार प्राप्ति, आत्मा और परमात्मा के महान मिलन की और सर्व प्राप्तियों की मुस्कान।

र- चेहरे पर मात-पिता और श्रेष्ठ परिवार से कल्प बाद मिलने के सुख की लाली।

2. फर्स्ट वा एयरकन्डीशन में आने का सहज साधन है – सिर्फ़ यह सकंल्प रखो कि मैं अनादि, आदि रियल-रूप पवित्र आत्मा हूँ। किसको भी देखो उसका भी आदि अनादि पवित्र रूप देखो।

25.3.81

महानता का आधार संकल्प, बोल और कर्म की चेकिंग

आज बापदादा अपने चरित्र भूमि, कर्म-भूमि, वरदान भूमि, महान तीर्थ भूमि, महान यज्ञ भूमि के सर्व साथियों से मिलने आये हैं। मधुबन निवासी अर्थात् महान पावन धरनी निवासी। इस धरनी पर आने वालों का भी महान पार्ट है तो सोचो रहने वालों का कितना महान पार्ट है! महान आत्माओं का निवास स्थान भी महान ही गाया जाता है। जब आने वाले भी अपने को भाग्यशाली अनुभव करते हैं, अनेक अनुभवों की स्वयं में अनुभूति करते हैं तो रहने वाले का अनुभव क्या होगा! जो रहते ही ज्ञान सागर में हैं, ऐसी आत्मायें कितनी श्रेष्ठ हैं! ऐसे सब मधुबन निवासी अपने को इतना महान अनुभव करते हो? जैसे टाप का स्थान है, ऐसे ही स्थिति भी टाप की रहती है। नीचे तो नहीं आते हो? मधुबन निवासियों को कितने प्रकार की लिफ्ट की गिफ्ट है, उसको जानते हो? कभी गिनती की है? वा इतनी है जो गिनती नहीं कर सकते हो? मधुबन की महिमा के गीत सभी गाते हैं। लेकिन मधुबन निवासी वह गीत गाते हैं? मधुबन वासियों का चित्र दूर-दूर रहने वाले भी अपने दिल में कितना श्रेष्ठ चित्र खींचते हैं, यह जानते हो? ऐसा चित्र चैतन्य में अपना तैयार किया है? जैसे स्थूल पहाड़ी है वैसे सदा ऊंची स्टेज की पहाड़ी पर रहते हो? ऐसी ऊंची स्टेज जहाँ पुरानी दुनिया के वातावरण का कोई प्रभाव आ नहीं सकता। ऐसी स्टेज पर रहते हो कि नीचे आ जाते हो?नीचे आने की आवश्यकता है? मधुबन को डबल लकीर है। एक तो मधुबन निवासी मधुबन की लकीर के अन्दर हैं। और दूसरा सदा श्रीमत की लकीर के अन्दर हैं। तो डबल लकीर के अन्दर हो। डबल लकीर के अन्दर रहने वालों की स्टेज कितनी श्रेष्ठ होगी। आज बापदादा अपने भूमि निवासियों से मिलने आये हैं। बाप की चरित्र भूमि है ना। तो भूमि निवासियों से विशेष स्नेह होगा ना।

बिचारे आज के भक्त तो भूमि की मिटटी मस्तक में लगाने के लिए तरस रहे हैं और आप सदा वहाँ निवास करते हो तो कितने भाग्यशाली हो! दिल तख्तनशीन तो सब हैं लेकिन मधुबन निवासी चुल्ह पर भी हैं तो दिल पर भी हैं। डबल हो गया ना। सबसे ताजा माल मधुबन निवासियों को मिलता है। सबसे बढ़िया अनुभवों की पिकनिक मधुबन निवासी करते हैं। सबसे ज्यादा मिलन महफिल मधुबन निवासी करते हैं। सबसे ज्यादा चारों ओर के समाचारों के नालेजफुल भी मधुबन निवासी हैं। मधुबन निवासियों से मिलने सभी को आना पड़ता है। तो इतना श्रेष्ठ भाग्य, और वर्णन कौन करता है? बाप बच्चों का भाग्य वर्णन कर रहे हैं। मधुबन निवासियों का कितना श्रेष्ठ भाग्य है! अगर एक बात भी सदा याद रखो तो नीचे कभी आ नहीं सकते। अब जितनी बाप ने मधुबन निवासियों के भाग्य की महिमा की, उतनी ही महान आत्मा समझकर चलते हो? मधुबन की महिमा सुनकर फारेनर्स भी देखो खुश

हो रहे हैं। इन सबके मन में उमंग आ रहा है कि हम भी मधुबन निवासी हो जावें। आज फारेनर्स जैसे गैलरी में बैठे हैं। गैलरी में बैठकर देखने में मजा होता है। कब मधुबन निवासी देखने वाले कभी फारेनर्स देखने वाले। मधुबन निवासियों के लिए सिर्फ़ एक ही बात स्मृति में रख समर्थ बनने की है। वह कौन सी ? जिस एक बात में सब समया हुआ है।

जो भी संकल्प करो, बोल बोलो, कर्म करो, सम्बन्ध वा सम्पर्क में आओ, सिर्फ़ एक चेकिंग करो कि यह सब बाप समान हैं ? जो मेरा संकल्प वह बाप का संकल्प है ? मेरा बोल बाप का बोल है ? क्योंकि सबकी यही प्रतिज्ञा है बाप से, ''कि जो बाप से सुना है वही सुनायेंगे। जो बाप सुनायेंगे वहीं सुनेंगे। जो बाप ने सोच के लिए दिया है वहीं सोचेंगे। यह तो सबका वायदा है ना ? जब यह वायदा है तो सिर्फ़ यह चेकिंग करो। यह चेकिंग करना मुश्किल तो नहीं हैं ना। पहले मिलाओ फिर प्रैक्टिकल में लाओ। हर संकल्प पहले बाप समान है – यह चेक करो। पहले भी सुनाया था कि जो द्वापर युगी राज वा रजवाड़े होकर गये हैं, कोई भी चीज़ स्वीकार करेंगे तो पहले चेकिंग होती है फिर स्वीकार करते हैं। तो द्वापर के राजे आपके आगे क्या लगते हैं! आप लोग तो फिर भी अच्छे राजे बने होंगे। लेकिन गिरे हुए राजाओं की भी इतनी खातिरी होती तो आप सबका संकल्प भी बुद्धि का भोजन है। बोल भी मुख का भोजन ही है। कर्म – हाथों का, पाँव का भोजन है। तो सब चेक करना चाहिए ना। पहले करके पीछे सोंचना इसको क्या कहा जायेगा ? डबल समझदार।

सिर्फ़ यह एक बात सदा अपना निजी संस्कार बना दो जैसे स्थूल में भी कई आत्माओं के संस्कार होते हैं, ऐसे वैसे कोई चीज़ कब स्वीकार नहीं करेंगे। पहले चेक करेंगे, देखेंगे फिर स्वीकार करेंगे। आप तो सब महान पवित्र आत्मायें हों, सर्व श्रेष्ठ आत्मायें हो। तो ऐसी आत्मायें बिना चेकिंग के संकल्प को स्वीकार कर दे , वाणी से बोल दें, कर्म को कर लें – यह महानता नहीं लगेगी। तो मधुबन निवासियों के लिए सिर्फ़ एक ही बात है। चेकिंग की मशीनरी तो है ना। अभ्यास ही मशीनरी है।

मधुबन वालों की महिमा भी बहुत गाते हैं। अथकपन की खुशबू तो बहुत काल से आती है। जैसे अथक पन की खुशबू आती है यह सर्टीफिकेट तो मिला है,इसके साथ और क्या ऐड करेंगे ? जैसे अथक हो वैसे ही सदा एकरस। जब भी रिजल्ट देखें तो सबकी रिजल्ट एकरस अवस्था में एक नम्बर हो। दूसरा तीसरा नम्बर भी नहीं। क्योंकि मधुबन है सबको लाइट और माइट देने वाला। अगर लाइट-हाउस, माइट-हाउस ही हिलता रहेगा तो दूसरों का क्या हाल होगा! मधुबन निवासियों का सब वायुमण्डल बहुत जल्दी चारों ओर फैलता है। यहाँ की छोटी बात भी बाहर बड़े रूप में पहुँचती है। क्योंकि बड़े आदमी हो ना। सदा छत्रछाया में रहने वाले। स्वर्ग में तो प्रालब्ध मिलेगी लेकिन यहाँ भी काफी प्रालब्ध है।मधुबन निवासियों को सब बना बनाया मिलता है। एक डियूटी बजाई बाकी सब बना बनाया। कहाँ से आता है, कितना आता है, कोई संकल्प की ज़रूरत ही नहीं। सिर्फ़ सेवा करो और मेवा खाओ। 36 प्रकार के भोजन भी मधुबन वालों को बार-बार मिलते हैं। तो 36 गुण भी तो धारण करने पड़ेंगे। हरेक मधुबन निवासी को पवित्रता की लाइट के ताजधारी तो होना ही है। लेकिन डबल ताज। एक गुणों का ताज, दूसरा – पवित्रता का ताज जिस ताज में कम से कम 36 हीरे तो होने ही चाहिए।

आज बापदादा मधुबन निवासियों को खास और सभी को आम – गुणों के ताज की क्राउन-सेरीमनी करा रहे हैं। हरेक को जो भी देखे तो ताजधारी देखे। हरेक गुण रूपी रत्न चमकता हुआ औरों को भी चमकाने वाला हो। (बापदादा ने ड्रिल कराई)।

सभी लवलीन स्टेज पर स्थित हो ना! एक बाप दूसरा न कोई। इसी अनुभूति में कितना अतीन्द्रिय सुख है! सर्व गुणों से सम्पन्न श्रेष्ठ स्थिति अच्छी लगती है ना। इसी स्थिति में दिन और रात भी बीत जाये फिर भी सदा इसी में रहने का संकल्प रहेगा। सदा इसी स्मृति में समर्थ आत्मा रहो।

बापदादा निरंतर बच्चों से मिलन मनाते रहते हैं और मनाते रहेंगे। अनेक बच्चे होते भी हरेक बच्चे के साथ बाप मिलन मनाते ही हैं। क्योंकि शरीर के बन्धन से मुक्त बाप औरा दादा दोनों एक सेकेण्ड के अन्दर अनेकों को भासना दे सकते हैं।

दीदी जी के साथ – रायल फैमली बन चुकी है या अभी बन रही है ? राज्य कारोबार चलाने वाले निकल चुके हैं या अभी निकलने हैं ? एक हैं चलानेवाले, एक हैं कारोबार में आनेवाले। जो तख्त नशीन होंगे वह राज्य चलाने वाले। और जो सम्बन्ध में होंगे वह हैं राज्य कारोबार में आने वाले। तो राज्य कारोबार चलाने वाले भी अभी बन रहे हैं ना। राज्य कारोबार चलाने वालों की विशेषता क्या होगी ? तख्त पर तो सब नहीं बैठेंगे, तख्त वालों के सम्बन्धी तो बनेंगे लेकिन तख्त पर बैठने वालों की तो लिमिट है ना। रायल फैमली में आनेवाले और राज्य सिंहासन पर बैठने वाले उन्हों में भी अन्तर होगा। कहलायेंगे तो वह भी नम्बर वन, नम्बर टू विश्व-महाराजन की रायल फैमली। लेकिन अन्तर क्या होगा ? तख्तनशीन कौन होंगे, उसके भी कोई कायदे होंगे ना। इस पर सोचना।

संगमयुग पर तो दिलतख्त के अधिकारी सबको बाप बनाते हैं। भविष्य में राजे-महाराजे तो बनेंगे लेकिन फर्स्ट नम्बर वाला तख्त जो फर्स्ट लक्ष्मी नारायण वाला होगा उसके तख्तनशीन कौन होंगे ? छोटे-छोटे तख्त और राज्य दरबार तो लगेगी लेकिन विश्व-महा-राजन के तख्त का विशेष आधार है– हर बात में, हर सब्जेक्ट में बाप को पूरा फालो करने वाले। अगर एक भी सब्जेक्ट में फालो करने में कमी पड़ गई तो फर्स्ट तख्त के अधिकारी नहीं बन सकते। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी पद पा लेंगे लेकिन फर्स्ट नम्बर

का ताज और तख्त उसके लिए बापदादा दोनों को हर बात में फालो करना पड़े। तब तख्त भी फालो में मिलेगा। हर बात में, हर संस्कार में, हर संकल्प में फालो फादर करना है। इसके आधार पर नम्बर भी बनेंगे। तख्त वहीं मिलेगा लेकिन उसमें भी नम्बर होंगे। सेकेण्ड लक्ष्मी-नारायण और आठवाँ लक्ष्मी-नारायण अन्तर तो होगा ना। यह फालो में अन्तर पड़ जाता है। इसमें भी गुह्य रहस्य है। महाराजा बनना और महारानी बनने का भी रहस्य है। बापदादा भी राजधानी देखते रहते हैं। कौन-कौन किस राज्य के अधिकारी बनते हैं। किस रेखाओं के हिसाब से बनते हैं, यह भी राज़ है ना।

फालो फादर की भी बड़ी गुह्य गति है। जन्म में फालो फादर। बचपन जीवन में फालो फादर। युवा जीवन में फालो फादर। सेवा की जीवन में फालो फादर। फिर अन्तिम जीवन में फालो फादर। स्थापना के कार्य के साथ और सहयोग में कितने समय से कितने परसेन्ट में फालो किया? पालना के कार्य में कहाँ तक फालो किया? अपने और औरों के विघ्न विनाशक कार्य में कहाँ तक फालो किया? यह हिसाब की मार्क्स मिलाकर फिर टोटल होता है। टोटल के हिसाब से फाइनल नम्बर होता है।

आप सब जम्प लगा सकते हो। कोटो में कोई ऐसी कमाल दिखा सकते हैं। अब वह कोटो में कोई कौन है? वह अपने से पूछो। ऐसे नहीं कि देरी से आये हो तो नहीं कर सकते हो। कर सकते हो। इतना बड़ा जम्प लगाना पड़े, लगाओ जम्प, बापदादा एकस्ट्रा मदद भी देंगे।

पर्सनल – जैसे बाप बच्चों की श्रेष्ठता को जानते हैं वैसे आप सभी जानते हो? इतना नशा रहता है वा समझते हो कभी रहता है कभी नहीं रहता? बातों को देखते हो या बाप को देखते हो? किसको देखते हो? क्योंकि जितना बड़ा संगठन है तो बातें भी तो इतनी ही होंगी ना। बातों का होना, यह तो संगठन में होगा ही। बातों के समय बाप याद रहता है? यह नहीं सोंचो कि बातें खत्म हों तो बाप याद आवे। लेकिन बातों को खत्म करने के लिए ही बाप की याद है। बातें खत्म ही तब होंगी जब हम आगे बढ़ेंगे। ऐसे नहीं, बातें खत्म हों तब हम आगे बढ़े, हम आगे बढ़ेंगे तो बातें पीछे हो जायेंगी। रास्ता नहीं आगे बढ़ता है, चलने वाला आगे बढ़ता है। कभी रास्ता आगे बढ़ता है क्या? कोई रास्ता पार करने वाला सोचे, रास्ता आगे बढ़े तो मैं बढूँ। रास्ता तो वहीं रहेगा लेकिन उसे तय करने वाला आगे बढ़ेगा। साइडसीन नहीं आगे बढ़ेंगी लेकिन देखने वाला आगे बढ़ेगा। तो यह शक्ति है? 'एक बाप दूसरा न कोई' – यह पाठ मंसा वाचा कर्मणा में निरंतर याद है? दूसरा कोई व्यक्ति नहीं है, यह भी एक सब्जेक्ट है, लेकिन कोई वैभव है? कोई विघ्न है? कोई व्यर्थ संकल्प है, अगर एक बाप और दूसरा व्यर्थ संकल्प भी होगा तो दो हो गये ना! संकल्प में भी व्यर्थ न हो, बोल में भी और कुछ नहीं। आत्माओं से सम्पर्क निभाते स्मृति में बाबा। व्यक्ति वा सम्पर्क का विस्तार न हो। ऐसे हैं? आज तन पर, कल मन पर, परसों वस्तु पर कभी व्यक्ति पर, इसमें तो टाइम नहीं चला जाता है? व्यक्ति जायेगा, वैभव आयेगा, वैभव जायेगा, व्यक्ति आयेगा। यह तो लाइन होती है। क्योंकि माया जानती है, थोड़ा भी चांस आने का मिला तो वह बहुरूप से आयेगी। एक रूप से नहीं। यहाँ से वहाँ से, कोने से, छत से, बहु रूपों से, बहुत तरफ से आ जायेगी। लेकिन परखने वाला, एक बाप दूसरा न कोई इस पाठ के आधार पर उनको दूर से ही नमस्कार करायेगा। करेगा नहीं, करायेगा। तो एक बाप दूसरा न कोई यह चारों तरफ। का वातावरण हो। क्योंकि नालेज तो सब मिल गई है। कितनी पाइंटस हैं, पाइंटस होते हुए पाइंटस रूप में रहें, यह है उस समय की कमाल जिस समय कोई नीचे खींच रहा हो। कभी बात नीचे खींचेगी, कभी कोई व्यक्ति निमित्त बन जायेगा, कभी वायु-मण्डल, कभी कोई चीज़, यह तो होगा। यह न हो, ऐसा हो नहीं सकता। लेकिन आप उसमें एकरस रहो, उसकी युक्ति सोचो, कोई नई इन्वेंशन निकालो। ऐसी इन्वेंशन हो जो सब वाह-वाह करें, यह अच्छी युक्ति सुनाई।

मुरली का सार:-

1. जो भी संकल्प करो, बोल बोलो कर्म करो, सम्बन्ध वा सम्पर्क में आओ, सिर्फ़ चेकिंग करो कि ये बाप समान हैं।
2. डबल ताजधारी बनो – एक गुणों का ताज, दूसरा – पवित्रता का ताज धारण करो।
3. विश्व-महाराजन के तख्त का विशेष आधार है – हर बात में, हर सब्जेक्ट में बाप को पूरा फालो करना।

29.3.81

ज्ञान का सार 'मैं' और 'मेरा बाबा'

बापदादा सभी बच्चों को सम्पन्न स्वरूप बनाने के लिए रोज-रोज भिन्न-भिन्न प्रकार से पाइंटस बताते रहते हैं। सभी पाइंटस का सार है – सभी को सार में समाए बिन्दु बन जाओ। यह अभ्यास निरंतर रहता है? कोई भी कर्म करते हुए यह स्मृति रहती है कि – मैं ज्योतिबिन्दु इन कर्मेन्द्रियों द्वारा यह कर्म कराने वाला हूँ। यह पहला पाठ स्वरूप में लाया है? आदि भी यही है ओर अन्त में भी इसी स्वरूप में स्थित हो जाना है। तो सेकेण्ड का ज्ञान, सेकेण्ड के ज्ञान स्वरूप बने हो? विस्तार को समाने के लिए एक सेकेण्ड का अभ्यास है। जितना विस्तार को समाने के लिए एक सेकेण्ड का अभ्यास है। जितना विस्तार में आना सहज है उतना ही सार स्वरूप में आना सहज अनुभव होता है? सार स्वरूप में स्थित हो फिर विस्तार में आना, यह बात भूल तो नहीं जाते हो? सार

स्वरूप में स्थित हो विस्तार में आने से कोई भी प्रकार के विस्तार की आकर्षण नहीं होगी। विस्तार को देखते, सुनते, वर्णन करते ऐसे अनुभव करेंगे जैसे एक खेल कर रहे हैं। ऐसा अभ्यास सदा कायम रहे। इसको ही 'सहज याद' कहा जाता है।

जीवन के हर कर्म में दो शब्द काम में आते हैं, चाहे ज्ञान में, चाहे अज्ञान में। वह कौन से? – मैं और मेरा। इन दो शब्दों में ज्ञान का भी सार है। मैं ज्योति-बिन्दु वा श्रेष्ठ आत्मा हूँ। ब्रह्माकुमार वा कुमारी हूँ। और मेरा तो एक बाप दूसरा न कोई। मेरा बाबा इसमें सब आ जाता है। मेरा बाबा अर्थात् मेरा वर्सा हो ही गया। तो यह 'मैं' और 'मेरा' दो शब्द तो पक्का है ना! मेरा बाबा कहने से अनेक प्रकार का मेरा समा जाता है। तो दो शब्द स्मृति में लाना मुश्किल है वा सहज है? पहले भी यह दो शब्द बोलते थे, अभी भी यही दो शब्द बोलते लेकिन अन्तर कितना है? मैं और मेरा यही पहला पाठ भूल सकता है क्या? यह तो छोटासा बच्चा भी याद कर सकता है। आप नालेजफुल होना। तो नालेजफुल दो शब्द याद न कर सकें, यह हो सकता है क्या! इसी दो शब्दों से मायाजीत, निर्विघ्न, मास्टर सर्वशक्तिवान बन सकते हो। दो शब्दों को भूलते हो तो माया हजारों रूपों में आती है। आज एक रूप में आयेगी, कल दूसरे रूप में। क्योंकि माया का मेरा-मेरा' बहुत लम्बा चौड़ा है। और मेरा बाप तो एक ही है। एक के आगे माया के हजार रूप भी समाप्त हो जाते हैं। ऐसे माया जीत बन गये हो? माया को तलाक देने में टाइम क्यों लगाते हो? सेकेण्ड का सौदा है। उसमें वर्ष क्यों लगाते हो। छोड़ो तो छूटो। सिर्फ़ 'मेरा बाबा', फिर उसमें ही मगन रहेंगे। बाप को बार-बार यही पाठ पढ़ाना पड़ता है। दूसरों को पढ़ाते भी हो फिर भी भूल जाते हो। दूसरों को कहते हो याद करो, याद करो। और खुद फिर क्यों भूलते हो? कौन-सी डेट फिक्स करेंगे जो अभुल बन जाओ। सभी की एक ही डेट होगी या अलग-अलग हो सकती होगी? जितने यहाँ बैठे हो उन्हों की एक ही डेट हो सकती है। फिर बातें करना तो खत्म हो गया। खुश खबरी भल सुनाओ, समस्यायें नहीं सुनाओ। जैसे मेला वा प्रद-र्शनी करते हो तो उद्घाटन के लिए कैंची से फूलों की माला कटवाते हो। तो आज क्या करेंगे? खुद ही कैंची हाथ में उठायेंगे। वह भी दो तरफ जब मिलती है तब चीज़ कटती है। तो ज्ञान और योग दोनों के मेल से माया की समस्याओं का बन्धन खत्म हो गया, यह खुशखबरी सुनाओ। आज इसी समस्याओं के बन्धन को काटने का दिन है एक सेकेण्ड की बात है ना? तैयार हो ना? जो सोचकर फिर यह बंधन काटेंगे वह हाथ उठाओ। फिरतो सब डबल विदेशी तीव्र पुरुषार्थी की लिस्ट में आ जायेंगे। सुनने समय ही सब के चेहरे चेन्ज हो गये हैं तो जब सदा के लिए हो जायेंगे तो क्या हो जायेगा? सभी चलते फिरते अव्यक्त वतन के फ़रिश्ते नज़र आयेंगे। फिर संगमयुग फ़रिश्तों का युग हो जायेगा। इसी फिरश्तों द्वारा फिर देवताय प्रगट होंगे। फ़रिश्तों का देवतायें भी इन्तज़ार कर रहे हैं। वह भी देख रहे हैं कि हमारे आने के लिए योग्य स्टेज तैयार है। फ़रिश्ता और देवता दोनों का लास्ट घड़ी मेल होगा। देवतायें आप सब फ़रिश्तों के लिए वरमाला लेकर के इन्तज़ार कर रहे हैं फ़रिश्तों को वरने लिए। आपका ही देवपद इन्त-ज़ार कर रहा है। देवताओं की प्रवेशता सम्पन्न शरीर में होगी ना। वह इन्तज़ार कर रहे हैं कि यह 16 कला सम्पन्न बनें और वर-माला पहनें। कितनी कला तैयार हुई है। सूक्ष्मवतन में सम्पन्न फ़रिश्ते स्वरूप और देवताओं के मिलन का दृश्य बहुत अच्छा होता है। फ़रिश्तों के बजाए जब पुरुषार्थी स्वरूप होता तो देवतायें भी दूर से देखते रहते। समय के प्रमाण समीप आते-आते भी सम्पन्न न होने के कारण रह जाते हैं। यह वरमाला पहनाने की डेट भी फिक्स करनी पड़ेगी। यह फिर कौन-सी डेट होगी? डेट फिक्स होने से 'जैसा लक्ष्य वैसे लक्षण' आ जाते हैं। वह डेट तो आज हो गई। तो यह भी नज़दीक हो जायेगी ना। क्योंकि निर्विघ्न भव की स्टेज कुछ समय लगातार चाहिए। तब बहुतकाल निर्विघ्न राज्य कर सकेंगे। अभी समस्याओं के और समाधान के भी नालेजफुल हो गये हो। जो बात किससे पूछते हो उससे पहले नालेज के आधार से समझते भी हो कि यह ऐसा होना चाहिए। दूसरे से मेहनत लेने के बजाय, समय गंवाने के बजाय क्यों न उसी नालेज की लाइट और माइट के आधार पर सेकेण्ड में समाप्त करके आगे बढ़ते हो? सिर्फ़ क्या है कि माया दूर से ऐसी परछाई डालती है जो निर्बल बना देती है। आप उसी घड़ी कनेक्शन को ठीक करो। कनेक्शन ठीक करने से मास्टर सर्वशक्तिवान स्वत: हो जायेंगे।

माया कनेक्शन को ही ढ़ीला करती है उसकी सिर्फ़ सम्भाल करो। यह समझ लो कि कनेक्शन कहाँ लूज हुआ है तब निर्बलता आई है। क्यों हुआ, क्या हुआ यह नहीं सोचो। क्यों क्या के बजाए कनेक्शन को ही ठीक कर दो तो खत्म। सहयोग के लिए समय भल लो। योग का वायुमण्डल वायब्रेशन बनाने के लिए सहयोग भल लो, बाकी और व्यर्थ बातें करना वा विस्तार में जाना इसके लिए कोई का साथ न लो। वह हो जायेगा शुभचिन्तन और वह हो जायेगा परचिन्तन। सब समस्याओं का मूल कारण कनेक्शन लूज होना है। है ही यह एक बात। मेरा ड्रामा में नहीं है, मेरे को सहयोग नहीं मिला, मेरे को स्थान नहीं मिला। यह सब फालतू बातें हैं। सब मिल जावेगा सिर्फ़ कनेक्शन को ठीक करो तो सर्व शक्तियाँ आपके आगे घूमेंगी। कहाँ जाने की फुर्सत ही नहीं होगी। बापदादा के सामने जाकर बैठ जाओ तो कनेक्शन जोड़ने के लिए बापदादा आपके सहयोगी बन जायेंगे। अगर एक दो सेकेण्ड अनुभव न भी हो तो कनफ्यूज न हो जाआ। थोड़ा सा जो टूटा हुआ कनेक्शन है उसको जोड़ने में एक सेकेण्ड वा मिनट लग भी जाता है तो हिम्मत नहीं हारो। निश्चय ही फाउन्डेशन को हिलाओ नहीं। और ही निश्चय को परिपक्व करो। बाबा मेरा, मैं बाबा का – इसी आधार से निश्चय की फाउन्डेशन को और ही पक्का करो। बाप को भी अपने निश्चय के बन्धन में बाँध सकते हो। बाप भी जा नहीं सकते।

इतनी अथार्टी इस समय बच्चों को मिली हुई है। अथार्टी को, नालेज को यूज करो। परिवार के सहयोग को यूज करो। कम्पलेन्ट लेकर नहीं जाओ, सहयोग की भी माँग नहीं करो। प्रोग्राम सेट करो, कमज़ोर हो कर नहीं जाओ, क्या करूँ, कैसे करूँ, घबरा के नहीं जाओ। लेकिन सम्बन्ध के आधार से, सहयोग के आधार से जाओ। समझा! सेकेण्ड में सीढ़ी नीचे, सेकेण्ड में ऊपर, यह संस्कार चेन्ज करो। बापदादा ने देखा है – डबल विदेशी नीचे भी जल्दी उतरते, ऊपर भी जल्दी जाते। नाचते भी बहुत हैं लेकिन घबराने की डान्स भी अच्छी करते हैं। अभी यह भी परिवर्त्तन करो। मास्टर नालेजफुल हो, फिर यह डान्स क्यों करते हो?
सच्चाई और सफ़ाई की लिस्ट के कारण आगे भी बढ रहे हैं। यह विशेषता नम्बरवन है। इस विशेषता को देख बापदादा खुश होते हैं। अब सिर्फ़ घबराने की डान्स को छोड़ो तो बहुत फास्ट जायेंगे। नम्बर बहुत आगे ले लेंगे। यह बात तो सबको पक्की है कि 'लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट'। खुशी की डान्स भल करो। बाप का हाथ छोड़ते हो तो बाप को भी अच्छा नहीं लगता कि यह कहाँ जा रहे हैं! बाप के हाथ में हाथ हो फिर तो घबराने की डान्स हो नहीं सकती। माया का हाथ पकड़ते हो तब वह डान्स होती है। बाप का इतना प्रेम है आप लोगों से, जो दूसरे के साथ जाना देख भी नहीं सकते। बाप जानते हैं कि कितना भटक कर परेशान हो फिर बाप के पास पहुँचे हैं, तो कनफ्यूज करने कैसे देंगे? साकार रूप में भी देखा, स्थूल में भी बच्चे कहाँ जाते थे तो बच्चों को कहते थे – 'आओ बच्चे, आओ बच्चे।' जब माया अपना रूप दिखावे तो यह शब्द याद करना।
अमृतवेले की याद पावरफल बनाने के लिए पहले अपने स्वरूप को पावरफुल बनाओ। चाहे बिन्दु रूप हो बैठो, चाहे फ़रिश्ता स्वरूप हो बैठो। कारण क्या होता है स्वयं अपना रूप चेन्ज नहीं करते। सिर्फ़ बाप को उस स्वरूप में देखते हो। बाप को बिन्दु रूप में या फ़रिश्ते रूप में देखने की कोशिश करते लेकिन जब तक खुद नहीं बने हैं तब तक मिलन मना नहीं सकते। सिर्फ़ बाप को उस रूप में देखने की कोशिश करना यह तो भक्ति मार्ग समान हो जाता, जैसे वह देवताओं को उस रूप में देखते और खुद वैसे के वैसे होते। उसी समय वायुमण्डल खुशी का होता। थोड़े समय का प्रभाव पड़ता लेकिन वह अनुभूति नहीं होती। इसलिए पहले स्व-स्वरूप को चेन्ज करने का अभ्यास करो। फिर बहुत पावरफुल स्टेज का अनुभव होगा।
दीदी से – वैरायटी देख करके खुशी होती है ना! फिर भी अच्छी हिम्मत वाले हैं। अपना सब कुछ चेन्ज करना और दूसरे को अपना बनाना, यह भी इन्हों को हिम्मत है। इतना ट्रान्सफर हो गये हैं जो अपने ही परिवार के लगते हैं। यह भी ड्रामा में इन्हों का विशेष पार्ट है। अपने पन की भासना से ही यह आगे बढ़ते हैं। एक-एक को देख करके खुशी होती है। पहले तो थे एक ही भारत की अनेक लकड़ियों का एक वृक्ष। लेकिन अभी विश्व के चारों कोनो से अनेक संस्कार, अनेक भाषायें, अनेक खानपान, सब आत्मायें एक वृक्ष के बन गये हैं, यह भी तो वन्डर है! यही कमाल है जो सब एक थे और है और होंगे। ऐसा ही अनुभव करते हैं। विशेष सर्व का स्नेह प्राप्त हो ही जाता है।
पाण्डवों से – सभी महादानी हो ना? किसी को खुशी देना यह सबसे बड़े ते बड़ा पुण्य का कार्य है। सेवा है। पाण्डव तो सदा एक-रस, एकता में रहने वाले एकानामी करने वाले हैं ना। सभी पाण्डव महिमा योग्य हैं, पूज्यनीय भी हैं। भक्तों के लिए तो अभी भी पूज्यनीय हो सिर्फ़ प्रत्यक्ष नहीं हो। (पाण्डवों की पूजा सिर्फ़ गणेश व हनुमान के रूप में ही होती है।) नहीं, और देवतायें भी हैं। गणेश वह हैं जो पेट में सब बातें छिपाने वाले हैं। हनुमान – पूँछ से आसुरी संस्कार जलाने वाला है। पूँछ भी सेवा के लिए है। पूछ-पूछ का पूँछ नहीं है। पाण्डवों की यह विशेषता है – बात पचाने वाले हैं, इधर-उधर करने वाले नहीं। सभी सदा सन्तुष्ट हो ना?
पाण्डवपति और पाण्डव यह सदा का कम्बाइन्ड रूप है। पाण्डवपति पाण्डवों के सिवाए कुछ नहीं कर सकते। जैसे शिवशक्ति है, वैसे पाण्डवपति। जैसे पाण्डवों ने पाण्डवपति को आगे किया, पाण्डवपति ने पाण्डवों को आगे किया। तो सदा कम्बाइन्ड रूप याद रहता है? कभी अपने को अकेले तो नहीं महसूस करते हो? कोई फ्रैन्ड चाहिए, ऐसे तो नहीं महसूस करते? किसको कहें, कैसे कहें, ऐसे तो नहीं? जो सदा कम्बाइन्ड रूप में रहते हैं उसके आगे बापदादा साकार में जैसे सब सम्बन्धों से सामने होते हैं। जितनी लगन होगी उतना जल्दी बाप सामने होगा। यह नहीं निराकार है, आकार है बातें कैसे करें? जो आपस में भी बातें करने में टाइम लगता, ढूंढेंगे। यहाँ तो ढूंढने व टाइम की भी ज़रूरत नहीं। जहाँ बुलाओ वहाँ हाजिर। इसलिए कहते हैं हाजिरा हजूर। तो ऐसा अनु-भव होता है? अभी तो दिन-प्रतिदिन ऐसे देखेंगे कि जैसे प्रैक्टिकल में अनुभव किया कि आज बापदादा आये, सामने आये हाथ पकड़ा, बुद्धि से नहीं, ऑखों से देखेंगे, अनुभव होगा। लेकिन इसमें सिर्फ़ 'एक बाप दूसरा न कोई', यह पाठ पक्का हो। फिर तो जैसे परछाई घूमती है ऐसे बापदादा ऑखों से हट नहीं सकते।
कभी हद का वैराग तो नहीं आता है? बेहद का तो रहना चाहिए। सभी ने यज्ञसेवा की ज़िम्मेवारी का बीड़ा तो उठा लिया है। अभी सिर्फ़ हम सब एक हैं, हम सबका सब काम एक है, प्रैक्टिकल दिखाई दे। अभी एक रिकार्ड तैयार करना है, वह कौन-सा है? वह रिकार्ड मुख का नहीं है। एक दो को रिगार्ड का रिकार्ड। यही रिकार्ड फिर चारों ओर बजेगा। रिगार्ड देना, रिगार्ड लेना। छोटे को भी रिगार्ड देना, बड़े को भी देना। यह रिगार्ड का रिकार्ड अभी निकलना चाहिए। अभी चारों ओर इस रिकार्ड की आवश्यकता है।
स्व-उन्नति और विश्व-उन्नति दोनों का प्लैन साथ-साथ हो। दैवीगुणों के महत्व का मनन करो। एक-एक गुण को धारण करने में

क्या समस्या आती है? उसे समाप्त कर धारण कर चारों तरफ खुशबू फैलाओ जो सभी अनुभव करें। समझा।

मुरली का सार:-

1. सार स्वरूप में स्थित हो विस्तार में आने से कोई भी प्रकार के विस्तार की आकर्षण नहीं होगी।

2. ''मैं और मेरा'' इन दो शब्दों की स्मृति से मायाजीत, निर्विघ्न, मास्टर सर्वशक्तिवान बन सकते हो।

3. माया कनैक्शन लूज करती है, कनफ्यूज करती है। क्यों, क्या को खत्म कर कनैक्शन ठीक करो तो सब ठीक हो जायेगा।

27.3.81

बाप पसन्द, लोक पसन्द, मन पसन्द कैसे बनें?

आज बापदादा विशेष किस लिए आये हैं? आज विशेष डबल विदेशी बच्चों से रूह-रूहान करने के लिए आये हैं। लेन-देन करने के लिए आये हैं। दूर-दूर से सब बच्चे मधुबन में आये हैं तो मधुबन वाले बाप आये हुए बच्चों को खास ज्ञान के रूह रूहान की खातिरी करने आये हैं। आज बापदादा बच्चों से सुनने के लिए आये हैं कि किसी को भी किसी बात में कोई मुश्किल तो अनुभव नहीं होता। बाप और आपका मिलना भी सहज हो गया ना। जब मिलन सहज हुआ, परिचय सहज मिला, मार्ग सहज मिला, फिर भी कोई मुश्किल तो नहीं है। मुश्किल है नहीं, लेकिन कोई ने मुश्किल बना तो नहीं दिया है? बाप द्वारा जो खजाना मिला है उनकी चाबी जब चाहो तब लगाओ, ऐसी विधि आ गई? विधि है तो सिद्धि भी ज़रूर है। विधि में कमी है तो सिद्धि भी नहीं होती। क्या हाल चाल है?

सब उड़ रहे हो? जब ऊंचे बाप के सिकीलधे बच्चे बन गये तो चलने की भी क्या ज़रूरत है? उड़ना ही है। रास्ते पर चलेंगे तो कहाँ बीच में रुकावट आ सकती है, लेकिन उड़ने में कोई रुकावट नहीं होती। सब उड़ते पंछी हैं। ज्ञान और योग के पंख सभी को अच्छी तरह से उड़ा रहे हैं। उड़ते उड़ते थकावाट तो नहीं होती? सबको 'अथक भव' का वरदान मिल चुका है। बात भी बड़ी सहज ही है। अनुभव होता है ना। अपनी ही बात सुनाते हो। इसलिए है ही बहुत सहज। सम्बन्धों की बातें सुनाना इसमें मुश्किल क्या है। दो बातें सिर्फ़ सुनानी है :–

एक – अपने परिवार की अर्थात् सम्बन्ध की बात और दूसरी – प्राप्ति की बात। इसलिए बापदादा सदा बच्चों को हर्षित ही देखते हैं। कभी सारे दिन में एकरस स्थिति के बजाए और रस आकर्षित तो नहीं करते हैं? एक रस हो गये हो? नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप हो गये? अब तो गीता का युग समाप्त होना चाहिए। ज्ञान की प्रालब्ध में आ गये ना सभी! स्मृति स्वरूप होना – यह है ज्ञान की प्रालब्ध। तो अब पुरुषार्थ समाप्त हुआ। जो वर्णन करते हो स्व-स्वरूप का, वह सर्वगुण सदा अनुभव रहते हैं ना। जब चाहो आनन्द स्वरूप हो जाओ, जब चाहो तब प्रेम स्वरूप हो जाओ। जो स्वरूप चाहो जितना समय चाहो, उसी स्वरूप में स्थित हो सकते हो, यह भी नहीं, हुए पड़े हो ना? बाप के गुण वहीं बच्चों के गुण। जो बाप का कर्त्तव्य वह बच्चों का कर्त्तव्य। जो बाप की स्टेज वह बच्चों की स्टेज। इसको कहा जाता है – संगमयुगी प्रालब्ध। तो प्रालब्धी हो या पुरुषार्थी हो? प्राप्ति स्वरूप हो? प्राप्त करना है, होता नहीं है, कैसे होगा, यह भाषा बदल गई ना? आज धरनी पर, कल आकाश में, ऐसे आते जाते तो नहीं हो ना? आज क्वेश्चन में कल फुलस्टाप में। ऐसे तो नहीं करते हो। एकरस अर्थात् एक ही सम्पन्न मूड में रहने वाला। मूड भी बदली न हों। बापदादा वतन से देखते हैं – कई बच्चों के मूड बहुत बदलते हैं। कभी आश्चर्यवत की मूड, कभी क्वेश्चन मार्ग की मूड। कभी कनफ्यूज की मूड। कभी टेन्शन, कभी अटेन्शन का झूला तो नहीं झूलते? मधुबन से प्रालब्धी स्वरूप में जाना है। बार-बार पुरुषार्थ कहाँ तक करते रहेंगे। जो बाप वह बच्चा। बाप की मूड आफ होती है क्या? अभी तो बाप समान बनना है। मास्टर हैं ना। मास्टर तो बड़ा होना चाहिए। कम्पलेन्टस् सब खत्म हुई? वास्तव में बात होती है छोटी। लेकिन सोच-सोचकर छोटी बात को बड़ा कर देते हो। सोचने की खातिरी से वह बात छोटी से मोटी बन जाती। सोचने की खातिरी नहीं करो। यह क्यों आया, यह क्यों हुआ। पेपर आया है तो उसको करना है। पेपर क्यों आया यह क्वेश्चन होता है क्या? वेस्ट और बैस्ट सेकेण्ड मैं जज करो और सेकेण्ड में समाप्त करो। वेस्ट है तो आधाकल्प के लिए वेस्ट पेपर बाक्स में उसको डाल दो। वेस्ट पेपर बाक्स बहुत बड़ा है। जज बनो, वकील नहीं बनो। वकील छोटे केस को भी लम्बा कर देते हैं। और जज सेकेण्ड में हाँ वा ना की जजमेंट कर देता है। वकील बनते हो तो काला कोट आ जाता है। है एक सेकेण्ड की जजमेंट, यह बाप का गुण है वा नहीं। नहीं है, तो वेस्ट पेपर बाक्स में डाल दो। अगर बाप का गुण है तो तो बैस्ट के खाते में जमा करो। बापदादा का सैम्पुल तो सामने है ना। कापी करना अर्थात् फालो करना। कोई नया मार्ग नहीं बनाना है। कोई नई नालेज इन्वैन्ट नहीं करनी है। बाप जो सुनाता है वह स्वरूप बनना है। सब विदेशी 100 प्रालब्ध पा रहे हो। संगमयुगी प्रालब्ध है – ''बाप समान।''भविष्य प्रालब्ध है ''देवता पद''। तो बाप समान बन बाप के साथ-सथ उसी स्टेज पर बैठने का कुछ समय तो अनुभव करेंगे ना। कोई भी राजा तख्त पर बैठते हैं, कुछ समय तो बैठेगा ना। ऐसे तो नहीं, अभी-अभी बैठा और अभी-अभी उतरा। तो संगमयुग की प्रालब्ध है – बाप समान स्टेज अर्थात् सम्पन्न स्टेज के तख्तनशीन बनना। यह प्रालब्ध भी तो

पानी है ना। और बहुत समय पानी है। बहुत समय कें संस्कार अभी भरने हैं। सम्पन्न जीवन है। सम्पन्न की सिर्फ़ कुछ घडियाँ नहीं हैं। लेकिन जीवन है। फ़रिश्ता जीवन है, योगी जीवन है। सहज जीवन है। जीवन कुछ समय की होती है, अभी-अभी जन्मा, अभी-अभी गया। वह जीवन नहीं कहेंगे? कहते हो पा लिया, तो क्या पा लिया? सिर्फ़ उतरना चढ़ना पा लिया? मेहनत पा लिया? प्रालब्ध को पा लिया? बाप समान जीवन को पा लिया? मेहनत कब तक करेंगे? आधाकल्प अनेक प्रकार की मेहनत की। गृहस्थ व्यवहार, भक्ति, समस्यायें – कितनी मेहनत की! संगमयुग तो है मुहब्बत का युग, मेहनत का युग नहीं। मिलन का युग है। शमा और परवाने के समाने का युग है। नाम मेहनत कहते हो, लेकिन मेहनत है नहीं। बच्चा बनना मेहनत होती है क्या? वर्से में मिला है कि मेहनत में मिला है? बच्चा तो सिर का ताज होता है। घर का श्रृंगार होता है। बाप का बालक सो मालिक होता है। तो मालिक फिर नीचें क्यों आते? आपके नाम देखो कितने ऊंचे हैं! कितने श्रेष्ठ नाम हैं! तो नाम और काम एक हैं ना! सदा बाप के साथ श्रेष्ठ स्टेज पर रहो। असली स्थान तो वही है। अपना स्थान क्यों छोड़ते हो? असली स्थान को छोड़ना अर्थात् भिन्न-भिन्न बातों में भट-कना। आराम से बैठो। नशे से बैठो। अधिकार से बैठो। नीचे आकर फिर कहते हो – अब क्या करें? नीचे आते ही क्यों हो? जो भी कोई बोझ अनुभव हो, बोझ अपने सिर पर नहीं रखो। जब मैं-पन आता है तो बोझ सिर पर आ जाता है। मैं क्या करूँ, कैसे करूँ, करना पड़ता है। क्या आप करते हो ?वा सिर्फ़ नाम आपका है काम बाप का रहता है। उस दिन खिलौना देखा – वह खुद चल रहा था या कोई चला रहा था? साइन्स चला सकती है, बाप नहीं चला सकता? यह तो बाप बच्चों का नाम बाला करने के लिए निमित्त बना देते हैं। क्योंकि बाप इस नाम रूप से न्यारा है। जब बाप आपको आफ़र कर रहे हैं कि बोझ बाप को दे दो आप सिर्फ़ नाचो, उड़ो फिर बोझ क्यों उठाते हो? कैसे सर्विस होगी, कैसे भाषण करेंगे यह तो क्वेश्चन ही नहीं। सिर्फ़ निमित्त समझ कने-क्शन पावर हाउस से जोड़कर बैठ जाओ। फिर देखो भाषण होता है वा नहीं! वह खिलौना चल सकता है, आपका मुख नहीं चल सकता? आपकी बुद्धि में प्लैन नहीं चल सकते? कैसे कहने से जैसे तार के ऊपर रबड़ आ जाता है। रबड़ आ जाने के कारण कनेक्शन जुटता नहीं और प्रत्यक्षफल नहीं दिखाई देता। इसलिए थक जाते हो – पता नहीं क्या होगा! बाप ने निमित्त बनाया है तो अवश्य होगा। अगर कोई स्थान पर हैं ही 6-8 तो दूसरे स्थान से निकालो। दिलशिकस्त क्यों होते हो? चक्कर लगाओ। आस-पास जाओ, चक्कर तो बहुत बड़ा है। कहाँ से 8 निकले वह भी कम नहीं। फिर भी कोने में छिपे हुए को निकाला तो आपके कितने गुण गायेंगे। बाप के साथ निमित्त बनी हुई आत्मा को भी दिल से दुवायें तो देते हैं ना। कहाँ से एक रतन भी निकला, एक के लिए भी जाना तो पड़ेगा। ना। क्या उसको छोड़ देंगे? वह आत्मा वंचित रह जायेगी। जितने निकलें उतने निकालो। फिर आगे बढ़ो। अब तो विश्व के सिर्फ़ कोने तक पहुँचे हो। शिकार भी बहुत है, जंगल भी बहुत बड़ा है। सोचते क्यों हो? सोचने के कारण क्या होता? बुद्धि में व्यर्थ भर जाने के कारण टचिंग नहीं होती। परखने की शक्ति कार्य नहीं करती। जितना स्पष्ट होगा उतना जो जैसी चीज़ होगी, वह स्पष्ट दिखाई देगी। तो क्यों क्या के कारण निर्णय शक्ति, टचिंग पावर कार्य नहीं करती। फिर थकावट होती है या दिलशिकस्त होते हैं। जहाँ भी गये हो वहाँ कोई न कोई छिपा हुआ रतन निकला तब तो पहुँचे हो ना! ऐसा तो कोई स्थान नहीं जहाँ से एक भी न निकला हो। कहाँ वारिस निकलेंगे, कहाँ प्रजा, कहाँ साहुकार! सब चाहिए ना! सब राजा तो नहीं बनेंगे। प्रजा भी चाहिए। प्रजा बनाने का यह कार्य निमित्त बने हुए बच्चों को ही करना है। या आप रायल फैमली बनायेंगे, बाबा प्रजा बनायेंगे। दोनों ही बनाना है ना। सिर्फ़ दो बातें देखो, एक – लाइन किलियर है। दूसरा – मर्यादाओं की लकीर के अन्दर हैं। अगर दोनों बातें ठीक हैं तो कभी भी दिलशिकस्त नहीं होंगे। जिसका कनेक्शन ठीक है, चाहे बाप से चाहे निमित्त बनने वालों से, वह कभी भी असफल नहीं हो सकता। सिर्फ़ बाप से ही कनेक्शन हो वह भी करेक्ट नहीं। परिवार से भी चाहिए। क्योंकि बाप से तो शक्ति मिलेगी लेकिन सम्बन्ध में किसके आना है। सिर्फ़ बाप से? राजधानी अर्थात् परिवार से सम्पर्क में आना है। तीन सर्टीफिकेट लेने हैं। सिर्फ़ एक नहीं।

एक – बाप पसन्द अर्थात् बाप का सर्टीफिकेट। दूसरा – लोक पसन्द अर्थात् दैवी परिवार से सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट। तीसरा – मन पसन्द। अपने मन में भी सन्तुष्टता हो। अपने आप से भी मूंझा हुआ न हो – पता नहीं कर सकूंगा, चल सकूंगा? तो अपने मन पसन्द अर्थात् मन की सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट। यह तीन सर्टीफिकेट चाहिए। त्रिमूर्ति हैं ना। तो यह त्रिमूर्ति सर्टीफिकेट चाहिए। दो से भी काम नहीं चलेगा। तीनों चाहिए। कोई समझते हैं – हम अपने से सन्तुष्ट हैं, बाप भी सन्तुष्ट है। चल जायेगा। लेकिन नहीं। जब बाप सन्तुष्ट है, आप भी सन्तुष्ट हो तो परिवार सन्तुष्ट न हो, यह हो नहीं सकता। परिवार को सन्तुष्ट करने के लिए सिर्फ़ छोटी-सी एक बात है। '' रिगार्ड दो और रिगार्ड लो।'' यह रिकार्ड दिन रात चलता रहे। रिगार्ड का रिकार्ड निरन्तर चलता रहे। कोई कैसा भी हो लेकिन आप दाता बन देते जाओ। रिटर्न दे वा न दे लेकिन आप देते जाओ। इसमे निष्काम बनो। मैंने इतना दिया। उसने तो कुछ दिया नहीं। हमने सौ बार दिया, उसने एक बार भी नहीं। इसमें निष्काम बनो तो परिवार स्वत: ही सन्तुष्ट होंगे। आज नहीं तो कल। आपका देना जमा होता जायेगा, वह जमा हुआ फल ज़रूर देगा। और बाप पसन्द बनने के लिए क्या चाहिए? बाप तो बड़े भोले हैं। बाप जिसको भी देखते हैं, सब अच्छे ते अच्छे हैं। 'अच्छा नहीं' ऐसा तो कोई नज़र ही नहीं आता। एक एक

पाण्डव, एक एक शक्ति एक से एक आगे है। तो बाप पसन्द बनने के लिए –''सच्ची दिल पर साहेब राजी।''जो भी हो सच्चाई, सत्यता बाप को जीत लेती है। और मन पसन्द बनने के लिए क्या चाहिए? मनमत पर नहीं चलना। मनपसन्द औरचीज़ हैं। मन पसन्द बनने के लिए बहुत सहज साधन है – श्रीमत की लकीर के अन्दर रहो। संकल्प करो तो भी श्रीमत की लकीर के अन्दर। बोलो, कर्म करो, जो कुछ भी करो लकीर के अन्दर। तो सदा स्वयं से भी सन्तुष्ट और सर्व को भी सन्तुष्ट कर सकेंगे। संकल्प रूपी नाखून भी बाहर न हो।

बापदादा भी जानते हैं कि कितनी लगन है, कितना दृढ़ संकल्प है। सिर्फ़ बीच बीच में थोड़े से नाजुक हो जाते। जब नाजुक बनते तो नखरे बहुत करते। प्यार ही इन्हों की टिकेट है तब पहुँचते हैं। प्यार न होता तो प्यार की टिकेट बिना यहाँ कैसे पहुँच सकते? यही टिकेट मधुबन निवासी बनाती। चारों ओर सेवा के लिए निमित्त बनाती। बापदादा ने आफरीन तो दी ना? जो वायदा करके गये वह निभाया। बाकी वृद्धि होती रहेगी। स्थापना तो कर ली ना। स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति – दोनों का बैलेन्स हो तो सदा वृद्धि होती रहेगी।

यह भी एक विशेषता देखी। बहुत समय के इन्डीपैडेंट रहने वाले, अपने को संगठित रूप में चला रहे हैं। यह भी बहुत अच्छा परि-वर्त्तन है। एक एक अलग रहने वाले 4-6 इकट्ठे रहें और फिर संस्कार मिलाकर रहें – यह भी स्नेह का रिटर्न है। पाण्डव भवन, शक्ति भवन सफल रहे यह भी विशेषता है। बाप दादा इस रिटर्न को देख हर्षित होते हैं। एकनामी, एकानामी यह भी रिटर्न है ना। अपना शरीर निर्वाह और सेवा का निर्वाह दोनों में हाफ़-हाफ़कर चलाना – यह भी अच्छी इन्वेंशन निकाली है। डबल कार्य हो गया ना। कमाया और लगाया। यहाँ एक बैंक बैलेन्स नहीं बनता लेकिन भविष्य जमा होता है। बुद्धि तो फ्री है ना? आया और लगाया। बेफ़िकर बादशाह! शक्तियों और पाण्डवों दोनों की रेस है। दीपक जगाऔर जगाने चल पड़तीं। लक्ष्य बहुत अच्छा रखा है। भारत में हैन्डस निकालने की मेहनत करते और वहाँ बने बनाये हैन्डस सहज निकल आते हैं, यह भी वरदान है। पीछे आने वालों को यह लिफ्ट है। यहाँ वालों को बंधन काँटने में टाइम लगता और इन्हों को बंधन कटा कटाया है। तो लिफ्ट हो गई ना। सिर्फ़ मन का बन्धन नहीं हो।

टीचर्स ने भी मेहनत की है। टीचर बनना अर्थात् सेवा के बन्धन में बंधना। लेकिन नाम सेवा है प्राप्ति बड़ी हैं। क्योंकि पुण्य-आत्मा बनते हो ना। टीचर का अर्थ ही है महापुण्य-आत्मा बनना। पुण्य का फल तो भक्ति में भी मिलता है। और यहाँ प्रत्यक्ष फल मिलता है। जितनी सेवा करते उतना हुल्लास हिम्मत, उमंग रहता। और ज्ञान के मुख्य राज अन्दर ही अन्दर स्पष्ट होते जाते। तो सेवाधारी बनना अर्थात् प्राप्ति स्वरूप बनना। इसलिए सब फालो करते हैं कि हम भी सेवाधारी बनें।

सिर्फ़ टीचर कहते हैं तो कभी टीचर का थोड़ा सा रोब भी आ जाता है। लेकिन हम मास्टर शिक्षक हैं। मास्टर कहने से बाप स्वत: याद आता है। बनाने वाले की याद आने से स्वयं स्वत: ही निमित्त हूँ यह स्मृति में आ जाता है। विशेष स्मृति यह रखो कि हम पुण्य आत्मा है। पुण्य का खाता जमा करना और कराना। यह है विशेष सेवा। पाप का खाता रावण ने जमा कराया और पुण्य का खाता बाप निमित्त शिक्षकों के द्वारा कराते। तो पुण्य करना और कराना, पुण्य-आत्मा कभी पाप का एक परसेन्ट, संकल्प मात्र भी नहीं कर सकती। पाप का संकल्प भी आया तो पुण्य आत्मा नहीं। मास्टर शिक्षक का अर्थ ही है – पुण्य का खाता जमा करने और कराने वाले। शिक्षक का बापदादा विशेष समान फ्रैन्डस का रूप देखते। फ्रैन्डस तब बनते जब समानता होती। संस्कार मिलन होता। जो निमित्त बनते हैं उनके हर संकल्प में, बोल में, कर्म में बाप ही दिखाई दे। जो भी देखें तो उनके मुख से यही निकले कि यह तो बाप समान है। जो कहावत है – 'बड़े ते बड़े, छोटे सुभान अल्ला'। यह कहावत प्रैक्टिकल अनुभव करेंगे।

याद प्यार तो है ही। महिमा योग्य को सदा हर पल बाप द्वारा यादप्यार मिलता है। यह तो रीति रसम के कारण देना पड़ता है। याद और प्यार के सिवाए आप सब बड़े कैसे हुए? इसी याद प्यार से ही बड़े हुए हो। यादप्यार ही मुख्य पालना है। इसी पालना के आधार पर मास्टर बन गये हो।

विदेशी बच्चों ने विशेष कौन सा नया प्लैन बनाया है? (प्लैन सुनाया) सभी ने चारों ओर कान्फ्रेंस रखी है। कान्फ्रेंस के कनेक्शन से वी.आई.पीज से तो मिलना होगा ही, जाल डालने का तरीका अच्छा है। हरेक के शुद्ध संकल्प से आत्माओं को आकर्षण तो होती ही है। इसलिए चारों ओर के संकल्प और प्लैन चारों ओर नाम बाला करेंगे। जितना जल्दी विशेष आत्माओं को सम्पर्क में लायेंगे उतना ही जल्दी आवाज़ बुलन्द होगा। जब भारत में आवाज़ निकले तब समझो सेवा की समाप्ति होगी। एक तरफ आवाज़ बुलन्द होगा दूसरे तरफ हालते खराब होंगी। दोनों का मेल होगा। इसलिए सहज ही अनुभव करेंगे कि हमने क्या किया अब जल्दी जल्दी तैयारी करो। जैसे फारेन में विनाश के साधन बहुत बढ़िया बना रहे हैं ना! वैसे नाम बाला, आवाज़ बुलन्द करने के स्थापना के निमित्त भी आप अच्छे प्लैन बनाओ। अभी सन्देश मिलना रहा हुआ है। इसलिए विनाश का बुलन्द आवाज़ नहीं निकला वह भी बिचारे सोच में हैं क्या हो रहा है। स्थापना के कारण विनाश रुका हुआ है। जैसे विनाश की सामग्री सिर्फ़ बटन तक रही हुई है, इतनी तैयारी हो गई है, ऐसे स्थापना की तैयारी भी इतनी पावरफुल हो जाए। जो आवे सेकेण्ड में जो प्राप्ति चाहे वह कर ले। संकल्प का

बटन दबाना पड़े, बस। तब वह भी बटन दबेगा। तो इसकी भी तैयारी करनी पड़े। संकल्प इतने पावरफुल हों। सिर्फ़ एक बाप सदा संकल्प में हो तो सेवा भी स्वत: होती रहेगी। अभी अटेन्शन रखना पड़ता है लेकिन नैचुरल पावरफुल स्टेज बन जाए। तो ऐसे बटन तैयार हैं? टीचर्स क्या समझती हैं? अभी कानफ्रेंस करना माना शस्त्र चलाना, और वह बटन दबाना। अभी तो आपको निमंत्रण देना पड़ता, स्टेज बनानी पड़ती और फिर स्वयं आयेंगे, अभी सुनने के लिए आते हैं फिर लेने के लिए आयेंगे। कुछ दे दो, माँगनी करेंगे, जरा भी दे दो। बटन दबाते जायेंगे और स्टैम्प लगती जायेगी – प्रजा, साहूकार, पहली प्रजा, दूसरी प्रजा। तो अब यह करना पड़ेगा।

3.4.81

ज्ञान मार्ग की यादगार – भक्ति मार्ग

आज मधुबन के तट पर कौन-सा मेला है? आज अनेक नदियों और सागर का मेला है। हरेक छोटी-बड़ी ज्ञान-नदियाँ पतित-पावन बाप समान पतित-पावनी हैं। बाप अपने सेवा के साथियों को देख रहे हैं। देश से विदेश तक भी पतित पावनी नदियाँ पहुँच गई हैं। देश-विदेश की आत्मायें पावन बन कितने महिमा के गीत गाती हैं। यह मन के गीत फिर द्वापर में मुख के गीत बन जाते हैं। अभी बाप श्रेष्ठ आत्माओं के श्रेष्ठ कार्य, श्रेष्ठ जीवन की कीर्ति गाते हैं। फिर भक्ति मार्ग में कीर्त्तन हो जायेगा। अभी अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति के कारण खुशी में आत्माओं का मन नाचता है और भक्ति में फिर पाँव से नाचेंगे। अभी श्रेष्ठ आत्माओं के गुणों की माला सिमरण करते हैं वा वर्णन करते हैं फिर भक्ति मार्ग में मणकों की माला सिमरण करेंगे। अभी आप सब स्वयं बाप को भोग लगाते हो, भक्ति में इसका रिटर्न आप सबको भोग लगायेंगे। जैसे अभी आप सब सिवाए बाप को स्वीकार कराने कोई भी वस्तु स्वीकार नहीं करते, ''पहले बाप'' यह स्नेह सदा दिल में रहता है, ऐसे ही भक्ति में सिवाए आप देव आत्माओं को स्वीकार कराने के खुद स्वीकार नहीं करते हैं। पहले देवता, पीछे हम। जैसे अभी आप कहते हो पहले बाप फिर हम। तो सब कापी की है। आप याद स्वरूप बनते, वह यादगार के स्मृति स्वरूप रहते। जैसे आप सब अटूट अव्यभिचारी अर्थात् एक की याद में रहते हो, कोई भी हिला नहीं सकता, बदल नहीं सकता, ऐसे ही नौधा भक्त, सच्चे भक्त, पहले भक्त, अपने इष्ट के निश्चय में अटूट और अटल निश्चय बुद्धि होते हैं। चाहे हनुमान के भक्त को राम भी मिल जाए तो भी वह हुनमान के भक्त रहेंगे। ऐसे अटल विश्वासी होते हैं। आपका एक बल, एक भरोसा – इसको कापी की है।

आप सभी अभी रूहानी यात्रु बनते। आपकी याद की यात्रा और उन्हों की यादगार की यात्रा। आप लोग वर्त्तमान समय ज्ञान स्तम्भ, शान्ति स्तम्भ के चारों ओर शिक्षा के स्मृति स्वरूप महावाक्य के कारण चक्कर लगाते हो और सभी को लगवाते हो। आप शिक्षा के कारण चक्कर लगाते हो, एक तरफ भी छोड़ते नहीं हो। जब चारों तरफ चक्कर सम्पन्न होता तब समझते हो सब देखा, अनुभव किया। भक्तों ने आपके याद स्वरूपों का चक्कर लगाना शुरू किया। जक तक परिक्रमा नहीं लगाते तो भक्ति सम्पन्न नहीं समझते। सबका सब कर्म और गुण सूक्ष्म स्वरूप से स्थूल रूप का भक्ति में कापी किया हुआ है। इसलिए बापदादा सर्व देव आत्माओं को सदा यही शिक्षा देते कि सदा एक में अटल निश्चय बुद्धि रहो। अगर आप अभी एक की याद में एकरस नहीं रहते, एकाग्र नहीं रहते, अटल नहीं बनते तो आपके भक्त अटल निश्चय बुद्धि नहीं होंगे। यहाँ आपकी बुद्धि भटकती है और भक्त पाँव से भटकेंगे। कब किसको देवता बनायेंगे, कब किसको। आज राम के भक्त होंगे, कल कृष्ण के बन जायेंगे। ''सर्व प्राप्ति एक द्वारा'' – ऐसी स्थिति आपकी नहीं होगी तो भक्त आत्मायें भी हर प्राप्ति के लिए अलग-अलग देवता के पास भटकेंगे। आप अपनी श्रेष्ठ शान से परे हो जाते हो तो आपके भक्त भी परेशान होंगे। जैसे यहाँ आप याद द्वारा अलौकिक अनुभूतियाँ करने के बजाए अपनी कमजोरियों के कारण प्राप्ति के बजाए उल्हनें देते हो। चाहे दिलशिकस्त हो उल्हनें देते, चाहे स्नेह से उल्हनें देते, तो आपके भक्त भी उल्हनें देते रहेंगे। उल्हनें तो सब अच्छी तहर जानते हो इसलिए सुनाते नहीं हैं।

बाप कहते हैं – रहमदिल बनो, सदा रहम की भावना रखो। लेकिन रहम के बदले अहम् भाव वा वहम् भाव हो जाता है। तो भक्तों में भी ऐसा होता है। वहम् भाव अर्थात् यह करें, ऐसा होगा, नहीं होगा, ऐसे तो नहीं होगा। इसी में रहम भूल जाता है। स्वयं के प्रति भी रहम दिल और सर्व के प्रति भी रहमदिल। स्वयं के प्रति भी वहम् होता है और औरों के प्रति भी वहम् होता है। अगर वहम् की बीमारी बढ़ जाए तो कैन्सर के समान रोग हो जाता। फर्स्ट स्टेज वाला फिर भी बच सकता है लेकिन लास्ट स्टेज वाले का बचना मुश्किल है। न जिंदा रह सकता है, न मर सकता। तो यहाँ भी न पूरा अज्ञानी बन सकता न ज्ञान बन सकता। उन्हों की निशानी होगी – एक ही सलोगन रटते रहेंगे वा कहेंगे – मैं हूँ ही ऐसा, वा दूसरे के प्रति कहेंगे – यह है ही ऐसा। कितना भी बदलने की कोशिश करेंगे, कहेंगे यह है ही ऐसा। कितना भी बदलने की कोशिश करेंगे लेकिन यही रट होगी। कैन्सर वाला पेशेन्ट खाता पीता बहुत अच्छा है। बाहर का रूप अच्छा दिखाई देगा लेकिन अन्दर शक्तिहीन होगा। वहम् की बीमारी वाले बाहर से अपने को बहुत अच्छा चलायेंगे, बाहर कोई कमी नहीं रखेंगे, न कोई और रखेगा तो स्वीकार करेंगे। लेकिन अन्दर ही अन्दर आत्मा असन्तुष्ट होने के

कारण खुशी और सुख की प्राप्ति कमज़ोर होते जाते। ऐसे ही दूसरा है – अहम् भाव। रहम भाव की निशानी है – हर बोल में, हर सकंल्प में 'एक बाप दूसरा न कोई'। रहम भाव वाले को जहाँ देखो बाप ही बाप दिखाई देगा। और अहम् वाले को जहाँ जाओ, जहाँ देखो मैं ही मैं। वह मैं-मैं की माला सिमरण वाला और वह बाप की माला सिमरण वाला। मैं-पन बाप में समा गया इसको कहा जाता है – लव में लीन हो गया। वह लवलीन आत्मा और वह है मैं-मैं लीन आत्मा। अब समझा। आपको कापी करने वाले सारे कल्प में हैं। भक्ति के मास्टर भगवान हो, सतयुग त्रेता में प्रजा के लिए प्रजापिता हो। संगम पर बापदादा के नाम और कर्त्तव्य को प्रतयक्ष करने के आधारमूर्त्त हो। चाहे अपने श्रेष्ठ कर्म द्वारा, परिवर्त्तन द्वारा बाप का नाम बाला करो, चाहे व्यर्थ कर्म द्वारा, साधारण चलन द्वारा नाम बदनाम करो। है तो बच्चों के ही हाथ में।

विनाशकाल में विश्व के लिए महान कल्याणकारी, महावरदानी, महादानी, महान पुण्य आत्माओं के स्वरूप में होंगे। तो सर्व काल में कितने महान हो! हर काल में आधारमूर्त्त हो। ऐसे अपने को समझते हो? आदि में भी, मध्य में भी और अन्त में भी, तीनों ही काल का परिचय स्मृति में आया। आप एक नहीं हो, आपके पीछे अनेक कापी करनेवाले हैं। इसलिए सदा हर संकल्प में भी अटेन्शन। ऐसे तीनों कालों में महान, सदा एक बाप की स्मृति के समर्थ स्वरूप, सदा रहमदिल, हर सेकेण्ड प्राप्ति स्वरूप और प्राप्ति दाता, ऐसे बाप समान सदा सम्पन्न स्वरूप आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

टीचर्स प्रति अव्यकत बापदादा के महावाक्य– टीचर्स का वास्तविक स्वरूप है ही निरंतर सेवाधारी। यह तो अच्छी तरह से जानते हो। और सेवाधारी की विशेषता क्या होती है? सेवाधारी सफल किस बात से बनते हैं? सेवा में सदा खोया हुआ रहे, ऐसे सेवाधारी की विशेषता यह है जो मैं सेवा कर रही हूँ, मैंने सेवा की – इस सेवा-भाव का भी त्याग हो। जिसको आप लोग कहते हो त्याग का भी त्याग। मैंने सेवा की, तो सेवा सफल नहीं होती। मैंने नहीं की लेकिन मैं करनहार हूँ, करावनहार बाप है। तो बाप की महिमा आयेगी। जहाँ मैं सेवाधारी हूँ, मैंने किया मैं करूँगी, तो यह 'मैं-पन' सेवाधारी के हिसाब से भी ''मैं पन'' जो आता है वह सेवा की सफलता नहीं होने देता। क्योंकि सेवा में मैं-पन जब मिक्स हो जाता है तो स्वार्थ भरी सेवा हो जाती है, त्याग वाली नहीं। दुनिया में भी दो प्रकार के सेवाधारी होते हैं – एक स्वार्थ के हिसाब से सेवाधारी, दूसरे स्नेह के हिसाब से त्यागमूर्त्त सेवाधारी। तो कौन से सेवाधारी हो? जैसे सुनाया ना – मैं पन बाबा के लव में लीन हो गया हो, इसको कहा जाता है – 'सच्चे सेवाधारी'। मैं और तू की भाषा ही खत्म। कराने वाला बाबा,हम निमित्त हैं। कोई भी निमित्त बन जाए। मैं पन जब आता है तो मैं-पन क्या होता है? मैं मैं कौन करता है? (बकरी)। मैं मैं कहने से मोहताजी आ जाती है। जैसे बकरी की गर्दन सदा झुकी हुई रहती है और शेर की गर्दन सदा ऊपर रहती है, तो जहाँ मैं पन आ जाता है वहाँ किसी न किसी कामना के कारण झुक जाते हैं। सदा नशे में सिर ऊंचा नहीं रहता। काई न कोई विघ्न के कारण सिर बकरी के समान नीचे रहता। गृहस्थी जीवन भी बकरी समान जीवन है, क्योंकि झुकते हैं ना। निर्मानता से झुकना वह अलग चीज़ है, वह माया नहीं झुकाती है, यह तो माया बकरी बना देती है। जबरदस्ती सिर नीचे करा देती, ऑखें नीचे करा देती। सेवा में मैं-पन का मिक्स होना अर्थात् मोहताज बनना। फिर चाहे किसी व्यक्ति के मोहताज हों, पार्ट के मोहताज हों, वस्तु के हों या वायुमण्डल के हों, किसी न किसी के मोहताज बन जाते हैं। अपने संस्कारों के भी मोहताज बन जाते हैं। मोहताज अर्थात् परवश। जो मोहताज होता है वह परवश ही होता है। सेवाधारी में यह संस्कार हो ही नहीं सकते।

सेवाधारी चैलेन्ज करने वाला होता है। चैलेन्ज हमेशा सिर ऊंचा करके करेंगे, ग़लती होगी तो ऐसे नीचे झुककर बोलेंगे। सेवाधारी अर्थात् चैलेन्ज करने वाला, माया को भी और विश्व की आत्माओं को भी बाप का चैलेन्ज देने वाला। चैलेन्ज भी वह दे सकते है जिन्होंने स्वयं अपने पुराने संस्कारों को चैलेन्ज दी है। पहले अपने संस्कारों को चैलेन्ज देना है फिर जनरल विघ्न जो आते हैं उनको चैलेन्ज देना है। विघ्न कभी भी ऐसे सेवाधारी को रोक नहीं सकते। चैलेन्ज करने वाला माया के पहाड़ के रूप को सेकेण्ड में राई बना देगा। आप लोग भी ड्रामा करते हो ना – माया वाला, उसमें क्या कहते हो? पहाड़ को राई बना देंगे।

तो सच्चे सेवाधारी अर्थात् बाप समान। क्योंकि बाप पहले पहले अपने को क्या कहते? मैं वर्ल्ड सर्वेन्ट हूँ। सेवाधारी बनना अर्थात् बाप समान बनना। एक जन्म की सेवा अनेक जन्मों के ताज और तख्तधारी बना देती है। संगमयुग सेवा का युग है ना। वह भी कितना समय? संगमयुग की आयु वैसे भी छोटी है और उसमें भी हरेक को सेवा का चांस कितना थोड़ा टाइम मिलता! अच्छा, समझो किसी ने 50-60 वर्ष की सेवा की, तो 5000 वर्ष में से 60 भी कम कर दो, बाकी तो सब प्रालब्ध है। 60 वर्ष की सेवा बाकी सब मेवा। क्योंकि संगमयुग के पुरुषार्थ के अनुसार पूज्य बनेंगे। पूज्य के हिसाब से नम्बरवार पुजारी बनेंगे। पुजारी भी नम्बरवन बनते हो। फिर लास्ट जन्म भी देखो कितना अच्छा रहा। जो अच्छे पुरुषार्थी है उनका लास्ट जन्म भी इतना अच्छा रहा तो आगे क्या होगा। यह तो सुख के हिसाब से दु:ख कहा जाता है। जैसे कोई साहुकार हो और थोड़ा ग़रीब बन जाए तो कहने में तो आता है ना। कोई बड़े आदमी को थोड़ा आधा डिग्री भी बुखार हो तो कहेंगे फलाने को बुखार आ गया लेकिन अगर ग़रीब को 5 डिग्री भी ज्यादा बुखार हो जाए तो कोई पूछता भी नहीं। तो आप भी इतने दु:खी होते नहीं हो लेकिन अति सुखी के हिसाब से दु:खी कहा जाता है। लास्ट जन्म में भी भिखारी तो नहीं बने ना! दर-दर दो रोटी माँगने वाले तो नहीं बने। इसलिए कहा – पुरुषार्थ का समय

बहुत थोड़ा है और प्रारब्ध का समय बहुत बड़ा है। प्रालब्ध कितनी श्रेष्ठ है और कितने समय के लिए यह स्मृति में रहे तो क्या स्टेज हो जायेगी? श्रेष्ठ हो जायेगी ना! तो सेवाधारी बनना अर्थात् पूरे कल्प मेवे खाने के अधिकारी बनना। यह कभी नहीं सोचो कि क्या संगमयुग सारा सेवा ही करते रहेंगे? जब मेवा खायेंगे तब कहेंगे क्या कि सारा कल्प मेवा ही खाते रहेंगे। अभी तो याद है ना कि मिलेगा। एक का लख गुणा जो बनता है तो हिसाब भी होगा ना! सेवाधारी बनना अर्थात् सारे कल्प के लिए सदा सुखी बनना। कम भाग्य नहीं है। टीचर्स कहो या सेवाधारी कहो क्योंकि मेहनत का हजार गुणा फल मिलता है। और वह भी मेहनत क्या है? यहाँ भी स्टूडेन्ट के लिए तो दीदी-दादी बन जाती हो। टाइटल तो मिल जाता है ना। 10 वर्ष का स्टूडेन्ट भी दो वर्ष की आने वाली जो टीचर बनती उसको दीदी-दादी कहने लगते। यहाँ भी ऊंची स्टेज पर तो देखते हैं ना। रिगार्ड तो देते हैं ना। अगर सच्चे सेवाधारी हैं तो यहाँ भी रिगार्ड मिलने के योग्य बन जाते। अगर मिक्स है तो आज दीदी-दादी कहेंगे, कल सुना भी देंगे। सेवा मिक्स है तो रिगार्ड भी मिक्स ही मिक्स है, इसलिए सेवाधारी अर्थात् बाप समान। सेवाधारी अर्थात् बाप के कदम के ऊपर कदम रखने वाले, ज़रा भी आगे पीछे नहीं। चाहे मंसा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, चाहे सम्पर्क सबमें फुट स्टैप लेने वाले। एकदम पाँव के ऊपर पाँव रखने वाले, इसको कहा जाता है 'फुट स्टैप लेने वाले'। क्या समझते हो, ऐसा ही ग्रुप है ना? टीचर्स तो सदा सहजयोगी है ना। टीचर्स मेहनत का अनुभव करेंगे तो स्टूडेन्ट का क्या हाल होगा?

5.4.81

समर्थ कर्मों का आधार – धर्म

आज बापदादा अपने विश्व परिवर्त्तक विश्व-कल्याण कारी बच्चों को देख रहे हैं। जब से ब्राह्मण जीवन हुआ तब से इसी महान कर्त्तव्य का संकल्प किया। ब्राह्मण जीवन का मुख्य कर्म ही यह है। मानव जीवन में हरेक आत्मा की विशेष दो धारणायें हैं। एक धर्म, दूसरा – कर्म। धर्म में स्थित होना है और कर्म करना है। धर्म के बिना जीवन के कर्म में सफलता मिल नहीं सकती। धर्म अर्थात् विशेष धारणा। मैं क्या हूँ? इसी धारणा अर्थात् धर्म के आधार से मुझे क्या करना है – वह बुद्धि में स्पष्ट होता है। चाहे यथार्थ धर्म अर्थात् धारणा हो चाहे अयथार्थ हो। असमर्थ कर्म भी अयथार्थ धारणा है। अर्थात् मैं मानव हूँ, मेरा धर्म ही मानव धर्म है, जिसको देह अभिमान कहते हो। इसी धर्म के आधार पर कर्म भी उल्टे हुए। ऐसे ब्राह्मण जीवन में भी यथार्थ यह धारणा है कि – मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ। मैं आत्मा शान्त, सुख, आनंद स्वरूप हूँ। इसी आधार पर कर्म बदल गया। अगर कर्म में श्रेष्ठ के बजाए साधारण कर्म हो जाता है, उसका भी आधार इसी धर्म अर्थात् धारणा की कमी हो जाती कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, श्रेष्ठ गुणों का स्वरूप हूँ। तो फाउन्डे-शन क्या हुआ? इसी कारण धर्मात्मा शब्द कहा जाता है। आप सब धर्मात्मा हो ना। धर्मात्माओं द्वारा स्वत: ही व्यर्थ वा साधारण कर्म समाप्त हो जाते हैं। पहले यह चेक करो कि सदा धर्म में स्थित रहता हूँ। तो कर्म स्वत: ही समर्थ चलता रहेगा। यही पहला पाठ है – मैं कौन? इसी – मैं कौन के क्वेश्चन में सारा ज्ञान आ जाता है। मैं कौन, इसी प्रश्न के उत्तर निकालो तो कितनी लिस्ट बन जायेगी। अभी अभी सेकेण्ड में अगर स्मृति में लाओ तो कितने टाइटल्स याद आ जायेंगे। क्योंकि कर्म के आधार पर सबसे ज्यादा टाइटल्स वह आपके भी टाइटल्स। सबमें मास्टर हो गये ना। सारे कल्प के अन्दर टाइटल्स की लिस्ट इतनी बड़ीकिसकी भी नहीं होगी। देवताओं की भी नहीं है। सिर्फ़ अपने टाइटल्स लिखने लगो तो छोटा सा पुस्तक बन सकता है। यह इस संगम के टाइटल्स आपकी डिग्री हैं। उन्हों की डिग्री भले कितनी भी बड़ी हो लेकिन आप लोगों के आगे वह कुछ नहीं है। इतना नशा रहता है? फिर भी शब्द यही आयेगा – मैं कौन? रोज़ नया नया टाइटल स्मृति में रखो अर्थात् उसी टाइटल के धारणा स्वरूप धर्मात्मा बन कर्म करो। कर्म करते धर्म को न छोड़ो। धर्म और कर्म का मेल होना यही संगमयुग की विशेषता है।

जैसे आत्मा और परमात्मा के टूटे हुए सम्बन्ध को बाप ने जोड़ लिया, ऐसे धर्म और कर्म के सम्बन्ध को भी जोड़ लो। तब धर्मात्मा प्रत्यक्ष होंगे। आज बापदादा सर्व बच्चों का यही खेल देख रहे थे कि कौन धर्म और कर्म का मेल कर चलते हैं, एक को पकड लेते हैं, एक को छोड़ देते। जैसे कर्मयोग, तो कर्म और योग का मेल है, अगर दोनों में से एक को छोड़ दें तो ऐसे ही होगा जैसे झूला झूलने में दोनों रस्सी जरूरी होती है, अगर एक रस्सी टूट जाए वा नीचे ऊपर हो जाए, वा छोटी बड़ी हो, समान न हो तो क्या हाल होगा! ऐसे ही धर्म और कर्म दोनों के मेल से सर्व प्राप्तियों के झूले में झूलते रहेंगे। नीचे ऊपर हो जाने से प्राप्ति के झूले से अप्राप्त स्वरूप का अनुभव कर लेते हो। चलते चलते चेक करना नहीं आता इसलिए झूलने के बजाए चिल्लाने लग जाते हो कि क्या करें, कैसे करें? जैसे अज्ञानियों को कहते हो – मैं कौन हूँ यह पहली नहीं जानते हो। ऐसे अपने से पूछो – मैं कौन हूँ? यह अच्छी तरह से जाना? इसमें भी तीन स्टेजेज है। एक है जानना है दूसरा है स्वयं को मानना, तीसरा है मानकर चलना अर्थात् वह स्वरूप बनना। तो किस स्टेज तक पहुँचे हो? जानने में तो सब पास हो ना। मानने में भी सब पास हो। और तीसरा नम्बर है – मानकर चलना अर्थात् स्वरूप बनना, इसमें क्या समझते हो? जब स्वरूप बन गये तो स्वरूप कब भूल नहीं सकता। जैसे देह का स्वरूप कब भूल सकते हो क्या? भल करके देह समझना उल्टा है लेकिन स्वरूप तक आ गया तो भुलाते भी नहीं भूलते हो ना! ऐसे ही हर टाइटल

सामने रख करके देखो स्वरूप में लाया है? जैसे रोज बापदादा स्वदर्शन चक्रधारी का टाइटल स्मृति में दिलाते हैं। ऐसे चेक करो – स्वदर्शन चक्रधारी यह संगम का स्वरूप है, तो जानने तक लाया है वा मानने तक वा स्वरूप तक? सदा स्वदर्शन चलता है वा पर-दर्शन स्वदर्शन को भुला देता है। यह देह को देखना भी परदर्शन है। स्व आत्मा है, देह पर है, प्रकृति पर है। प्रकृति भाव में आना भी प्रकृति के वशीभूत होना है। यह भी परदर्शन चक्र है। जब अपनी देह को देखना भी परदर्शन हुआ तो दूसरे की देह को देखना – इसको स्वदर्शन कैसे कहेंगे? व्यर्थ संकल्प वा पुराने संस्कार यह भी देहभान के सम्बन्ध से हैं। आत्मिक स्वरूप के संस्कार जो बाप के संस्कार वह आत्मा के संस्कार। बाप के संस्कार जानते हो? वह सदा विश्व कल्याणकारी, परोपकारी रहमदिल, वरदाता है। ऐसे संस्कार नैचुरल स्वरूप में बने हैं? संस्कार बनना अर्थात् संकल्प, बोल और कर्म स्वत: ही उसी प्रमाण सहज चलना। संस्कार ऐसी चीज़ हैं जो आटोमेटिक आत्मा को अपने प्रमाण चलाते रहते। संस्कार समझो आटोमेटिक चाबी है जिसके आधार पर चलते रहते हो। जैसे खिलौने को नाचने की चाबी देते तो वह नाचता ही रहता। अगर किसको गिरने की देंगे तो गिरता ही रहेगा। ऐसे जीवन में संस्कार भी चाबी है। तो बाप के संस्कार निजी संस्कार बनाये हैं? जिसको दूसरे शब्दों में कहते हो – मेरी यह नेचर है। बाप समान नेचर हो जाए – सदा वरदानी, सदा उपकारी, सदा रहमदिल। तो मेहनत करनी पड़ेगी। जब मैं कौन हूँ को स्वरूप में लाओ, इसी धर्म को कर्म में अपनाओ तब कहेंगे स्वरूप तक लाया। नहीं तो जानने और मानने वाली लिस्ट में चले जायेंगे। सदा यह स्मृति रखो – मेरा धर्म ही यह है। इसी धर्म में सदा स्थित रहो, कुछ भी हो जाए, चाहे व्यक्ति, चाहे प्रकृति, चाहे परिस्थिति लेकिन आप लोगों का सलोगन है ''धरत परिये धर्म न छोड़िये।'' इसी सलोगन को अथवा प्रतिज्ञा को सदा स्मृति में रखो।

इस समय कल्प पहले वाले पुराने सो नये बच्चे आये हैं। पुराने ते पुराने भी हो और नये भी हो। नये बच्चे अर्थात् सबसे छोटे, छोटे सबसे लाडले होते हैं। नये पत्ते सबको सुन्दर लगते हैं ना! तो भल नये हैं लेकिन अधिकार में नम्बर वन। ऐसे सदा पुरुषार्थ करते चलो। सबसे पहला अधिकार पवित्रता का। उसके आधार पर सुख-शान्ति, सर्व अधिकार प्राप्त हो जाते। तो पहला पवित्रता का अधिकार लेने में सदा नम्बरवन रहना। तो प्राप्ति में भी नम्बरवन हो जायेंगे। पवित्रता की फाउन्डेशन को कभी कमज़ोर नहीं करना। तब ही लास्ट सो फास्ट जायेंगे। बापदादा को भी बच्चों को देख खुशी होती है कि फिर से अपना अधिकार लेने पहुँच गये हैं। इस-लिए खूब रेस करो। अभी भी टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है। सब सीट्स खाली है, फिक्स नहीं हुई हैं। जो नम्बर लेने चाहो वह ले सकते हो, इतना अटेन्शन रखते चलते चलो। अधिकारी बनते चलो। योग्यताओं को धारण कर योग्य बनते चलो।

ऐसे बाप समान सदा श्रेष्ठ धर्म और श्रेष्ठ कर्मधारी, सदा धर्म-आत्मा, सदा स्वदर्शन चक्रधारी स्वरूप, सदा सर्व प्राप्ति स्वरूप, ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

होवनहार टीचर्स कुमारियों के ग्रुप से बापदादा की मुलाकात –

यह ग्रुप होवनहार विश्व कल्याणकारी ग्रुप है ना। यही लक्ष्य रखा है ना। स्व-कल्याण कर विश्व-कल्याणकारी बनेंगे – यही दृढ़ संकल्प किया है ना? बापदादा हर निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं को देख खुश होते हैं कि यह एक-एक कुमारी अनेक आत्माओं के कल्याण के प्रति निमित्त बनने वाली है। वैसे कुमारी को 100 ब्राह्मणों से उत्तम कहते हैं लेकिन 100 भी हद हो गई। यह तो सब बेहद के विश्व कल्याणकारी हैं बेहद की हो ना? हद का संकल्प भी नहीं। फिर सभी एक दो से रेस में आगे हो वा नम्बरवार हो? क्या समझती हो? हरेक में अपनी अपनी विशेषता तो होगी लेकिन यहाँ सर्व विशेषताओं से सम्पन्न हो? जब सब विशेषताएं धारण करो तब सम्पन्न बनो। तो क्या लक्ष्य रखा है? बात बहुत छोटी है, कोई बड़ी बात नहीं है, संकल्प दृढ है तो प्राप्ति स्वत: हो जाती है। अगर सिर्फ़ संकल्प है, उसमें दृढ़ता नहीं तो भी अन्तर पड़ जाता है। कभी कहते हैं ना विचार तो है, करना तो चाहिए इसको दृढ संकल्प नहीं कहेंगे। दृढ़ संकल्प अर्थात् करना ही है, होना ही है। तो ''शब्द'' निकल जाता है। बनना तो है, नहीं। लेकिन बनना ही है। यह लक्ष्य रखो तो नम्बरवन हो जायेंगे। सहज जीवन अनुभव होती है? मुश्किल तो नहीं लगता? कालेज का वातावरण प्रभाव तो नहीं ड़ालता, आपका वातावरण उन्हों पर प्रभाव डालता है? सदा निर्विघ्न रहना। स्व को देखना अर्थात् निर्विध्न बनना। सुनाया ना – बाप के संस्कार सो अपने संस्कार, फिर जैसे निमित्त मात्र कर रहे हैं लेकिन करावनहार बाप है। करन-करावनहार जो गाया जाता है वह इस समय का ही प्रैक्टिकल अनुभव है। अच्छा एगजाम्पुल बनी हो। सदा सपूत बन सबूत देते रहना। सपूत उसको ही कहा जाता है जो सबूत दे। कभी आपस में खिट-खिट तो नहीं होती है? नालेजफुल हो जाने से एक दो के संस्कार को भी जानकर संस्कार परिवर्त्तन की लगन में रहते हैं। यह नहीं सोचते कि यह तो ऐसे हैं ही लेकिन यह ऐसे से ऐसा कैसे बने, यह सोचेंगे। रहमदिल बनेंगे। घृणा दृष्टि नहीं रहम की दृष्टि – क्योंकि नालेजफुल हो गये ना! सहज जीवन और श्रेष्ठ प्राप्ति, इस जैसा भाग्य और कब मिल सकता है? अच्छे सर्विसएबुल हैन्डस हैं, ऐसे ही हैन्डस निकलते जाएं तो बहुत अच्छा। हिम्मते बच्चे मददे बाप। शक्तियाँ तो हैं ही विजयी। शक्ति की विजय न हो यह हो नहीं सकता।

''सर्व ब्राह्मण बच्चों प्रति इस वर्ष के लिए अव्यक्त बापदादा का विशेष इशारा''

इस वर्ष हरेक बच्चे को यह विशेष अटेन्शन देना है कि हमें तीनों ही सर्टीफिकेट (मनपसंद, लोकपसंद और बाप पसंद) लेने हैं। मन पसंद का सर्टीफिकेट है या नहीं उसकी परख बापदादा के कमरे में जाकर कर सकते हो, क्योंकि उस समय बाप बन जाता है दर्पण और उस दर्पण में जो कुछ होता है वह स्पष्ट दिखाई देता है। अगर उस समय बाप के आगे अपना मन सर्टीफिकेट देता है कि मैं ठीक हूँ तो समझो ठीक, अगर उस समय मन में चलता – यह ठीक नहीं है, तो अपने को परिवर्त्तन कर देना चाहिए। अगर मानो मैजारिटी किसी बात के प्रति कोई इशारा देते हैं लेकिन स्वयं नहीं समझते कि मैं रॉंग हूँ, फिर भी जब लोक-संग्रह के प्रति ऊपर से डायरेक्शन मिले कि यह अटेन्शन रखना चाहिए तो फिर उस समय अपनी नहीं चलानी चाहिए। क्योंकि अगर सत्यता की शक्ति है तो सत्य को कहा ही जाता है – '' सत्यता महानता है।'' और महान वही है जो स्वयं झुकता है। अगर मानो कल्याण के प्रति झुकना भी पड़ता है तो वह झुकना नहीं है, लेकिन महानता है। अनेकों की सेवा के अर्थ महान को झुकना ही पड़ता है। तो यह विशेष अटेन्शन रखो। इसी में ही अलबेलापन आ जाता है। मैं ठीक हूँ, ठीक तो हो लेकिन जो ठीक रह सकता है वह स्वयं को मोल्ड भी कर सकता है। अगर मानो दूसरे को मेरी कोई चलन से कोई भी संकल्प उत्पन्न होता है तो स्वयं को मोल्ड करने में नुकसान ही क्या है? फिर भी सबकी आशीर्वाद तो मिल जायेगी। यह आशीर्वाद भी तो फायदा हुआ ना। क्यों-क्या में नहीं जाओ। यह क्यों, यह ऐसे होगा वैसे होगा। इसको फुलस्टाप लगाओ। अब यह विशेषता चारों ओर लाइट हाउस के मुआफिक फैलाओ। इसको कहा जाता है – एक ने कहा, दूसरे ने माना अर्थात् अनेकों को सुख देने के निमित्त। इसमें यह नहीं सोचो कि मैं कोई नीचे हो गया। नहीं। ग़लती की तभी मैं परिवर्त्तन कर रहा हूँ, यह नहीं सोचो लेकिन सेवा के लिए परिवर्त्तन कर रहा ह। सेवा के लिए स्थूल में भी कुछ मेहनत करनी पड़ती है ना! तो श्रेष्ठ, महान आत्मा बनने के लिए थोड़ा बहुत परिवर्त्तन भी क्या तो हर्जा ही क्या है? इसमें हे! अर्जुन, बनो। इससे वातावरण बनेगा। एक से दो, दो से तीन अगर कोई ग़लती है और मान ली तो यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन ग़लती नहीं है और लोक-संग्रह अर्थ करना पड़ता है। यह है महानता। इसमें अगर कोई समझता भी है कि इसने यह किया अर्थात् नीचे हो गया, तो दूसरों के समझने से कुछ नहीं होता, बाप की लिस्ट में तो आगे नम्बर है ना। इसको दबाना नहीं कहा जाता है। यह भी ब्राह्मणों की भाषा होती है ना – कहाँ तक दबेंगे, कहाँ तक मरेंगे, कब तक सहन करेंगे, अगर यहाँ दबेंगे भी तो अनेक आप के पाँव दबायेंगे। यह दबाना नहीं है लेकिन अनेकों के लिए पूज्य बनना है। महान बनना है।

2. इस वर्ष ऐसा कोई नया प्लैन बनाओ जैसे मोहजीत परिवार की कहानी सुनाते हैं कि जिस भी सम्बन्धी के पास गया उसको ज्ञान सुनाया, तो यहाँ भी आप बच्चों से जब भी कोई मिलने आये तो उसको यही अनुभव हो कि मैं कोई फ़रिश्ते से मिल रहा हूँ। आने से ही उसे जादू लग जाए। जहाँ जाए, जिससे मिले उससे जादू का ही अनुभव करे। जैसे शुरू-शुरू में बाप को देखा, मुरली सुनी, परिवार को देखा तो मस्त हो जाता था, ऐसे अभी भी जो सोचकर आवे, उससे पदमगुणा अनुभव करके जाए। ऐसा अब प्लैन बनाओ। दृढ़ संकल्प से सब कुछ हो सकता है। अगर एक ऐसा अनुभव करायेगा तो सब उसको फालो करेंगे।

3. इस वर्ष विशेष सहनशीलता का गुण हरेक को धारण करना है – संगठन में अगर कोई एक के लिए कुछ बोलता भी है तो दूसरा चुप रहे तो बोलने वाला कब तक बोलेगा? आख़िर तो चुप ही हो जायेगा। सिर्फ़ उसमें 10 बारी सुनने की हिम्मत चाहिए। दूसरे को बदलने के लिए थोड़ा तो सहन करना पड़ेगा। इसमें सहनशक्ति बहुत चाहिए। दो बारी में ही दिलशिकस्त नहीं हो जाओ। 10-12 बार तो सुनकर सहन करो। बाप ने भी कितने बच्चों के संस्कारों को बदला। ब्रह्मा, जो इतनी बड़ी फर्स्ट अथार्टी है उसने भी छोटे-छोटे बच्चों से सुना, अज्ञानियों से भी सुना, इनसल्ट सहन की ना! ब्रह्मा बाप की भी इनसल्ट करते थे, तो आप कौन हो! जब बाप ने सब कुछ सहन कर परिवर्त्तन किया तो फालो फादर। सिर्फ़ हिम्मत की बात है, सब सहज हो जायेगा। सिर्फ़ थोड़ा पहले लगता है – कैसे होगा, कहाँ तक सहन करेंगे? हिम्मत न हारो तो अभी-अभी हो जाए। जब भविष्य पर छोड़ते हो कि कहाँ तक होगा… तभी संकल्प कमज़ोर होते है। कहाँ तक होगा यह नहीं सोचों, संकल्प में दृढ़ता लाओ। भविष्य पर छोड़ने से वर्त्तमान कम-ज़ोर हो जाता है।

गुजरात पार्टियों से बापदादा की मुलाकात – जैसे साकार में आना और जाना सहज हो गया है, अभी-अभी आये, अभी- अभी गये, तो जैसे साकार में सहज प्रैक्टिस हो गई है आने-जाने की, वैसे आत्मा को अपनी कर्मातीत अवस्था में रहने की भी प्रैक्टिस है? अभी-अभी कर्मयोगी बन कर्म में आना, कर्म समाप्त हुआ फिर कर्मातीत अवस्था में रहना, इसका भी अनुभव सहज होता है? जैसे लक्ष्य रखते हो मधुबन जाना है, फिर तैयारी कर पहुँच जाते वैसे यह भी सदा लक्ष्य रहे कि कर्मातीत अवस्था में रहना है, निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बने फिर कर्मातीत। कर्मातीत – इसके लिए तैयारी कौन-सी करनी है? डबल लाइट बनो। तो डबल लाइट बनना आता है ना। ट्रस्टी समझाना अर्थात् लाइट बनना। दूसरा – आत्मा समझना अर्थात् लाइट होना। तो यह तैयारी करने तो आती है ना। यही अटेन्शन रखने से फिर सेकेण्ड में कर्मातीत, सेकेण्ड में कर्मयोगी। जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है। वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाए। यही तो अभ्यास है ना। जो सदा याद और सेवा में रहने वाले हैं उन्हों को प्रत्य-क्षफल सहज प्राप्त होता है। सोचेंगे भी नहीं कि ऐसा हो सकता है! लेकिन सहज अनुभव होते रहेंगे। चलते-चलते ऐसे अनुभव

करेंगे जैसे भक्ति मार्ग में कहावत है, ''भगवान छप्पर फाड़कर देते हैं।'' तो यहाँ भी मेहनत का छप्पर फाड़कर सहज अनुभूति होगी। जब सर्वशक्तिवान के बच्चे बन गये तो मेहनत रही क्या? सभी सहजयोगी हो ना।

विदेशी बच्चों से – अभी सभी जा रहे हो फिर से एक से अनेक होकर आने के लिए। इसीलिए जा रहे हो ना? इतनी आत्माओं को सन्देश देना है तो ज़रूर इतनी तीव्रगति से पुरुषार्थ करेंगे तब तो सफल होंगे ना। अभी हरेक को सेवा के तीव्रगति का प्लैन बनाना पड़े। सदा यही समझो – जैसे शान्ति की चिड़िया दिखाते हैं ना, ऐसे हम भी शान्ति के सन्देशी बनकर जा रहे हैं। जहाँ भी जाओ वहाँ शान्ति की लहर फैला दो। क्योंकि विदेश में शान्ति की खोज वाले बहुत हैं। तो ऐसे के लिए आप शान्ति दाता के बच्चे शान्ति का सन्देश देने वाले हो। जब सबको शान्ति का सन्देश मिले तब आपको शान्ति की देवी वा शान्ति का देवता मानेंगे। तो ऐसे बनकर जा रहे हो ना? चारों ओर जब इतने शान्ति की देवी और देवतायें फैल जायेंगे तो क्या हो जायेगा? शान्ति दाता बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा जायेगा। जर्मनी वाले भी कोई नया झण्डा लहरायेंगे जो सबकी नज़र जर्मनी की तरफ जायेगी।

मुरली का सार :–

1. धर्म अर्थात् विशेष धारणा। धर्म में स्थित होना है और कर्म करना है। धर्म के बिना कर्म में सफलता नहीं मिल सकती।
2. धर्म और कर्म के सम्बन्ध को जोड़ लो तब धर्मात्मा प्रत्यक्ष होंगे। धर्म और कर्म दोनों के मेल से सर्व प्राप्तियों के झूले में झूलते रहेंगे।
3. ''धरत पड़िये धर्म न छोड़िये'' कुछ भी हो जाए, धर्म में सदा स्थित रहो।

7.4.81

मनन शक्ति द्वारा सर्वशक्तियों के स्वरूप की अनुभूति

आज बापदादा अपने सर्व कल्प पहले वाले सिकीलधे बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। जैसे बाप अति स्नेह से बच्चों को सदा याद करते हैं वैसे ही बच्चे भी सदा बाप को याद करने वा बाप की श्रेष्ठ मत पर चलने में दिन-रात लगे हुए हैं। बापदादा बच्चों की लगन, बच्चों की दिल वा जान, सिक व प्रेम से सदा सेवा में लगन देख सदा ऐसे बच्चों को आफरीन देते हैं। बच्चों का भाग्य के पीछे त्याग देख बापदादा सदा त्याग पर मुबारक देते हैं। सर्व बच्चों का एक ही संकल्प – बाप को प्रत्यक्ष करने वा स्वयं को सम्पन्न बनाने का – यह भी देख बापदादा खुश होते हैं। क्या थे और क्या बन गये – इस अन्तर को सदा स्मृति में रखते हुए सभी इसी ईश्वरीय नशे में रहते हैं। इसको देख बापदादा भी फखुर से कहते हैं – ''वाह संगमयुगी बच्चे, वाह!'' इतने तकदीरवान जो अब लास्ट जन्म तक भी आपके तकदीर की तस्वीर मस्तक में महिमा द्वारा, मुख में गीतों द्वारा और हाथों से चित्र द्वारा, नयनों में स्नेह द्वारा तकदीर की तस्वीर खींचते रहते हैं। अब तक भी आप श्रेष्ठ आत्माओं के शुभ घड़ी को याद कर रहे हैं कि फिर से कब आयेंगे आह्वान की धूम मचाये हुए हैं। ऐसे तुम तकदीरवान हो जो स्वयं बाप भी आपके तकदीर के गुण गाते हैं। अन्तिम भक्त तो आपके चरणों को भी पूजते रहते हैं। सिर्फ़ आपसे क्या माँगतें है कि अपने चरणों में ले लो। इतनी महान आत्मायें हो, इसलिए बाप-दादा भी देख हर्षित होते हैं। सदा अपना ऐसा श्रेष्ठ स्वरूप , श्रेष्ठ तकदीर की तस्वीर स्मृति में रखो। इससे क्या होगा समर्थ स्मृति द्वारा, सम्पन्न चित्र द्वारा चरित्र भी सदा श्रेष्ठ ही होंगे। कहा जाता है – 'जैसा चित्र वैसा चरित्र'। जैसी स्मृति वैसी स्थिति। तो सदा समर्थ स्मृति रखो तो स्थिति स्वत: ही समर्थ हो जायेगी। सदा अपना सम्पूर्ण चित्र सामने रखो जिसमें सर्वगुण, सर्व शक्तियाँ सब समाई हुई हैं। ऐसा चित्र रखने से स्वत: ही चरित्र श्रेष्ठ होगा। मेहनत करने की ज़रूरत ही नहीं होगी। मेहनत तक करनी पड़ती है जब मनन शक्ति की कमी होती है। सारा दिन यही मनन करते रहो, अपना श्रेष्ठ चित्र सदा सामने रखो तो मनन शक्ति से मेहनत समाप्त हो जायेगी। सुना भी बहुत है, वर्णन भी बहुत करते हो फिर भी चलते-चलते कभी-कभी अपने को निर्बल क्यों अनुभव करते हो, मेहनत अनुभव क्यों करते हो? मुश्किल है – यह संकल्प क्यों आता है? इसका कारण? सुनने बाद मनन नहीं करते। जैसे शरीर की शक्ति आवश्यक है, वैसे आत्मा को शक्तिशाली बनाने के लिए 'मनन शक्ति' इतनी ही आवश्यक है। मनन शक्ति से बाप द्वारा सुना हुआ ज्ञान स्व का अनुभव बन जाता है। जैसे पाचन शक्ति द्वारा भोजन शरीर की शक्ति, खून के रूप में समा जाता है। भोजन की शक्ति अपने शरीर की शक्ति बन जाती है। अलग नहीं रहती। ऐसे ज्ञान की हर पाइंट मनन शक्ति द्वारा स्व की शक्ति बन जाती है। जैसे आत्मा की पहली पाइंट सुनने के बाद मनन शक्ति द्वारा स्मृति स्वरूप बन जाने कारण, स्मृति समर्थ बना देती है – ''मैं हूँ ही मालिक''। यह अनुभव समर्थ स्वरूप बना देता है। लेकिन केसे बना? मनन शक्ति के आधार पर। तो आत्मा की पहली पाइंट अनुभव स्वरूप हो गई ना। इसी प्रकार ड्रामा की पाइंट – सिर्फ़ ड्रामा है, यह कहने वा सुनने मात्र नहीं लेकिन चलते-फिरते अपने को हीरो एक्टर अनुभव करते हो तो मनन शक्ति द्वारा अनुभव स्वरूप हो जाना यही विशेष आत्मिक शक्ति है। सबसे बड़े ते बड़ी शक्ति अनुभव-स्वरूप है।

अनुभवी सदा अनुभव की अथार्टी से चलते, अनुभवी कभी धोखा नहीं खा सकते। अनुभवी किसी के डगमग करने से, सुनी सुनाई

से विचलित नहीं हो सकते। अनुभवी का बोल हजार शब्दों से भी ज्यादा मूल्यवान होता है। अनुभवी सदा अपने अनुभवों के खजानों से सम्पन्न रहते हैं। ऐसे मनन शक्ति द्वारा हर पाइंट के अनुभवी सदा शक्तिशाली, मायाप्रूफ, विघ्न प्रूफ, सदा अंगद के समान हिलाने वाला, न कि हिलने वाला होता। तो समझा अभी क्या करना है?

जैसे शरीर की सर्व बीमारियों का कारण कोई न कोई विटामिन की कमी होती है तो आत्मा की कमजोरी का कारण भी मनन शक्ति द्वारा हर पाइंट के अनुभव की विटामिन की कमी है। जैसे उसमें भी वैरायटी ए.बी.सी. विटामिन हैं ना। तो यहाँ भी किसी न किसी अनुभव के विटामिन की कमी है, कुछ भी समझ लो। ए आत्मा की विटामिन, विटामिन बी बाप की। विटामिन सी ड्रामा की, क्रियेशन वा सर्किल कहो। ऐसे कुछ भी बना लो। इसमें तो होशियार हो। तो चेक करो कौन से विटामिन की कमी है। आत्मा की अनुभूति की कमी है, परमात्म सम्बन्ध की कमी है, ड्रामा के गुह्यता के अनुभूति की कमी है। सम्पर्क में आने के विशेषताओं की अनुभूति की कमी है। सर्व शक्तियों के स्वरूप के अनुभूति की कमी है। और वही कमी मनन शक्ति द्वारा भरो। श्रोता स्वरूप वा भाषण करता स्वरूप — सिर्फ़ यहाँ तक आत्मा शक्तिशाली नहीं बन सकेगी। ज्ञान स्वरूप अर्थात् अनुभव स्वरूप। अनुभवों को बढ़ाओ और उसका आधार है मनन शक्ति। मनन वाला स्वत: ही मगन रहता है। मगन अवस्था में योग लगाना नहीं पड़ता लेकिन निरंतर लगा हुआ ही अनुभव करता। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। मगन अर्थात् मुहब्बत के सागर में समाया हुआ। ऐसे समाया हुआ जो कोई अलग कर ही नहीं सकता। तो मेहनत से भी छूटो। बाहरमुखता को छोड़ो तो मेहनत से छूटो। और अनुभवों के अन्तर्मुखता स्वरूप में सदा समा जाओ। अनुभवों का भी सागर है। एक दो अनुभव नहीं अथाह हैं। एक दो अनुभव कर लिया तो अनुभव के तालाब में नहीं नहाओ। सागर के बच्चे अनुभवों के सागर में समा जाओ। तालाब के बच्चे तो नहीं हो ना! यह धर्मपितायें, महान आत्मायें कहलाने वाले, यह हैं तालाब। तालाब से तो निकल आये ना। अनेक तालाबों का पानी पी लिया। अब तो एक सागर में समा गये ना।

ऐसे सदा समर्थ आत्माओं को, सदा सर्व अनुभवों के सागर में समाई हुई आत्माओं को, सदा अपना सम्पूर्ण चित्र और श्रेष्ठ चरित्रवान आत्माओं को, सदा श्रेष्ठ भाग्यवान आत्माओं को , सदा अन्तर्मुखी , सर्व को सुखी बनाने वाली आत्माओं को, ऐसे डबल हीरो आत्माओं को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते।

पार्टियों से – सदा स्वयं बाप के समीप रत्न समझते हो? समीप रत्न की निशानी क्या होगी? समीप अर्थात् समान। समीप अर्थात् संग में रहने वाले। संग में रहने से क्या होता है? वह रंग लग जाता है ना। जो सदा बाप के समीप अर्थात् संग में रहने वाले हैं उनको बाप का रंग लगेगा तो बाप समान बन जायेंगे। समीप अर्थात् समान ऐसे अनुभव करते हो? हर गुण को सामने रखते हुए चेक करो कि क्या-क्या बाप समान है। हर शक्ति को सामने रख चेक करो कि किस शक्ति में समान बने हैं। आपका टाइटल ही है – मास्टर सर्वगुण सम्पन्न, मास्टर सर्व शक्तिवान। तो सदा यह टाइटल याद रहता है? सर्वशक्तियाँ आ गई अर्थात् विजयी हो गये, फिर कभी भी हार हो नहीं सकती। जो बाप के गले का हार बन गये उनकी कभी भी हार नहीं हो सकती। तो सदा यह स्मृति में रखो कि मैं बाप के गले का हार हूँ, इससे माया से हार खाना समाप्त हो जायेगा। हार खिलाने वाले होंगे,खाने वाले नहीं। ऐसा नशा रहता है? हनु-मान को महावीर कहते हैं ना! महावीर ने क्या किया? लंका को जला दिया। खुद नहीं जला, पूँछ द्वारा लंका जलाई। तो लंका को जलाने वाले महावीर हो ना! माया अधिकार समझकर आये लेकिन आप उसके अधिकार को खत्म कर अधीन बना दो। हनुमान की विशेषता दिखाते हैं कि वह सदा सेवाधारी था। अपने को सेवक समझता था। तो यहाँ जो सदा सेवाधारी हैं वही माया के अधि-कार को खत्म कर सकते हैं। जो सेवाधारी नहीं वह माया के राज्य को जला नहीं सकते। हनुमान के दिल में सदा राम बसता था ना। एक राम दूसरा न कोई। तो बाप के सिवाए और कोई भी दिल में न हो। अपने देह की स्मृति भी दिल में नहीं। सुनाया ना कि देह भी पर है, जब देह ही पर हो गई तो दूसरा दिल में कैसे आ सकता?

प्रवृत्ति में रहते भी अपने को ट्रस्टी समझो, ग्रहस्थी नहीं। गृहस्थी समझने से अगला पिछला बोझ सिर पर आ जाता। ट्रस्टी अर्थात् डबल लाइट। जब आत्मिक स्वरूप है तो ट्रस्टी, देह की स्मृति है तो ग्रहस्थी। गृहस्थी माना मोहमाया के जाल में फँसा हुआ, ट्रस्टी माना सदा हल्का बन खुशी में उड़ने वाला। ट्रस्टी अर्थात् माया का जाल खत्म।

11.4.81

सत्यता की शक्ति से विश्व परिवर्त्तन

आज की यह सभा कौन सी सभा है? यह है विधि-विधाताओं की सभा। सिद्धि-दाताओं की सभा। अपने को ऐसे विधि-विधाता वा सिद्धि दाता समझते हो? इस सभा की विशेषाताओं को जानते हो? विधि-विधाताओं की विशेष शक्ति है जिस द्वारा सेकेण्ड में सर्व को विधि द्वारा सिद्धि स्वरूप बना सकते। उसको जानते हो? वह है – ''सत्यता अर्थात् रियल्टी''। सत्यता ही महानता है। सत्यता की ही मान्यता है। वह सत्यता अर्थात् महानता स्पष्ट रूप से जानते हो? विशेष विधि ही सत्यता के आधार पर है। पहला फाउन्डे-

शन अपनी नालेज अर्थात् अपने स्वरूप में स्त्यता देखो। सत्य स्वरूप क्या है और मानते क्या थे? तो पहला सत्य हुआ आत्मा स्वरूप का। जब तक यह सत्य नहीं जाना तो महानता थी? महान थे वा महान के पुजारी थे? जब अपने आपको जाना तो क्या बन गये? महान आत्मा बन गये। सत्यता की अथार्टी से औरों को भी कहते हो – हम आत्मा हैं। इसी प्रकार से सत्य बाप का सत्य परिचय मिलने से अथार्टी से कहते हो – परमात्मा हमारा बाप है। वर्से के अधिकार की शक्ति से कहते हो बाप हमारा और हम बाप के। ऐसे अपनी रचना के वा सृष्टि चक्र के सत्य परिचय को अथार्टी से सुनते हो – अब यह सृष्टि चक्र समाप्त हो फिर से रिपीट होना है। अब संगम का युग है, न कि कलियुग। चाहे सारी विश्व के विद्वान पण्डित और अनक आत्मायें शास्त्रों के प्रमाण कलियुग ही मानत लेकिन आप 5 पाण्डव अर्थात् कोटों मे कोई थोड़ी सी आत्मायें चैलेन्ज करते हो कि अभी कलियुग नहीं, संगमयुग है, यह किस अथार्टी से? सत्यता की महानता के कारण। विश्व में मैसेज देते हो कि आओ और आकर समझो। सोये हुए कुम्भकरणों को जगाकर कहते हो – समय आ गया। यही सत् बाप, सत् शिक्षक, सत् गुरु द्वारा सत्यता की शक्ति मिली है। अनुभव करते हो – यही सत्यता है।

सत् के दो अर्थ है। एक सत् अर्थात् सत्य दूसरा सत् अर्थात् अविनाशी। तो बाप सत्य भी है और अविनाशी भी है इसलिए बाप द्वारा जो परिचय मिला वह सब सत् अर्थात् सत्य और अविनाशी है। भक्त लोग भी बाप की महिमा गाते हैं – ''सत्यम् शिवम् सुन्द-रम्''। सत्यम् भी मानते और अविनाशी भी मानते। गाड इज ट्रुथ भी मानते। तो बाप द्वारा सत्यता की अथार्टी प्राप्त हो गई है। यह भी वर्सा मिला है ना! सत्यता की अथार्टी प्राप्त हो गई है। यह भी वर्सा मिला हैना। सत्यता की अथार्टी वाले का गायन भी सुना है, उसकी निशानी क्या होगी? सिन्धी में कहावत है – ''सच ते बिठो नच''। और भी कहावत है – ''सत्य की नाव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती''। आपको भी हिलाने की कोशिश तो बहुत करते हैं ना! यह झूठ है, कल्पना है। लेकिन सच तो बिठो नच। आप सत्यता की महानता के नशे में सदा खुशी के झूल में झूलते रहते। खुशी में नाचते रहते हो ना। जितना वह हिलाने की कोशिश करते उतना ही क्या होता? आपके झूले को हिलाने से और ही ज्यादा झूलते हो। आपको नहीं हिलाते लेकिन झूले को हिलाते। और ही उसको धन्यवाद दो कि हम बाप के साथ झूलें, आप झुलाओ। यह हिलाना नहीं लेकिन झुलाना है। ऐसे अनुभव करते हो। हिलते नहीं हो लेकिन झूलते हो ना! सत्यता की शक्ति सारी प्रकृति को ही सतोप्रधान बना देती है। युग को सतयुगी बना देती है। सर्व आत्माओं के सद्गति की तकदीर बना देती है। हर आत्मा आपके सत्यता की शक्ति द्वारा अपने-अपने यथा शक्ति अपने धर्म में, अपने समय पर गति के बाद सद्गति में ही अवतरित होंगे। क्योंकि विधि-विधाताओं द्वारा संगमयुग पर अन्त तक भी बाप को याद करने की विधि का सन्देश ज़रूर मिलना है। फिर किसको वाणी द्वारा, किसको चित्रों द्वारा, किसको समाचारों द्वारा, किसको आप सबके पावरफुल वायब्रेशन द्वारा, किसको अन्तिम विनाश लीला की हलचल द्वारा, वैराग वृत्ति के वायुमण्डल द्वारा। यह सब साइन्स के साधन आपके इस सन्देश देने के कार्य में सहयोगी होंगे।

संगम पर ही प्रकृति सहयोगी बनने का अपना पार्ट आरम्भ कर देगी। सब तरफ से प्रकृति-पति का और मास्टर प्रकृतिपति का आयजान करेगी। सब तरफ से आफरीन और आफर होगी। फिर क्या करेंगे? यह जो भक्ति में गायन है, हर प्रकृति के तत्व को देवता के रूप में दिखाया है। देवता अर्थात् देने वाला। तो अन्त में यह सब प्रकृति के तत्व आप सबको सहयोग देने वाले दाता बन जायेंगे। यह सागर भी आपको सहयोग देंगे। चारों ओर की सामग्री भारत की धरनी पर लाने में सहयोगी होंगे। इसलिए कहते हैं सागर ने रतनों की थालियाँ दी। ऐसे ही धरनी की हलचल सारी वैल्युबल वस्तु आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए एक स्थान भारत में इकट्ठी कर देने में सहयोगी होगी। इन्द्र देवता कहते हैं ना! तो बरसात भी धरनी की सफाई के सहयोग में हाजिर हो जायेगी। इतना सारा किचड़ा आप तो नहीं साफ करेंगे। यह सारा प्रकृति का सहयोग मिलेगा। कुछ वायु उड़ायेगी, कुछ बरसात साथ ले जायेगी। अग्नि को तो जानते ही हो। तो अन्त में यह सब तत्व आप श्रेष्ठ आत्माओं को सहयोग देने वाले देवता बनेंगे। और सर्व आत्मायें अनुभव करेंगी। फिर भक्ति में जो अब सहयोग देने के कर्त्तव्य के कारण देवता बने उस कर्त्तव्य का अर्थ भूल, देवताओं का मनुष्य रूप दे देते हैं। जैसे सूर्य है तत्व लेकिन मनुष्य रूप दे दिया है। तो समझा विधि-विधाता बन क्या कार्य करना है।

उन्हों की है विधान सभा और यह है विधि-विधाताओं की सभा। वहाँ सभा के मेम्बर होते हैं। यहाँ अधिकारी महान आत्मायें होती हैं। तो समझा सत्यता की महानता कितनी है! सत्यता पारस के समान है। जैसे पारस लोहे को भी पारस बना देता है। आपके सत्यता की शक्ति आत्मा को, प्रकृति को, समय को, सर्व सामग्री को, सबको सतोप्रधान बना देती है। तमोगुण का नाम निशान समाप्त कर देती है। सत्यता की शक्ति आपके नाम को, रूप को सत् अर्थात् अविनाशी बना देती है। आधाकल्प चैतन्य रूप, आधा कल्प चित्र रूप। आधा कल्प प्रजा आपको नाम गायेगी, आधा कल्प भक्त आपका नाम गायेंगे। आपका बोल सत् वचन के रूप में गाया जाता है। आज तक भी एक-आधा वचन लेने से अपने को महान अनुभव करते। आपकी सत्यता की शक्ति से आपका देश भी अवि-नाशी बन जाता है। वेष भी अविनाशी बन जाता है। आधाकल्प देवताई वेष में रहेंगे, आधाकल्प देवताई वेष का यादगार चलेगा। अब अन्त तक भी भक्त लोग आपके चित्रों को भी ड्रेस से सजाते रहते हैं। कर्त्तव्य और चरित्र – यह सब सत् हो गये। कर्त्तव्य का

यादगार भागवत बना दिया है। चरित्रों की अनेक कहानियाँ बना दी हैं। यह सब सत्य हो गये। किस कारण? सत्यता की शक्ति कारण। आपकी दिनचर्या भी सत् हो गई है। भोजन खाना, अमृत पीना सब सत् हो गया है। आपके चित्रों को भी उठाते हैं, बिठाते हैं, परिक्रमा लगवाते हैं, भोग लगाते हैं, अमृत रखते और पीते हैं। हर कर्त्तव्य वा हर कर्म का यादगार बन गया है। इतनी शक्ति को जानते हो? इतनी अथार्टी से सबको चैलेन्ज करते हो वा सेवा करते हो? नये-नये आये हैं ना! ऐसे तो नहीं समझते हम थोड़े हैं, लेकिन आलमाइटी अथार्टी आपका साथी है। सत्यता की शक्ति वाले हो। पाँच नहीं हो लेकिन विश्व का रचयिता आपका साथी है। इसी फलक से बोलो। मानेंगे, नहीं मानेंगे, कहें, कैसे कहें। यह संकल्प तो नहीं आते जहाँ सत्यता है, सत् बाप है वहाँ सदा विजय है। निश्चय के आधार पर अनुभवी मूर्त्त बन बोलो तो सफलता सदा आपके साथ है।

आप सब आये हैं तो बापदादा भी आये हैं, आपको भी आना पड़ता तो बापदादा को भी आना पड़ता। बाप को भी परकाया में बैठना पड़ता है ना! आपको ट्रेन में बैठना पड़ता, बाप को परकाया में बैठना पड़ता। तकलीफ मालूम पड़ती है क्या? अभी तो आपके पोत्रे-धोत्रे सभी आने वाले हैं। भक्त भी आने वाले हैं, फिर क्या करेंगे? भक्त तो आपको बैठने ही नहीं देंगे। अभी तो फिर भी आराम से बैठे हो, फिर आराम देना पड़ेगा। फिर भी तीन पैर पृथ्वी तो मिली है ना। भक्त तो खड़े-खडे तपस्या करते हैं। आपके चित्रों को देखने लिए भक्त क्यू लगाते। तो आप भी अनुभव तो करो। सीजन का फल खाने आये हो ना! नये-नये बच्चों को बाप-दादा विशेष स्नेह दे रहे हैं। क्योंकि बापदादा जानते हैं कि यह लास्ट वाले भी फास्ट जायेंगे। सदा लगन द्वारा विघ्न विनाशक बन विजयी रतन बनेंगे। जैसे लौकिक रूप में भी बड़ों से छोटे दौड़ लगाने में होशियार होते हैं। तो आप सब भी रेस में खूब दौड़ लगा-कर नम्बर वन में आ जाओ। बापदादा ऐसे उमंग उत्साह रखने वाले बच्चों के सदा सहयोगी हैं। आपका योग बाप का सहयोग। दोनों से जितना चाहो उतना आगे बढ़ सकते हो। अभी चांस है फिर यह भी समय समाप्त हो जायेगा।

ऐसे सदा सत्यता की महानता में रहने वाले, सर्व आत्माओं के विधि-विधाता, सद्गति दाता, विश्व को स्व के सत्यता की शक्ति द्वारा सतोप्रधान बनाने वाले, ऐसे बापदादा के सदा स्नेही और सहयोगी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों के साथ:-

1- सदा स्वयं को शक्तिशाली आत्मा अनुभव करते हो?शक्तिशाली आत्मा का हर संकल्प शक्तिशाली होगा। हर संकल्प में सेवा समाई हुई हो। हर बोल में बाप की याद समाई हो। हर कर्म में बाप जैसा चरित्र समाया हुआ हो। तो ऐसी शक्तिशाली आत्मा अपने को अनुभव करते हो? मुख में भी बाप, स्मृति में भी बाप और कर्म में भी बाप के चरित्र – इसको कहा जाता है बाप समान शक्तिशाली। ऐसे हैं? एक शब्द '' बाबा'', लेकिन यह एक ही शब्द जादू का शब्द है। जैसे जादू में स्वरूप परिवर्त्तन हो जाता वैसे एक 'बाप' शब्द समर्थ स्वरूप बना देता है। गुण बदल जाते, कर्म बदल जाते, बोल बदल जाते। यह एक शब्द ही जादू का शब्द है। तो सभी जादूगर बने हो ना! जादू लगाना आता है ना! बाबा बोला और बाबा का बनाया, यह है जादू।

2. वरदान भूमि पर आकर वरदाता द्वारा वरदान पाने का भाग्य बनाया है? जो गायन है – भाग्य विधाता बाप द्वारा जो चाहो वह अपने भाग्य की लकीर खींच सकते हो। यह इस समय का वरदान है। तो वरदान के समय को, वरदान के स्थान का कार्य में लाया? क्या वरदान लिया? जैसे बाप सम्पन्न है इसलिए सागर कहा जाता है। सागर का अर्थ ही है ''सम्पन्न''। बाप समान बनने का दृढ़ संकल्प किया? बच्चे के लिए गाया जाता है – बालक सो मालिक। तो बालक बाप का मालिक है। मालिकपन के नशे में रहने के लिए बाप समान स्वयं को सम्पन्न बनाना पड़े। बाप की विशेषता है सर्व शक्तिवान अर्थात् सर्व शक्तियों की विशेषता है। तो जो बालक सो मालिक है उनमें भी सर्वशक्तियाँ होंगी। एक शक्ति की भी कमी नहीं। अगर एक भी शक्ति कम रही तो शक्ति-वान कहेंगे, सर्वशक्तिवान नहीं। तो कौन हो? सर्वशक्तिवान अर्थात् जो चाहे वह कर सके, हर कर्मेन्द्रिय अपने कंट्रोल में हो। संकल्प किया और हुआ, क्योंकि मास्टर हैं ना! तो आप सब स्वराज्य अधिकारी हो ना! पहले स्व-राज्य फिर विश्व का राज्य।

देहली राजधानी में रहने वाले स्व-राज्यधारी हैं ना? यह तो बहुत काल का संस्कार चाहिए। अगर अन्त में बनेंगे तो विश्व का राज्य भी कब मिलेगा? अगर विश्व का राज्य आदि में लेना है तो आदिकाल से यह भी संस्कार चाहिए। बहुत समय का राज्य, बहुत समय के संस्कार। मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे कोई भी बड़ी बात नहीं। दिल्ली निवासी अभी क्या सोंच रहे हैं? कि सोचते हो महायज्ञ किया, बस। चढ़ती कला की ओर जा रहे हो ना। जो किया उससे और आगे । आगे चलते-चलते अपना राज्य हो जायेगा। अभी तो दूसरे के राज्य में अपना कार्य करना पड़ता है, फिर अपना राज्य हो जायेगा। प्रकृति भी आपको आफर करेगी। प्रकृति जब आफर करेगी तो आत्मायें क्या करेंगी? आत्मायें तो सिर झुकायेंगी। तो क्या करेंगे अभी? फिर भी जो किया ड्रामा अनुसार हिम्मत हुल्लास से कार्य सफल किया। उसके लिए बापदादा हिम्मत के ऊपर खुश हैं। मेहनत जो की वह तो जमा हो गया। वर्त्तमान भी बना और भविष्य भी बना।

सेवा का बीज अविनाशी होने के कारण कुछ आवाज़ निकला और कुछ निकलता रहेगा। बीज पड़ने से अनेक आत्माओं को गुप्त रूप से सन्देश मिला। सबकी थकावट तो उतर गई है ना! फिर भी बापदादा का स्नेह सहयोग सदा मिलने से आगे बढ़ते रहेंगे।

दिल्ली को भी यह वरदान मिला हुआ है। श्रेष्ठ कर्म के निमित्त बनने का। फिर भी सेवा की जन्म-भूमि है ना! सेवा की हिस्ट्री में नाम तो जाता है ना? और अनेकों को सेवा के लिए साधन मिल जाता है। सेवा की भूमि में रहने वाले तो वरदानी हो गये ना! मेहनत बहुत अच्छी की।

मुरली का सार:-

1. सत्यता की महानता है, सत्यता की मान्यता है। सत् बाप, सत् शिक्षक तथा सत् गुरु आकर आत्मा का, परमात्मा का, सृष्टि चक्र का सत्य परिचय देकर सत्यता की शक्ति भरते हैं।

2. सत्यता की शक्ति प्रकृति को सतोप्रधान, युग को सतयुग बना देती है। सर्व आत्माओं के सद्गति की तकदीर बना देती है।।

3. देवता अर्थात् देने वाला। अन्त में सब प्रकृति के तत्व आप सबको सहयोग देने वाले देवता बन जायेंगे। भक्ति में सहयोग देने के कर्त्तव्य के कारण तत्वों को मनुष्य का रूप दे देते हैं।

13.4.81

रूहे-गुलाब की विशेषता सदा रूहानी वत्ति

आज बागवान अपने रूहे-गुलाब बच्चों को देख रहे हैं। चारों ओर के रूहे गुलाब बच्चे बापदादा के सम्मुख हैं। साकार में चाहे कहाँ भी बैठे हैं (आज आधे भाई बहन नीचे मुरली सुन रहे हैं) लेकिन बापदादा उन्हों को भी अपने नयनों के सामने ही देख रहे हैं। अभी भी बापदादा बच्चों के संकल्प को सुन रहे हैं। सभी सम्मुख मुरली सुनने चाहते हैं लेकिन नीचे होते हुए भी बापदादा बच्चों को सामने देख रहे हें। हरेक रूहे-गुलाब की खुशबू बापदादा के पास आ रही है। हैं तो सब नम्बरवार लेकिन इस समय सभी एक बाप दूसरा न कोई इसी रूहानी खुशबू में नम्बरवन स्थिति में हैं। इसलिए रूहानी खुशबू वतन तक भी पहुँच रही है। रूहानी खुशबू की विशेष-ताएं जानते हो? किस आधार पर रूहानी खुशबू सदाकाल एकरस और दूर दूर तक फैलती है अर्थात् प्रभाव डालती है? इसका मूल आधार है रूहानी वृत्ति। सदा वृत्ति में रूह, रूह को देख रहे हैं, रूह से ही बोल रहे हैं। रूह ही अलग अलग अपना पार्ट बजा रहे हैं। मैं रूह हूँ, सदा सुप्रीम रूह की छत्रछाया में चल रहा हूँ। मैं रूह हूँ – हर संकल्प भी सुप्रीम रूह की श्रीमत के बिना नहीं चल सकता है। मुझ रूह का करावनहार सुप्रीम रूह है। करावनहार के आधार पर मैं निमित्त करने वाला हूँ। मैं करनहार वह करावनहार है। वह चला रहा, मैं चल रहा हूँ। हर डायरेक्शन पर मुझ रूह के लिए संकल्प, बोल और कर्म में सदा हजूर हाजिर हैं। इसलिए हजूर के आगे सदा मुझ रूह की जी हजूर है। सदा रूह और सुप्रीम रूह कम्बाइन्ड हूँ। सुप्रीम रूह मुझ के बिना रह नहीं सकते और मैं भी सुप्रीम रूह के बिना अलग नहीं हो सकता। ऐसे हर सेकेण्ड हजूर को हाजिर अनुभव करने वाले सदा रूहानी खुशबू में अवि-नाशी और एकरस रहते हैं। यह हैं नम्बरवन खुशबूदार रूहे-गुलाब की विशेषता।

ऐसे की दृष्टि में भी सदा सुप्रीम रूह समाया हुआ होगा। वह बाप की दृष्टि में और बाप उनकी दृष्टि में समाया हुआ होगा। ऐसे रूहे-गुलाब को देह वा देह की दुनिया वा पुरानी देह की दुनिया की वस्तु, व्यक्ति देखते हुए भी नहीं दिखाई देंगे। देह द्वारा बोल रहा हूँ लेकिन देखता रूह को है, बोलता रूह से है। क्योंकि उनके नयनों की दुनिया में सदा रूहानी दुनिया है, फ़रिश्तों की दुनिया है, देव-ताओं की दुनिया है। सदा रूहानी सेवा में रहते। दिन है वा रात है लेकिन उनके लिए सदा रूहानी सेवा है। ऐसे रूहे-गुलाब की सदा रूहानी भावना रहती कि सर्व रूहें हमारे समान वर्से के अधिकारी बन जाएं। परवश, आत्माओं को बाप द्वारा प्राप्त हुई शक्तियों का सहयोग दे उन्हों को भी अनुभव करावें। किसी की भी कमजोरी और कमी को नहीं देखेंगे। अपने धारण किये हुए गुणों का, शक्तियों का सहयोग देने वाला दाता बनेंगे। ब्राह्मण परिवार के लिए सहयोगी, अन्य आत्माओं के लिए महादानी। यह ऐसा है, यह भावना नहीं। लेकिन इसको भी बाप समान बनाऊं, यह शुभ भावना। साथ साथ यही श्रेष्ठ कामना। यह सर्व आत्मायें कंगाल, दु:खी, अशान्त से सदा शान्त, सुख-रूप मालामाल बन जाएं। सदा स्मृति में एक ही धुन होगी कि विश्व परिवर्त्तन जल्दी से जल्दी कैसे हों – इसको कहा जाता है रूहे-गुलाब।

आज महाराष्ट्र का टर्न है। महाराष्ट्र वाले सदा एक ही महा शब्द को याद रखें तो सब महान अर्थात् नम्बरवन बन जाएं। महाराष्ट्र वालों का क्या लक्ष्य है? महान बनना। स्व को भी महान बनाना है, विश्व को भी महान बनाना है। यही सदा स्मृति में रहता है ना!

और कर्नाटक वाले सदा नाटक में हीरो पार्ट बजाने वाले हैं। बनना भी हीरो है, बनाना भी हीरो है। आंध्रा अर्थात् अन्धियारा मिटाने वाले। सब प्रकार का अंधेरा। आंध्रा में ग़रीबी का अंधकार भी ज्यादा है। तो ग़रीबी को मिटाए सर्व को सम्पन्न बनाना है। तो आंध्रा वाले विश्व को सदा साहूकार बनाने वाले हैं। जो न तन की ग़रीबी, न धन की ग़रीबी, न मन के शक्तियों की ग़रीबी। तन-मन-धन तीनों ही ग़रीबी को मिटाने वाले। इस अंधकार को मिटाकर सदा रोशनी लाने वाले। तो आंध्रा निवासी हो गये – मास्टर ज्ञान सूर्य। मद्रास अर्थात् सदा रास में मगन रहने वाले। संस्कार मिलन की भी रास, खुशी की भी रास। और फिर स्थूल में भी रास करने वाले। मद – मगन को भी कहा जाता है। तो सदा इसी रास में मगन रहने वाले। समझा सभी का आक्यूपेशन क्या है। अब तो

सबसे मिले ना। मिलना अर्थात् लेना। तो ले लिया ना। आखिर तो नयन मुलाकात तक पहुँचना है। बापदादा के लिए नीचे वा ऊपर बैठे हुए सब वी.आई.पी. हैं।

टीचर्स के साथ– बापदादा सर्व निमित्त बने हुए सेवाधारियों को किस रूप में देखना चाहते हैं, यह जानते हो? बापदादा सर्व सेवाधारियों को सदा अपने समान, जैसे बाप कर्त्तव्य के कारण अवतरित होते हैं वैसे हर सेवाधारी सेवा के प्रति अवतरित होने वाले सब अवतार बन जाएं। एक अवतार ड्रामा अनुसार सृष्टि पर आता तो कितना परिवर्त्तन कर लेता। वह भी आत्मिक शक्ति वाले और यह इतने परमात्म-शक्तिस्वरूप चारों ओर अवतार अवतरित हो जाएं तो क्या हो जायेगा? सहज परिवर्त्तन हो जायेगा। जैसे बाप लोन लेता है, बंधन में नहीं आता, जब चाहे आये, जब चाहे चलें जायें, निर्बन्धन है। ऐसे सब सेवाधारी शरीर के संस्कारों के, स्वभाव के बधनों से मुक्त, जब चाहें जैसे चाहें वैसा संस्कार अपना बना सकें। जैसे देह को चलाने चाहें वैसे चला सकें। जैसा स्वभाव बनाने चाहे वैसा बना सकें। ऐसा नहीं कि मेरा स्वभाव ही ऐसा है, क्या करूँ? मेरा संस्कार,मेरा बंधन ऐसा है नहीं। लेकिन ऐसे निर्बन्धन जैसे बाप निर्बन्धन है। कई सोचते हैं हम तो जन्म-मरण के चक्र के कारण शरीर के बंधन में हैं, लेकिन यह बंधन है क्या? अब तो शरीर आपका है ही नहीं, फिर बंधन आपका कहाँ से आया? जब मरजीवा बन गये तो शरीर किसका हुआ? तन-मन-धन तीनों अर्पण किया है या सिर्फ़ दो को अर्पण किया, एक को नहीं। जब मेरा तन ही नहीं, मेरा मन ही नहीं तो बंधन हो सकता है। यह भी कमजोरी के बोल हैं – क्या करें जन्म जन्म के संस्कार हैं, शरीर का हिसाब किताब है। लेकिन अब पुराने जन्म का पुराना खाता संगमयुग पर समाप्त हुआ। नया शुरू किया। अभी उधर का पुराना रजिस्टर समाप्त हुआ। नया शुरू किया। अभी उधर का पुराना रजिस्टर समाप्त हो गया या अभी तक सम्भाल कर रखा है? खत्म नहीं किया है क्या? तो समझा बापदादा क्या देखना चाहते हैं?

इतने सब अवतार प्रकट हो जाएं तो सृष्टि पर हलचल मच जायेगी ना! अवतार अर्थात् ऊपर से आने वाली आत्मा। मूलवतन की स्थिति में स्थित हो ऊपर से नीचे आओ। नीचे से ऊपर नहीं जाओ। है ही परमधाम निवासी आत्मा, सतोप्रधान आत्मा। अपने आदि, अनादि स्वरूप में रहो। अन्त की स्मृति में नहीं रहो अनादि, आदि फिर क्या हो जायेगा? स्वयं भी निर्बन्धन और जिन्हों की सेवा केनिमित्त बने हो वह भी निर्बन्धन हो जायेंगे। नहीं तो वह भी कोई न कोई बंधन में बंध जाते हैं। स्वयं निर्बन्धन अवतरित हुई आत्मा समझ कर कर्म करो, तो और भी आपको फालो करेंगे। जैसे साकार बाप को देखा, क्या याद रहा? बाप के साथ मैं भी कर्मातीत स्थिति में हूँ या देवताई बचपन रूप में। अनादि, आदि रूप सदा स्मृति में रहा तो फालो फादर। टीचर्स से पूछने की ज़रूरत ही नहीं कि सन्तुष्ट हो। टीचर से पूछना माना टीचर की इनसल्ट करना। इसलिए बापदादा इनसल्ट तो नहीं कर सकते। बाप समान निमित्त हो। निमित्त का अर्थ ही है – सदा करन-करावनहार के स्मृति स्वरूप। यही स्मृति समर्थ स्मृति है। करनहार हूँ लेकिन करन-करावनहार के आधार पर करनहार हूँ। निमित्त हूँ लेकिन निमित्त बनाने वाले को भूलना नहीं। मैं-पन नहीं, सदा बापदादा ही मुख में, मन में, कर्म में रहे – यही पाठ पक्का है ना!

पार्टियों के साथ –

1. अमृतवेले से लेकर रात तक जो भी बाप ने श्रेष्ठ मत दी है उसी मत के अनुसार सारी दिनचर्या व्यतीत करते हो? उठना कैसे है, चलना कैसे है, खाना कैसे है, कार्य व्यवहार कैसे करना है, सबके प्रति श्रेष्ठ मत मिली हुई है। उसी श्रेष्ठ मत के प्रमाण हर कार्य करते हो?

हर कर्म करते हुए अपनी स्थिति श्रेष्ठ रहे उसके लिए कौन सा एक शब्द सदा स्मृति में रखो – ट्रस्टी। अगर कर्म करते ट्रस्टीपन की स्मृति रहे तो स्थिति श्रेष्ठ बन जायेगी। क्योंकि ट्रस्टी बनकर चलने से सारा ही बोझ बाप पर पड़ जाता है, आप सदा डबल लाइट बन जाते। डबल लाइट होने के कारण हाई जम्प दे सकते हो। अगर गृहस्थी समझते तो दुम्ब लग जाता। सारा बोझ अपने पर आ जाता। बोझ वाला हाई जम्प दे नहीं सकता। और ही साँस फूलता रहेगा। ट्रस्टी समझने से स्थिति सदा ऊंची रहेगी। तो सदा ट्रस्टी होकर रहने की श्रेष्ठ मत को स्मृति में रखो।

2. बापदादा द्वारा सभी बच्चों को कौन सी नम्बरवन श्रीमत मिली हुई है? नम्बरवन श्रीमत है कि अपने को आत्मा समझो और आत्मा समझकर बाप को याद करो। सिर्फ़ आत्मा समझने से भी बाप की शक्ति नहीं मिलेगी। याद न ठहरने का कारण ही है कि आत्मा समझकर याद नहीं करते हो। आत्मा के बजाए अपने को साधारण शरीरधारी समझकर याद करते हो। इसलिए याद टिकती नहीं। वैसे भी कोई दो चीज़ों को जब जोड़ा जाता है तो पहले समान बनाते हैं। ऐसे ही आत्मा समझकर याद करो तो याद सहज हो जायेगी, क्योंकि समान हो गये ना! यह पहली श्रीमत ही प्रैक्टिकल में सदा लाते रहो। यही मुख्य फाउन्डेशन है। अगर फाउन्डेशन कच्चा होगा तो आगे चढ़ती कला नहीं हो सकती। अभी अभी चढ़ती कला, अभी अभी नीचें आ जायेंगे। मकान का भी फाउन्डेशन अगर पक्का न हो तो दरार पड़ जाती है या गिर जाता है। ऐसे ही अगर यह फाउन्डेशन मजबूत नहीं तो माया नीचे गिरा देगी। इसलिए फाउन्डेशन सदा पक्का। सहज बात के ऊपर भी बार-बार अटेन्शन। अगर अटेन्शन नहीं देते तो सहज बात भी मुश्किल हो

जाती।

3. सदा यह नशा रहता है कि हम ही कल्प-कल्प के अधिकारी आत्मायें हैं हम ही थे हम ही हैं, हम ही कल्प कल्प होंगे। कल्प पहले का नजारा ऐसे ही स्पष्ट स्मृति में आता है? आज ब्राह्मण हैं, कल देवता बनेंगे। हम ही देवता थे यह नशा रहता है? हम सो, सो हम यह मंत्र सदा याद रहता है? इसी एक नशे में रहो तो सदा जैसे नशे में सब बातें भूल जाती हैं, संसार ही भूल जाता है, ऐसे इस में रहने से यह पुरानी दुनिया सहज ही भूल जायेगी। ऐसी अपनी अवस्था अनुभव करते हो? तो सदा चेक करो – आज ब्राह्मण कल देवता, यह कितना समय नशा रहा। जब व्यवहार में जाते तो भी यह नशा कायम रहता कि हल्का हो जाता है? जो जैसा होता है उसको वह याद रहता है। जैसे प्रेजीडेन्ट है वह कोई भी काम करते यह नहीं भूलता कि मैं प्रेजीडेन्ट हूँ। तो आप भी सदा अपनी पोजीशन याद रखो। इससे सदा खुशी रहेगी, नशा रहेगा। सदा खुमारी चढ़ी रहे। हम ही देवता बनेंगे, अभी भी ब्राह्मण चोटी हैं, ब्राह्मण तो देवताओं से भी ऊंच है। इस नशे को माया कितना भी तोड़ने की कोशिश करे लेकिन तोड़ न सके। माया आती तभी है जब अकेला कर देती है। बाप से किनारा करा देती है। डाकू भी अकेला करके फिर वार करते हैं ना। इसलिए सदा कम्बाइन्ड रहो कभी भी अकेले नहीं होना। मैं और मेरा बाबा – इसी स्मृति मेंकम्बाइन्ड रहो।

4. सभी अपने को महान भाग्यशाली समझते हो ना? देखो कितना बड़ा भाग्य है जो वरदान भूमि पर वरदानों से झोली भरने के लिए पहुँच गये हो। ऐसा भाग्य विश्व में कितनी आत्माओं का है? कोटों में कोई और कोई में भी कोई! तो यह खुशी सदा रखो कि जो सुनते थे, वर्णन करते थे, कोटों में कोई, कोई में भी कोई आत्मा, वह हम ही है। इतनी खुशी है? सदा इसी खुशी में नाचते रहो – वाह मेरा भाग्य! यही गीत गाते रहो और इसी गीत के साथ खुशी में नाचते रहो। यह गीत गाना तो आता है ना – वाह रे मेरा भाग्य और वाह मेरा बाबा! वाह ड्रामा वाह! यह गीत गाते रहो। बहुत लकी हो। बाप तो सदा हर बच्चे को लवली बच्चा ही कहते हैं। तो लवली भी हो, लकीएस्ट भी हो। कभी अपने को साधारण नहीं समझना, बहुत श्रेष्ठ हो। भगवान आपका बन गया तो और क्या चाहिए! जब बीज को अपना बना दिया तो वृक्ष तो आ ही गया ना! तो सदा इसी खुशी में रहो। आपकी खुशी को देख दूसरे भी खुशी में नाचते रहेंगे।

नवम्बर 99 से

15.4.81

नम्बरवन तकदीरवान की विशेषताएं

आज भाग्य विधाता बाप अपनी श्रेष्ठ भाग्यशाली आत्माओं को देख रहे हैं। हरेक ने अपने-अपने तदबीर द्वारा कैसे तकदीर की लकीर खींची है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार कोई ने नम्बरवन तकदीर बनाई है, कोई ने सेकेण्ड नम्बर में बनाई है। पहले नम्बर की तकदीर जिसमें सर्व प्राप्ति स्वरूप हैं, चाहे सर्वगुणों में, चाहे ज्ञान खजाने में, चाहे सर्व शक्तियों में, सदा प्राप्तियों के झूले में झूलते हैं। अभी से अप्राप्त कोई नहीं वस्तु ऐसे तकदीरवान के जीवन में। हर सेकेण्ड, हर श्वाँस, हर संकल्प अखुट खजाने प्राप्त करने वाले। ऐसी आत्मा को जीवन के हर कदम में चढ़ती कला की अनुभूति होती है। चारों ओर अनेक प्रकार के खजाने ही खजाने दिखाई देते। हर आत्मा अपने अति स्नेही, अनादि स्मबन्ध के स्वरूप से अपनी लगती है। हर आत्मा एक बाप की सन्तान होने के कारण भाई-भाई लगती है। हर आत्मा के प्रति यही शुभभावना, शुभ कामना इमर्ज रूप में रहती है कि यह सर्व आत्मायें सदा सुखी और शान्त हो जायें। बेहद का परिवार और बेहद का स्नेह होता। हद में दु:ख होता है, बेहद में दु:ख नहीं होता। क्योंकि बेहद में आने से बेहद का सम्बन्ध, बेहद का ज्ञान, बेहद की वृत्ति, बेहद का रूहानी स्नेह दु:ख को समाप्त कर सुख स्वरूप बना देते हैं। रूहानी नालेज के कारण, हर आत्मा की कर्म कहानी के पार्ट के संस्कारों की लाइट और माइट होने के कारण जो भी देखेंगे, सुनेंगे, सम्पर्क में, सम्बन्ध में आयेंगे, हर कर्म में अति न्यारे और अति प्यारे होंगे। न्यारे और प्यारे बनने की समानता होगी। किस समय प्यारा बनना है, किस समय न्यारा बनना है – यह पार्ट बजाने की विशेषता आत्मा को सदा सुखी और शान्त बना देती है। रूहानी सम्बन्ध होने के कारण, बुद्धि सदा एकाग्र रहती है। हलचल में नहीं आते हैं। अभी दु:खी, अभी सुखी यह हलचल समाप्त हो जाती है। साथ-साथ एकाग्रता के कारण निर्णय शक्ति, समाने की शक्ति, सामना करने की शक्ति, सर्व शक्तियाँ हर आत्मा के पार्ट और अपने पार्ट को अच्छी तरह से जानकर पार्ट में आते हैं। इसलिए अचल और साक्षी रहते हैं। ऐसी तकदीरवान आत्मा हर संकल्प और कर्म को, हर बात को त्रिकालदर्शी की स्थिति में स्थित हो देखती है। इसलिए क्वेश्चन मार्क समाप्त हो जाता। यह क्यों, यह क्या – यह क्वेश्चन मार्क है। सदा फुल स्टाप। सभी को तीन बिन्दी का तिलक लगा हुआ है ना? उसमें आश्चर्य नहीं लगता। नथिंग न्यू। क्या हुआ – नहीं। क्या करना है – यह है नम्बरवन तकदीरवान।

आप सब नम्बरवन तकदीरवान की लिस्ट में हो ना! सबको फर्स्टक्लास पसन्द है ना? सब आये ही हैं बाप से पूरा वर्सा लेने के लिए। चन्द्रवंशी बनने के लिए तैयार हो? सूर्यवंशी अर्थात् फर्स्टक्लास हो गया। सदा अपनी श्रेष्ठ तकदीर को स्मृति में रख समर्थ

स्वरूप में रहो। ऐसे ही अनुभव करते हो ना! जो बाप के गुण वह हमारे गुण। सदा अपना अनादि असली स्वरूप स्मृति में रहता है ना! माया के नकली स्वरूप के स्वाँग तो नहीं बन जाते हो? जैसे ड्रामा करते हो तो नकली फेस लगा देते हो ना! जैसा गुण जैसा कर्त्तव्य वैसा ही फेस लगा देते हैं। तो नकली स्वरूप पर हँसी आती है ना। ऐसे माया भी नकली गुण और कर्त्तव्य का स्वरूप बना देती है। किसको क्रोधी, किसको लोभी बना देती है। किसको दु:खी, किसको अशान्त। लेकिन असली स्वरूप इन बातों से परे है। तो सदा उसी स्वरूप में स्थित रहो। अच्छा – जैसे भक्ति में लास्ट टुब्बी होती है ना। उसका भी महत्व होता है। तो यहाँ भी सभी सागर में टुब्बी (डुबकी) लगाने आये हैं वा समाने के लिए आये हैं। सब रीति रसम अभी से शुरू कर रहे हैं। संगम है ही मिलन युग, आज बेहद का दिन है।

हरेक जोन की अपनी-अपनी महिमा है। गुजरात अर्थात् जहाँ रात गुजर गई (अर्थात् बीत गई) सदा दिन है। सदा रोशनी ही रोशनी है। अन्धकार मिट गया। यू0 पी0 की विशेषता वहाँ चीनी बहुत बनती है। यू0 पी0 में सदा चारों ओर स्थूल और सूक्ष्म मीठा ही मीठा है।

राजस्थान तो है ही विश्व के नये राज्य का फाउन्डेशन डालने वाला। राजस्थान में ही महान तीर्थ है। राजस्थान की विशेषता है क्योंकि राजस्थान ही बापदादा की कर्म भूमि, चरित्रभूमि है। राजस्थान की महिमा सदा सर्वश्रेष्ठ है।

पंजाब वाले सदा अकाल तख्तनशीन हैं। पंजाब वालों को अकालतख्त कब भूलता नहीं।सदा अकालमूर्त्त बाप के साथ अकाल स्वरूप रहते हैं। दिल्ली है दिलाराम की दिल लेने वाली। नाम भी दिल्ली है – दिल ली। तो बापदादा की दिल क्या है? विश्व पर सदा के लिए सुख और शान्ति का झण्डा लहर जाए। सदा चैन की बंसुरी बजती रहे। तो देहली वालों ने इस लक्ष्य को लेकर महा-यज्ञ का महा कर्त्तव्य भी किया। सदा सर्व के सहयोग की अंगुली से कि हम सब एक हैं – यही नारा विश्व को बुलन्द आवाज़ से सुनाया। देहली में सभी का हक है। क्योंकि सब राज्य-अधिकारी बन रहे हो ना! तो सेवा के नये-नये कार्य में दिल लेने वाले।

बाम्बे को गवर्मेन्ट भी जैसे सुन्दर बना रही है, विस्तार कर रही है, ऐसे ही पाण्डवों की सेवा में भी सेवा का विस्तार अच्छा हुआ,सह-योगी और अधिकारी दोनों ही प्रकार की आत्मायें सेवा के विस्तार के लिए अच्छी निमित्त बनी हुई हैं। वरदान मिला हुआ है ना!

मध्य प्रदेश में एक निराकार बाप की यादगार अच्छी है। ऐसे ही ब्राह्मण आत्माओं में भी एक बाप से लगन लगाने वाले, एक नम्बर में आने वाले इस लगन में रहने वालों की अच्छी रेस चल रही है। विधि भी है और वृद्धि भी है। अभी तो सब की विशेषतायें सुनी ना। सभी की इकट्ठी टुब्बी हो गई ना।! ज्ञान सागर और नदियों का मिलन हो गया। मिलना अर्थात् लेना। खजाना ले लिया ना! श्रेष्ठ तकदीर की लकीर खींच गई ना!

बापदादा का सदा एक सलोगन याद रखना कि ''सदा खुश रहना है और सर्व को सदाखुश करना है। चारों ओर अब खुशी के बाजे बजाओ। क्योंकि हो ही खुशनशीब आत्मायें।''

ऐसे श्रेष्ठ तकदीरवान, सदा सर्व खुशियों के खजाने से सम्पन्न सर्व को सुख का रास्ता बताने वाले, मास्टर सुख दाता, सदा सर्व के संकट मोचन, विघ्न विनाशक – ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दीदी जी के साथ :– महावीरों की श्रेष्ठ सेवा का स्वरूप कौन सा है? जैसे और सब शक्तियाँ चित्र में भी दिखाई हुई हैं। इन सब शक्तियों में विशेष शक्ति सेवा के अर्थ कौन-सी है? सभी वाणी द्वारा, भिन्न-भिन्न साधनों द्वारा, प्लैन्स प्रोग्राम द्वारा तो सेवा कर रहे हैं। आप लोगों की विशेष सेवा, कौन-सी है? जैसे इसी पुरानी सृष्टि और हिस्ट्री में है – पहले जमाने में पंछियों द्वारा सन्देश भेजते थे। जो सन्देश देकर फिर वापिस आ जाते थे। आपकी सेवा कौन-सी है। वह पक्षियों द्वारा सन्देश भेजते थे आप संकल्प शक्ति द्वारा किसी भी आत्मा के प्रति सेवा कर सकते हो। संकल्प का बटन दबाया औरवहाँ सन्देश पहुँचा। जैसे अन्त: वाहक शरीर द्वारा सहयोग दे सकते हैं वैसे संकल्प की शक्ति द्वारा अनेक आत्माओं की समस्या का हल कर सकते हैं। अपने श्रेष्ठ संकल्प के आधार से उन्हों के व्यर्थ वा कमज़ोर संकल्प परिवर्त्तन कर सकते हो। यह विशेष सेवा समय प्रमाण बढ़ती रहेगी। समस्यायें ऐसी आयेंगी जो स्थूल साधन समाप्त हो जायेंगे। फिर क्या करना पड़े? इतना ही स्वयं के संकल्पों को पावरफुल बनाना है जो उसका प्रभाव दूर तक पहुँच सके। जितनी पावर होगी उतना दूर तक पहुँच सकेंगे। जैसे रोशनी में भी जितनी पावर ज्यादा होती है तो दूर तक फैलती है। तो संकल्प में भी इतनी शक्ति आ जायेगी जो आप ने यहाँ संकल्प किया और वहाँ फल मिला। जैसे बाप भक्ति का फल देते हैं वैसे आप श्रेष्ठ आत्मायें परिवार में सहयोग का फल देंगी और उस फल का भिन्न-भिन्न अनुभव करेंगे, यह भी सेवा आरम्भ हो जायेगी।

नये-नये को देखकर, परिवार की वृद्धि देखकर, सेवा की सिद्धि देख खुशी होती है ना! यह भी अपनी राजधानी बना रहे हो। राज-धानी में तो सब प्रकार की आत्मायें चाहिए। सम्पर्क वाली भी चाहिए। सेवाधारी भी चाहिए, सम्बन्धी चाहिए और अधिकारी भी चाहिए। अब तो आवाज़ बुलन्द हो रहा है। अभी अजुन सब यहाँ वहाँ देखकर कोशिश कर रहे हैं कि यह कहाँ का आवाज़ है। सुनाई देता है लेकिन अभी किलीयर सुनाई नहीं देता है। कहाँ से आवाज़ आ रहा है, किस तरफ जाना है वह नहीं समझते। किली-

यर होगा जब वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति उन्हों तक पहुँचे। तब आवाज़ किलीयर होगा। अभी अटेन्शन जाना शुरू हुआ है।

हर सीजन का अपना-अपना रौनक का पार्ट है। बापदादा के लिए तो सब सिकीलधे हैं, सब कार्य सहज, स्वत: ही वृद्धि को पाते रहेंगे। कितने बड़े परिवार वाले हो!

सतयुग के आदि की संख्या अपनी आँखों से देखेंगे वा नहीं। वा स्वप्न में देखेंगे, वा समाचार पत्रों में सुनेंगे – क्या होगा? अभी तो एक हजार को भी रख नहीं सकते हो, फिर कहाँ रखेंगे? सब ब्राह्मण परिवार है। जिस दिन सब मधुबन भूमि पर इकट्ठे हो जायेंगे फि रतो हलचल शुरू हो जायेगी। संगठन का चित्र तो दिखाया है ना! कि सभी ने अंगुली दी। सूक्ष्म में तो देते ही हो लेकिन इतना बड़ा परिवार है, परिवार को देखना तो चाहिए ना! इसका प्लैन बनाया है। सतयुग में तो सिर्फ़ आपकी प्रजा होगी, यहाँ तो आपके भक्त भी आयेंगे। डबल वंशावली होगी। जब भक्तों को पता पड़ेगा कि हमारे इष्ट इकट्ठे हो गये हैं तो क्या करेंगे? वह भी पूछेंगे नहीं। पहुँच जायेंगे। जैसे अभी भी कई पहुँच जाते हैं ना! भक्त तो होते ही चात्रक हैं।

बापदादा शक्तियों का नाम बाला देखकर हर्षित हो रहे हैं। सर्वशक्तिवान गुप्त है और शक्तियाँ प्रत्यक्ष रूप में हैं। तो शिव, शक्तियों को देख हर्षित होते हैं। बापदादा वतन से भी देखते रहते हैं, कितनी क्यू लगती है, यह भी देखते रहते हैं । हरेक चैतन्य मूर्तियों के मन्दिर के बाहर क्यू तो शुरू हो गई है ना!

बच्चों की सेवा देख बापदादा भी हर्षित होते हैं। बाप से भी लाख गुणा ज्यादा प्रत्यक्ष रूप में सेवा के मैदान में आ गये हैं और भी आयेंगे।

पार्टियों के साथ – (यू.पी. जोन) सदा अपने को विश्वि के आगे एक यथार्थ रास्ता दिखाने वाले रूहानी पण्डे समझते हो? पण्डों का नाम क्या है? यू.पी. में पण्डे बहुत होते हैं ना! वह पण्डे क्या करते और आप क्या करते? वह कौन-सी यात्रा कराते और आप कौन-सी यात्रा कराते हो? आप ऐसी यात्रा कराते जो जन्म-जन्म के लिए यात्रा करने से छूट जायेंगे, और वह बार-बार यात्रा करते रहेंगे। तो सदा के लिए मुक्ति और जीवनमुक्ति की मंजिल पर पहुँचाने वाले पण्डे हो। आधे पर छोड़ने वाले, भटकाने वाले नहीं हो। मंजिल पर पहुँचाने वाले हो। जैसे बाप का कार्य है, बाप ने रास्ता दिखाया ना! वैसे बच्चों का भी वही कार्य। रास्ता भी वह दिखा सकते जो स्वयं जानते हो। रास्ता क्या है? ज्ञान और योग, इसी रास्ते द्वारा ही मुक्ति और जीवनमुक्ति की मंजिल पर पहुँच रहे हो। रास्ते के बीच जो साइडसीन आती हैं उसमें रुक तो नहीं जाते हो? क्योंकि माया साइडसीन के रूप में रोकने की कोशिश करती है, कोई-न-कोई परिस्थिति व बात ऐसे आयेगी जो रोकने की कोशिश करेगी लेकिन पक्के यात्री रूकते नहीं, मंजिल पर पहुँचाने वाले हो ना। अगर इतने सब पण्डे तैयार हो जायेंगे तो अनेक आत्माओं को रास्ता दिखा देंगे, विश्व की कितनी आत्मायें हैं, सबको रास्ता दिखाना है ना!

अलग-अलग ग्रुप से –

1. सभी सदा साक्षी स्थिति में स्थित हो हर पार्ट बजाते हो? साक्षीपन की स्टेज कायम रहती है? कभी साक्षी के बजाए पार्ट बजाते-बजाते पार्ट में साक्षीपन की स्टेज को भूल तो नहीं जाते? जो साक्षी होगा वह कभी भी किसी पार्ट में चलायमान नहीं होगा। न्यारा होगा, प्यारा भी होगा। अच्छे में अच्छा, बुरे में बुरा ऐसे नहीं होगा। साक्षी अर्थात् सदा हर कार्य करते हुए कल्याण की वृत्ति में रहने वाले। जो कुछ हो रहा है उसमें कल्याण भरा हुआ है। अगर कोई माया का विघ्न भी आता तो उससे भी लाभ उठाकर, शिक्षा लेकर आगे बढ़ेगें, रुकेंगे नहीं। ऐसे हो? सीट पर बैठकर खेल देखते हो। साक्षीपन है सीट। इस सीट पर बैठकर ड्रामा देखो तो बहुत मजा आयेगा। सदा अपने को साक्षी की सीट पर सेट रखो, फिर वाह ड्रामा वाह! यही गीत गाते रहेंगे।

2. सभी तीव्र पुरुषार्थी हो ना? नये सो कल्प-कल्प के पुराने, पुराने समझने से अपना अधिकार ले लेंगे। ऐसे समझते हो कि हम कल्प-कल्प के अधिकारी हैं। लास्ट आते भी फास्ट जाना है, उसके लिए सहज साधन है– निरंतर याद। याद में अन्तर नहीं आना चाहिए। सदा कर्मयोगी। कर्म भी करो और याद में भी रहो। जो सदा कर्मयोगी की स्टेज पर रहते हैं वह सहज ही कर्मातीत हो सकते हैं। जब चाहें कर्म में आयें और जब चाहें न्यारे।

3. सदा सेवा के उमंग उत्साह में रहते हुए विश्व-कल्याण की वृत्ति में रहते हो? सदाविश्व-कल्याणकारी हूँ और सर्व का कल्याण करना है, यही वृत्ति रहती है? सदा यही वृत्ति रहे - इसी वृत्ति द्वारा विश्व का कल्याण कर सकते हो। चाहे वाणी द्वारा, चाहे वृत्ति द्वारा लेकिन सदा कल्याणकारी की स्मृति में रहो। जितना यह वृत्ति रहेगी उतना ही आगे बढ़ते जायेंगे। सेवा जितनी कोई करता है उतना औरों को खुशी का रिटर्न और स्वयं में भी खुशी की प्राप्ति का अनुभव होता है। औरों की सेवा नहीं है लेकिन प्राप्ति में वृद्धि है। ऐसे अनुभव करते हो? सदा चढ़ती कला की ओर जाने वाले रूकने का समय अभी नहीं है । अगर रुकते रहेंगे तो मंजिल पर कैसे पहुँचेंगे? हर घड़ी, हर सेकेण्ड में चढ़ती कला। अटेन्शन को अन्डरलाइन करना तो सदा चढ़ती कला होती रहेगी।

4. जितना याद में रहेंगे उतना किसी भी प्रकार की हलचन को अचल बना सकते हैं। नथिंग न्यू – यह पाठ सदा पक्का रहे तो

हलचल हो ही नहीं सकती। साइडसीन को देखकर रुकेंगे नहीं, आगे बढ़ते जायेंगे। ऐसे बहादुर हो ना! हिम्मते बच्चे मददे बाप। जो भी कुछ होता है। साइडसीन है। साइडसीन के कारण मंजिल को नहीं छोड़ा जाता। चलते चलो, पार करते चलो तो मंजिल सदा समीप अनुभव करेंगे। आज यहाँ हैं कल अपने राज्य में होंगे। वातावरण को पावरफुल बनाने वाले बनो, हिलने वाले नहीं। याद के पावरफुल प्रोग्राम रखो। वाचा सर्विस से भी ज्यादा याद के प्रोग्राम रखने चाहिए। वाणी में भी आने से कहाँ-कहाँ नीचे आ जाते हैं इसलिए कुछ समय याद का किला मजबूत बनाकर फिर सेवा के मैदान पर आओ। जो बात आती है वह चली भी जाती है, जैसे बात आती है और चली जाती है तो आप समझो – यह साइडसीन आई और चली गई। वर्णन भी नहीं करो, सोचो भी नहीं, इसको कहा जाता है – फुल स्टाप।

5. सदा अपने को रूहानी सेवाधारी समझते हो? उठते-बैठते चलते फिरते सेवाधारी को सदा सेवा का ही ख्याल रहता और यह सेवा ऐसी सहज है जो मंसा, वाचा और कर्मणा किसी से भी कर सकते हो। अगर कोई बीमार भी है, बिस्तर पर भी है तो भी सेवा कर सकते हैं। अगर शरीर ठीक नहीं भी है तो बुद्धि तो ठीक है ना! मंसा सेवा बुद्धि द्वारा ही होती है। ऐसे सदा सेवा का उमंग उत्साह व सेवा की लगन रहती है? क्योंकि जितनी सेवा करेंगे उतना यह प्रकृति भी आपकी जन्म-जन्म सेवा करती रहेगी। प्रकृति दासी बन जायेगी। अभी प्रकृति दु:ख का कारण बन जाती है फिर यही प्रकृति सेवाधारी बन जायेगी। सेवा करना अर्थात् मेवा लेना। यह सेवा करना नहीं है लेकिन सर्व प्राप्ति करना है। अभी-अभी सेवा की, अभी-अभी खुशियों का भण्डारा भरपूर हुआ। एक आत्मा की भी सेवा करेंगे तो कितना दिन उसकी खुशी का प्रभाव रहता है क्योकि वह आत्मा जन्म-जन्म के लिए दु:ख से छूट गई। जन्म-जन्म का भविष्य बनाया तो आपको भी उसकी खुशी होगी। ऐसे सभी के अनेक जन्म सुधारने वाले, मास्टर भाग्य विधाता हो। क्योकि उनका भाग्य बदलने के निमित्त बन जाते हो ना! गिरती कला के बदले चढ़ती कला का भाग्य हो जाता। सेवा करना अर्थात् खुशी का मेवा खाना, यह ताजा फल है। डॉ0 भी कमज़ोर को कहते हैं – ताजा फल खाओ। यहाँ ताजा फल खाओ तो आत्मा शक्तिशाली बन जायेगी। सदा सेवा की हिम्मत रखने वाले, विश्व परिवर्त्तन करने की हिम्मत रखने वाले, अपने को फर्स्ट लाने की हिम्मत रखने वाले, ऐसे सदा हिम्मत रख औरों को भी निर्बल से बलवान बनाओ। बापदादा हिम्मत रखने वाले बच्चों को सदा मुबा-रक देते हैं।

6. सदा ज्ञान सागर की भिन्न-भिन्न लहरों में लहराते रहते हो? शुरू से लेकर अब तक बाप द्वारा ज्ञान की कितनी पाइंटस मिली हैं, उसी पाइंटस को मनन कर सदा हर्षित रहो। जैसे ज्ञान सागर बाप ज्ञान में सम्पन्न हैं वैसे बच्चे भी ज्ञान में सम्पन्न बन ज्ञान की हर पाइंट के नशे और खुशी में रहो। अखुट पाइंटस मिली हैं। एक भी पाइंट रोज बुद्धि में रखो और उसी के अनुभव में सदा रहो तो ज्ञान स्वरूप बन जायेंगे। कितना श्रेष्ठ ज्ञान और किसने दिया है! यही सदा स्मृति में रहे। भक्त आत्मायें जिसके लिए तड़प रही हैं, प्यासी हैं, उससे आप तृप्त हो गये। भक्ति की प्यास बुझ गई है ना! तो सदा यही गीत गाते रहो – पाना था सो पा लिया..... ओम् शान्ति।